

हिन्द, पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
सस्ते मूल्य पर हिन्दी में उत्कृष्ट, मौलिक
और अनुवादित पुस्तकें प्रकाशित
करने वाली सर्वप्रथम भारतीय संस्था है

दीवान-ए-ग़ालिब



हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड

प्रथम संस्करण : मार्च, १९५६

मूल्य : एक रुपया

प्रकाशक : हिन्दु पाकेट बुक्स प्रा० लिमिटेड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली
मुद्रक : इण्डिया प्रिंटर्स, दिल्ली-६

दीवाने गालिव

* * * *

नक्श^१ फरियादी है किसकी शोखी - ए तहरीर^२ का
कागज़ी है पैरहन^३ — हर पैकरे - तस्वीर^४ का
कावे - कावे - सख्तजानीहा - ए - तन्हाई^५, न पूछ
सुबह करना शाम का लाना है जू - ए - शीर^६ का
जञ्चए - वेइखितयारे - शौक^७ देखा चाहिये
सीनए - शमशीर^८ से बाहर है दम शमशीर का
आगही^९ - दामे - शुनीदन^{१०} जिस क़दर चाहे बिछाये
मुद्आ^{११} अन्का^{१२} है — अपने आलमे तक़रीर का
वस कि हूं 'ग़ालिव' असीरी^{१३} में भी आतिश - ज़ेर - पा^{१४}
मूए - आतिश - दीदा^{१५} है हल्का मेरी जंजीर का

* * * *

जुज़^{१६} कैसे और कोई न आया वरूए - कार^{१७}
सहरा, मगर बतझिए - चश्मे - हुसूद^{१८} था

१. चिह्न, २. लिखावट की विशेषता, ३. पहनावा, ४. चित्र का आकार,
५. विरह-वेदना, ६. दूध की नदी, ७. उन्माद, भावना की तीव्रता, ८. म्यान
९. समझ, १०. श्रवण का जाल, ११. उद्देश्य, १२. दुर्लभ, १३. कैद,
१४. पाँव के तलवे, १५. जला हुआ बाल, १६. सिवाय, १७. सामने; काम
के लिए, १८. ईर्ष्यालुओं की आँख की तंगी ।

आशुप्रतगी^१ ने नक्शे - सुवैदा^२ किया दुरुस्त
 जाहिर हुआ कि दाग का सरमाया दूद^३ था
 था ख्वाब में ख्याल को तुम्हसे मुआमला
 जब आंख खुल गई न ज़िया^४ था न सूद था
 लेता हूँ मकतवे - गुमे - दिल^५ में सबक हनोज^६
 लेकिन यही कि 'रफ्त' गया, और 'बूद' था
 ढांपा कफ़न ने दागे अयूवे - वरहनगी^७
 मैं, वरना हर लिवास में नंगे - बुजूद^८ था
 तेशे वगैर मर न सका कोहकन^९ 'असद'
 सर - गश्तए^{१०} - खुमारे - रसूमो - क्यूद^{११} था

* * * * *

कहते हो, न देंगे हम, दिल अगर पड़ा पाया
 दिल कहां कि गुम कीजे? हमने मुद्आ पाया
 इश्क से तबीअत ने जीस्त^{१२} का मज़ा पाया
 दर्द की दवा पाई, दर्द वे - दवा पाया
 दोस्तदारे - दुश्मन^{१३} है ! एतमादे - दिल^{१४} मात्सूम
 आह वेअसर देखी, नाला^{१५} ना - रसा^{१६} पाया
 सादगी^{१७} व पुरकारी^{१८}, वेखुदी^{१९} व हुशियारी
 हुस्न को तगाफुल^{२०} में जुरअत - आजमा पाया

१. परेशानी, २. दिल के दाग का चिह्न, ३. धुआं, ४. हानि, क्षति,
 ५. दिल के राम का मदरसा, ६. अभी, ७. नग्नता के दोष, ८. अस्तित्व
 का कलंक, ९. शरीर का प्रेमी फरहाद, १०. बंधा हुआ, ११. रीति-रिवाज,
 १२. निन्दगी, १३. दुश्मन का दोस्त, १४. मन का विश्वास, १५. रुदन,
 १६. न पहुँचने वाला, १७. सरलता, १८. चालाकी, १९. मस्ती, २०. उदा-
 सीनता ।

गुन्चा फिर लगा खिलने, आज हमने अपना दिल
 खूँ किया हुआ देखा, गुम किया हुआ पाया
 हाले दिल नहीं मालूम, लेकिन इस क़दर—यानी
 हमने वारहा ढूँढा, तुमने वारहा पाया
 शोरे - पन्दे - नासेह^१ ने ज़रूम पर नमक छिड़का
 आपसे कोई पूछे, तुमने क्या मज़ा पाया ?

दिल मिरा सोज़े - निहाँ^२ से वेमहावा^३ जल गया
 आतिशे - ख़ामोश^४ की मानिन्द गोया जल गया
 दिल में जौकै^५ वस्त्रों यादे यार तक वाक़ी नहीं
 आग इस घर को लगी ऐसी कि जो था जल गया
 मैं अदम^६ से भी परे हूँ वरना गाफ़िल वारहा
 मेरी आहे - आतिशी^७ से वाले - अंका^८ जल गया
 अर्ज कीजे जौहरे - अन्देशा^९ की गरमी कहां !
 कुछ खयाल आया था वहशत^{१०} का—कि सहरा जल गया
 दिल नहीं तुम्हको दिखाता वरना दाग़ों की वहार
 इस चिरागा^{११} का करूं क्या, कारफ़रमा^{१२} जल गया
 मैं हूँ और अफ़सुरदगी^{१३} की आरजू 'ग़ालिब' ! कि दिल
 देखकर तर्जे - तपाके^{१४} अहले दुनिया जल गया

१. उपदेशक की सीख; शोरे, २. आन्तरिक जलन, ३. एकदम, ४. मूक
 आग, ५. चाह, ६. मिलन ७. अस्तित्वहीन, ८. जलती हुई आह, ९. अंका
 नामी पच्ची का पंख, १०. चिंतन-तत्त्व, ११. उन्माद, १२. दीपमाला १३. कृपालु,
 १४. विषाद, १५. व्यवहार का ढंग ।

शोक हर रंग रक्तीवे^१ सरो सामां निकला
 केस तस्वीर के पदों में भी उरियां^२ निकला
 ज़रम ने दाद न दी तंगिए दिल की या रव
 तीर भी सीनए - विस्मिल^३ से पर - अफ़शां^४ निकला
 वृए - गुल,^५ नालाए - दिल,^६ दूदे - चिराग़े - महफ़िल^७
 जो तिरी वज़म से निकला सो परीशां निकला
 हे नौ - आमोज़े - फ़ना^८ हिम्मते - दुश्वार - पसन्द^९
 सख्त मुश्किल है कि यह काम भी आसां निकला
 दिल में फिर गिरिये^{१०} ने इक शोर उठाया 'ग़ालिव'
 आह ! जो क़तरा न निकला था, सो तूफ़ां निकला



धमकी में मर गया, जो न वावे - नवर्द^{११} था
 इश्क़े नवर्द पेशा तलबगार मर्द था
 था ज़िन्दगी में मर्ग^{१२} का खटका लगा हुआ
 उड़ने से पेशतर भी मिरा रंग ज़र्द था
 तालीफ़^{१३} नुस्रता - हाए - वफ़ा^{१४} कर रहा था मैं
 मजमूअए - खयाल^{१५} अभी फ़र्द - फ़र्द^{१६} था
 दिल ता जिगर, कि साहिले दरियाए खू है अब
 इस रहगुज़र में जल्वए - गुल, आगे गर्द था

१. प्रतिद्वन्द्वी, २. नग्न, ३. घायल का वक्ता, ४. फड़फड़ाता, ५. फूल की सुगन्ध, ६. दिल की आह, ७. महफ़िल के चिराग़ का धुआँ, ८. नौसि-खिया, ९. कठिनाई का इच्छुक; साहसी, १०. रुदन, ११. अजेय, १२. मृत्यु, १३. रचना, १४. वफ़ा का पुतला, १५. विचार-संकलन, १६. विखरा हुआ ।

जाती है कोई ? कशमकश अन्दोहे - इश्क^१ की !
 दिल भी अगर गया, तो वही दिल का दर्द था
 अहवाव^२ चारा - साज़िए - वहशत^३ न कर सके
 ज़िन्दां में भी खयाल, वयावां - नवर्द^४ था
 यह लाशे वेकफ़न 'असदे' ख़स्ता - जां की है
 हक़ मग़फ़िरत^५ करे अजब आज़ाद मर्द था !

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

दहर^६ में नक्शे - वफ़ा वजहे तसल्ली न हुआ
 है यह वो लफ़्ज़ कि शर्मिन्दए - मानी^७ न हुआ
 सज्ज़ए - ख़त^८ से तिरा काकुले - सरकश^९ न दवा
 यह ज़मूरुद्^{१०} भी हरीफ़े^{११} दमे - अफ़ई^{१२} न हुआ
 मैंने चाहा था कि अन्दोहे - वफ़ा^{१३} से छूटूं
 वो सितमगर मिरे मरने पे भी राज़ी न हुआ
 दिल गुज़रगाहे ख़याले मअ्रो सागर ही सही
 गर नफ़्स^{१४} जादए^{१५} सरे मंज़िले-तक्वा^{१६} न हुआ
 हूं तिरे वादा न करने में भी राज़ी कि कभी
 गोश^{१७} मिन्नत-कशे^{१८} गुलवांगे - तसल्ली^{१९} न हुआ
 किससे महरूमिए - किस्मत^{२०} की शिकायत कीजे ?
 हमने चाहा था कि मर जायँ, सो वो भी न हुआ

१. प्रेम के विपाद की वेदना २. मित्र, ३. उन्माद का उपचार, ४. जंगल में घूमना ५. मुक्ति ६. जमाना, ७. सार्थक, ८. चेहरे के बाल; दाढ़ी; उड़ता हुआ, ९. शोख जुल्फ, १०. लाल हीरा, ११. विरोधी, १२. सांप, १३. वफा का गुम, १४. सांस, १५. मार्ग, १६. परलोक की मंजिज़, १७. कान, १८. वृत्त, १९. सान्त्वना की मधुर ध्वनि, २०. माग्यहीन ।

मर गया सदमए^१ यक जुम्बिरो^२ लव से 'गालिव'
नातवानी^३ से हरीफे^४ दमे - ईसा^५ न हुआ



सताइश-गर^६ है जाहिद^७ इस कदर, जिस बागे-रिजवां^८ का
वो इक गुलदस्ता है हम बेखुदों^९ के ताके-निसियां^{१०} का
वयां क्या कीजिये वेदादे-काविश-हाए-मिजगां^{११} का
कि हर यक कतरए-खूं दाना है तस्वीहे मरजां^{१२} का
न आई सतवते-कातिल^{१३} भी माना मेरे नालों को
लिया दांतों में जो तिनका, हुआ रेशा-नयस्तां^{१४} का
दिखाऊंगा तमाशा, दी अगर फुर्सत जमाने ने
मिरा हर दागेदिल, इक तुल्म है सर्वे-चिरागां^{१५} का
किया आइनाखाने^{१६} का वो नक्शा तेरे जल्वे ने
करे जो परतवे - खुर्शीदे - आलम,^{१७} शवनमिस्तां^{१८} का
मिरी तामीर^{१९} में मुझिमर^{२०} है इक सूरत खराबी की
हयूला^{२१} बर्के-खिरमन^{२२} का है, खूने गर्म दहकां का
उगा है घर में हर सू^{२३} सच्चा, वीरानी, तमाशा कर
मदार अब खोदने पर घास के है मेरे दरवां का

१. आघात, २. हरकत, ३. दुर्बलता, ४. प्रतिद्वन्दी, ५. ईसा के मन्त्र,
६. प्रशंसक, ७. भक्त, ८. स्वर्ग, ९. मस्ती, १०. विस्मृति का ताक,
११. पलकों के चुमने की पीड़ा, १२. मूँगे की माला, १३. हत्यारे का आतंक
१४. जंगल का रेशा, १५. चिरागों का सत्वर; बहुत डज्जल, १६. शीशों का
घर, १७. दुनिया के सूरज का प्रतिबिम्ब १८. जहाँ ओस पड़ती हो,
१९. निर्माण, २०. निहित, २१. मौक्तिक तत्त्व, २२. खलिहान पर गिरने वाली
विजली, २३. और; तरफ ।

खमोशी में निहां^१ खूशता^२ लाखों आरजूएं हैं
 चिरागे-मुर्दा^३ हूं मैं वेजुवां गोरे-गरीबां^४ का
 हनूज^५ इक परतवे - नक्शे - खयाले - यार^६ वाकी है
 दिले अफसुर्दा^७ गोया हुजरा^८ है यूसुफ़ के ज़िन्दा का
 वगल में गैर की आप आज सोए हैं कहीं, वरना
 सबव क्या ! ख्वाब में आकर तवस्सुम-हाए^९ पिन्हां^{१०} का
 नहीं मालूम किस किसका लहू पानी हुआ होगा !
 क्यामत है सरश्क-आखुर्दा^{११} होना तेरी मिज़गां^{१२} का
 नज़र में है हमारी जादए - राहे - फ़ना^{१३} 'ग़ालिब'
 कि यह शीराज़ा^{१४} है, आलम के अजज़ाए^{१५} - परीशां का

* * * * *

न होगा यक वयाचां^{१६} मान्दगी^{१७} से ज़ौक कम मेरा
 हवावे - मौजए - रफ़्तार^{१८} है नक्शे - क़दम^{१९} मेरा
 मुहव्वत थी चमन से लेकिन अब यह वेदिमागी है
 कि मौजे-बूए-गुल^{२०} से नाक में आता है दम मेरा

* * * * *

सरापा^{२१} रहने - इश्को^{२२} नागुज़ीरे - उल्फ़ते - हस्ती^{२३}
 इवादत^{२४} बर्क^{२५} की करता हूं और अफ़सोस साहिल^{२६} का

१. निहित, २. खून की हुई, ३. बुझा हुआ चिराय, ४. गरीब की कन्न, ५. प्रेमी-के विचार-चिन्ह का प्रतिविम्ब ६. कोठरी, ७. श्रोतुओं में भागी, ८. पलके, ९. अंत का मार्ग, १०. संग्रह ११. बिखरे हुए तत्व, १२. जंगल, १३. थकन, १४. गतिमान तरंग पर बना बुदबुद, १५. पद-चिह्न, १६. फूल की सुगन्ध की लहर, १७. सिर से पाँव तक, १८. प्रेम-धरोहर, १९. अवश्यन्मावी जीवन-प्रेम, २०. पूजा, २१. विजली, २२. प्राप्ति ।

चकदरे - जफ़^१ है, साक़ी ! खुमारे - तश्नाकामी^२ भी
जो तू दरियाए-में^३ है, तो मैं खुमियाज़ा^४ हूं साहिल का

* * * * *

मैहरम^५ नहीं है तू ही नवाहाए - राज़^६ का
यां वरना जो हिजाब^७ है—पर्दा^८ है साज़ का
रंगे - शिकस्ता^९ सुवहे वहारे नज़ारा है
यह वक्त है शगुफ़तने - गुलहाए - नाज़^{१०} का
तू और सूर - ग़ैर^{११} नज़र हाए तेज़ तेज़
मैं और दुख तिरी मिज़ाहाए - दराज़^{१२} का
सफ़ा^{१३} है ज़न्ते आह मैं मेरा, वगरना मैं
तामा^{१४} हूं एक ही नफ़से - जां - गुदाज़^{१५} का
हैं वस कि जोशे वादा से शीशे उछल रहे
हर गोशए - विसात^{१६} है, सर शीशा बाज़ का
काविश^{१७} का दिल करे है तकाज़ा कि है हनोज़
नाखुन पे क़र्ज़, उस गिरहे - नीम - बाज़^{१८} का
ताराजे - काविशे - ग़मे - हिजरां^{१९} हुआ 'असद'
सीना, कि था दफ़ीना गुहर हाए - राज़^{२०} का

१. सामर्थ्य के अनुसार, २. प्यास का खुमार, ३. शराब की नदी,
४. अंगड़ाई; परिणाम । ५. जानने वाला, ६. भेद भरी आवाज़ें, ७. पर्दा, ८. उड़ा
हुआ रंग, ९. रकीव की ओर, १०. लम्बी पलकें, ११. लाम, १२. घास,
१३. प्रतिद्वन्दी घातक सांस, १४. संसार का कोना, १५. कुरेद, १६. अथखुली
गाँठ, १७. विरह की पोड़ा से बरबाद, १८. रहस्य के हारे ।

वज्रमे शाहनशाह में अशआर का दफ़्तर खुला
 रखियो यारच ! यह दरे - गब्जीनए - गौहर^१ खुला
 शव^२ हुई फिर अंजुमे - रबिणन्दा^३ का मब्ज़र^४ खुला
 इस तक्ल्लुफ़ से कि गोया बुतकदे का दर खुला
 गरचे हूं दीवाना, पर क्यों दोस्त का ख़ाज फरेक
 आस्तीं में दर्शा^५ पिन्हां,^६ हाथ में नशतर खुला
 गो न समझूं उसकी बातें, गो न पाजं उसका भेद
 पर यह क्या कम है कि मुझसे वो परी - पैकर^७ खुला
 है खयाले हुस्न में हुस्ने - अमल का सा खयाल
 खुल्द^८ का इक दर है, मेरी गोर^९ के अन्दर खुला
 मुंह न खुलने पर है वो आलम कि देखा ही नहीं
 जुल्फ़ से बढ़कर नकाव उस शोख़ के मुंह पर खुला
 दर पै रहने को कहा और कहके कैसा फिर गया
 जिसने असें में मिरा लिपटा हुआ विस्तर खुला
 क्यों अधेरी है शवे-ग़म^{१०}? है बलाओं^{११} का नुज़ूल^{१२}
 आज उधर ही को रहेगा . दीए - अख़्तर^{१३} खुला
 क्या रहूँ गरवत में खुश ? जब हो हवादिस^{१४} का यह हाल
 नामा लाता है बतन से नामावर^{१५} अकसर खुला
 उसकी उम्मत^{१६} में हूं मैं, मेरे रहें क्यों काम बन्द
 वास्ते जिस शै के 'ग़ालिव' गुम्बदे - वे - दर^{१७} खुला

१. हीरों के कोष का द्वार, २. रात, ३. चमकता हुआ तारा, ४. दृश्य,
 ५. चाकू, ६. छिपा हुआ, ७. परी जैसे शरीर वाला, सुन्दर, ८. स्वर्ग, ९. कम,
 १०. विषादमय रात, ११. विपत्तियों, १२. अवतरण, १३. सितारे की आँख,
 १४. दुर्घटनाएँ, १५. सदेश-वाहक, १६. अनुयायी वर्ग, १७. आकाश ।

शव, कि बकें-सोजे-दिल^१ से, जुहरए-अव^२ आव^३ था
 शोलए - जव्वाला^४ हर इक हल्कए-गिरदाव^५ था
 वां, करम को उज्जे - वालिश^६, था अनागीरे - खराम^७
 गिरिया^८ से यां पम्बए - वालिश^९ कक्रे - सैलाव^{१०} था
 वां, खुद - आराई^{११} को था मोती पिरोने का खयाल
 यां, हुजूमै - अश्क^{१२} में तारे - निगह^{१३} नायाव^{१४} था
 जल्बए - गुल^{१५} ने किया था वां चिरागां आवेजू^{१६}
 यां, रवां^{१७} मिजगाने - चश्मेतर^{१८} से खूनेनाव^{१९} था
 यां, सरे - पुर - शोर^{२०}, चेख्वावी^{२१} से था दीवार - जू^{२२}
 चां, वो फकें - नाज^{२३} महवे - वालिशे कम - खवाव^{२४} था
 यां नफ़स करता था रौशन शम् - बरमे - वेबुदी^{२५}
 जल्बए - गुल वां विसाते - सोहवते - अहवाव^{२६} था
 फर्श से ता अर्श^{२७} वां तूफ़ां था मीजे - रंग^{२८} का
 यां ज़मीं से आस्मां तक सोखतन^{२९} का वाव^{३०} था
 नागहो^{३१} इस रंग से खूनावा^{३२} टपकाने लगा
 दिल कि जाँके - काविशे - नाखून^{३३} से लज्जत-याव^{३४} था

१. दिल जलाने वाली दिजली, २. बादल का पिता, ३. पानी, ४. धूमती हुई ज्वाला, ५. जल-मंवर, ६. तकिये का बहाना, ७. गति की लगान थाने हुए, ८. नदन ९. तकिए की रूई, १०. वाद की आग, ११. आन-सज्जा, १२. अशु-समूह, १३. दृष्टि का सूत्र; निगाह, १४. अलम्ब, १५. फूजों की छटा, १६. नदी का पानी, १७. वह रहा, १८. भागी हुई आँख को पकड़ने, १९. सुख खून, २०. उम्मत सिर, २१. नींद न आना, २२. दीवार ढूँढ़ना, २३. कोमल सिर, २४. मखमली तकिये पर सोया हुआ, २५. मस्ती की समा की शमा, २६. एकत्र मित्रों का विद्यावन, २७. आकाश, २८. रंग की लहर, २९. जलना, ३०. कारण, ३१. सइसा, ३२. खून के आँसू, ३३. नाखून की कुरेद का मजा, ३४. आनन्दित ।



नालए - दिल^१ में शव, अन्दाजे - असर नायाव था
 था सिपन्दे^२ वज्रमे - वस्त्रे - गैर^३, गो वेताव था !
 मक़दमे - सैलाव^४ से दिल क्या निशात - आहंग^५ है !
 खानए - आशिक^६ मगर साजे - सदाए - आव^७ था
 नाज़िशे - अय्यामे - खाकस्तर - नशीनी^८, क्या कहूं !
 पहलुए - अन्देशा^९, वक्रफ़े - विस्तरे - संजाव^{१०} था
 कुछ न की, अपने जुनने - ना - रसा ने, वरना यां
 ज़रा ज़रां रुकशे - खुशीदे^{११} - आलम - ताव^{१२} था
 आज क्यों परवा नहीं अपने असीरों^{१३} की तुम्हे ?
 कल तलक तेरा भी दिल मेहरोवफ़ा^{१४} का वाव^{१५} था
 याद कर वो दिन, कि हर इक हल्का तेरे दाम^{१६} का
 इन्तेज़ारे - सैद^{१७} में इक दीदए - वेख़ाव^{१८} था
 मैंने रोका रात 'ग़ालिव' को वगरना देखते
 उसके सैले - गिरिया^{१९} में गरदू^{२०} कफ़े - सैलाव^{२१} था



एक एक क़तरे का मुझे देना पड़ा हिसाब
 ख़ने जिगर, वदीअते - मिजगाने - यार^१ था

१. दिल की आह, २. एक पौधे का छोटा-सा काला दाना जो आग में
 गिर कर आवाज़ देता है, ३. प्रतिद्वन्द्वी की मिलन-सभा, ४. वाद का स्वागत,
 ५. आनन्दित, ६. प्रेमी का घर, ७. पानी के बाजे; आवाज़ ८. धरती पर बैठ
 कर बिताए दिनों का गर्व, ९. चिंतन की गोद. १०. मखमल पर विश्राम,
 ११. सूरज से ईर्ष्या करने वाला, १२. कैदी, १३. प्रेम, १४. स्रोत, १५. जाल,
 १६. शिकार, १७. अपलक नेत्र, १८. आँसुओं की बाढ़, १९. आसमान,
 २०. बाढ़ की आग, २१. प्रेमी के पलकों की धरोहर ।

अव मैं हूं और मातमे - यक - शहरे - आरजू^१
तोड़ा जो तूने आईना तिमसाल - दार^२ था
गलियों में मेरी नाश^३ को खींचे फिरो कि मैं
जां - दादए - हवाए - सरे - रह - गुज़ार^४ था
मौजे - सरावे - दश्ते - वफा^५ का न पूछ हाल
हर ज़रा मिस्ले - जौहरे - तेगै - आवदार^६ था
कम जानते थे हम भी गुमे इश्क को पर अव
देखा तो कम हुए पै गुमे - रोज़गार^७ था

* * * * *

वस कि दुश्वार है हर काम का आसां होना
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्सां होना
गिरिया^८ चाहे है खराबी मिरे काशान^९ की
दरो दीवार से टपके है बयावां होना
वाए दीवानगिए - शौक कि हरदम मुझको
आप जाना उधर और आप ही हैरां होना
जल्वा अज़ - वस^{१०} कि तकाज़ाए - निगह करता है
जौहरे - आईना^{११} भी चाहे है मिज़गां होना
इशरते-क़त्ल - गहे - अहले - तमन्ना^{१२} मत पूछ
ईदे - नज़ारा है शमशीर का उरियां^{१३} होना

१. अमिलापाओं रूपी नगर का शोक, २. प्रतिविम्ब उतारने वाला,
३. शव, ४. मार्ग की वायु से जीवित, ५. वफा के जंगल की मरीचिका,
६. तलवार के पानी के सदृश चमकदार, ७. जीविका का गुम, ८. रुदन,
९. घर, १०. अवश्य, ११. आईने का पानी, १२. चाहने वालों के हत्या-स्थान
का ऐश्वर्य, १३. म्यान से बाहर, जंगा।

ले गये खाक में हम दागे - तमन्नाए - निशात^१
 तू हो और आप वसद - रंग^२ गुलिस्तां होना
 इशरते - पारए - दिल,^३ ज़ख्मे - तमन्ना^४ खाना
 लज्जते - रेशे - जिगर,^५ ग़र्के - नमकदां^६ होना
 की मिरे क़त्ल के बाद उसने जफ़ा से तौबा
 हाय उस ज़ूद - पशेमां^७ का पशेमां होना
 हैफ़ उस चार गिरह कपड़े की किस्मत 'ग़ालिव'
 जिसकी किस्मत में हो आशिक़ का गरेवां होना

* * * * *

दोस्त ग़मख़्तवारी में मेरी सई^८ फरमायेंगे क्या ?
 ज़ख्म के भरने तलक नाखुन न बढ़ आयेंगे क्या ?
 बे - नियाजी^९ हृद से गुज़री, बन्दा-परवर कब तलक
 हम कहेंगे हाले दिल, और आप फरमायेंगे, "क्या ?"
 हज़रते नासह गर आयें, दीवओ दिल फर्शें राह
 कोई मुक्क़ो यह तो समझादो कि समझायेंगे क्या ?
 आज वां तेगो - कफ़न बाँधे हुए जाता हूँ मैं
 उज्र मेरे क़त्ल करने में वो अब लायेंगे क्या ?
 गर किया नासह ने हमको कैद, अच्छा ! यूँ सही
 यह जुनूने इश्क़ के अन्दाज़ छुट जायेंगे क्या ?
 ख़ाना - ज़ादे - जुल्फ़^{१०} हैं, ज़ंजीर से भागेंगे क्यों ?
 हैं गिरफ्तारे वफ़ा ज़िन्दा^{११} से धवरायेंगे क्या ?

१. वल्लास की अभिलाषा का दाग़, २. सौ रंग, ३. दिल के टुकड़े का आनन्द ४. इच्छा का वाव, ५. जिगर के धाव का आनन्द; ६. नमकदान में हृदना, ७. शीघ्र लज्जित होने वाला, ८. भक्तसुप्त, ९. यत्न, १०. उदासीनता, अपेक्षा, ११. जुल्फ़ का कैदी, १२. जेल ।

है अब इस मामूर^१ में कहते - गुमे - उल्फ़त^२ 'असद'^३
हमने यह माना कि दल्ली में रहें खायेंगे क्या ?

* * * * *

यह न थी हमारी किस्मत कि विसालेयार^४ होता
अगर और जीते रहते यही इन्तेज़ार होता
तिरे वादे पर जिये हम, तो यह जान भूठ जाना
कि खुशी से मर न जाते अगर एतवार होता ?
तिरी नाजुकी^५ जाना, कि वंधा था अहद^६ वोदा
कभी तू न तोड़ सकता, अगर उस्तवार^७ होता
कोई मेरे दिल से पूछे, तिरे तीरे - नीमकश^८ को
यह खलिश^९ कहां से होती जो जिगर के पार होता ?
यह कहां की दोस्ती है कि वने हैं दोस्त नासेह
कोई चारासाज़^{१०} होता, कोई गुमगुसार^{११} होता
रगे - संग^{१२} से टपकता वो लहू कि फिर न थमता
जिसे गुम समझ रहे हो यह अगर शरार^{१३} होता
गुम अगरचे जां - गुसल^{१४} है पै कहां वचें कि दिल है
गुमे - इश्क़ गर न होता, गुमे - रोज़गार होता
कहूं किससे मैं कि क्या है, शवे - गुम^{१५} बुरी बला है
मुझे क्या बुरा था मरना अगर एक बार होता
हुए मरके हम जो रुस्वा, हुए क्यों न ग़र्के दरिया ?
न कभी जनाज़ा उठता, न कहीं मज़ार होता

१. नगर, २. प्रेम के गुम का अकाल, ३. मन्न-मिलन, ४. कोमलता,
५. प्रतिष्ठा, ६. दृढ़, ७. आधा चुभा हुआ तीर, ८. चुमन; पीड़ा, ९. उपचारक,
१०. हमदर्द, ११. पत्थर की नस, १२. शोला; पतंगा, १३. प्राणघातक,
१४. विषादमयी रात्रि ।

उसे कौन देख सकता, कि यगाना^१ है वह यक्ता^२?
जो दुई की वू भी होती, तो कहीं दुचार होता
ये मसाइले - तसव्वुफ़^३! ये तिरा वयान 'ग़ालिव'^४!
तुम्हे हम वली^५ समझते जो न वादास्वार^६ होता

* * * * *

हविस को है निशाते - कार^१ क्या क्या ?
न हो मरना तो जीने का मज़ा क्या ?
तजाहुल - पेशगी^२ से मुद्आ^३ क्या ?
कहां तक ऐ सरापा - नाज़^४ क्या क्या ?
नवाज़िश - हाए - बेजा^५ देखता हूं
शिकायत हाए रंगी का, गिला क्या ?
निगाहे - वेमहावा^६ चाहता हूं
तगाफ़ुलहाए - तमकीं - आजमा^७ क्या ?
फ़रोगे - शोलए - ख़स^८ यक नफ़स है
हविस को पासे - नामूसे - वफ़ा^९ क्या !
नफ़स, मौजे - मुहीते - बेख़ुदी^{१०} है
तगाफ़ुलहाए - साकी^{११} का गिला क्या
दिमागे - इत्रे - पैराहन^{१२} नहीं है
ग़मे - आवारगीहाए सवा^{१३} क्या ?

१. २. अद्वितीय, ३. सूफीवाद की समस्याएँ, ४. औलिया, ५. शराबी,
६. काम की खुशी, ७. पूर्व निश्चित अज्ञानता, ८. अभिप्राय, ९. जो सिर से
पैर तक नखरों से पूर्ण हो, नखरे का प्रतीक, १०. अनुचित कृपा, ११. निस्संकोच,
१२. सन्तोष की परीक्षा लेने वाली अपेक्षा, १३. घास की आग का प्रकाश,
१४. प्रेम-प्रतिष्ठा का लिहान, १५. मस्ती के भंवर की तरंग, १६. वसंत की
वायु।

दिले हर कतरा है साजे - अनल - चहर^१
 हम उसके हैं हमारा पूछना क्या ?
 महावा^२ क्या है मैं ज़ामिन इधर देख
 शहीदाने - निगाह^३ का खूं - वहां^४ क्या ?
 सुन ! ऐ ग़ारतगरे - जिसे - वफ़ा^५ सुन !
 शिकस्ते - शीशए - दिल^६ की सदा क्या ?
 किया किसने ज़िगर - दारी^७ का दावा
 शकेवे - खातिरे - आशिक^८ भला क्या
 यह कातिल, वादए - सब - आजमा^९ क्यों ?
 यह काफ़िर फ़ितनए - ताक़त - रुवा^{१०} क्या !
 बलाए जा^{११} है 'ग़ालिव' उसकी हर बात
 इवारत^{१२} क्या, इशारत^{१३} क्या, अदा क्या !



दर खुरे-क़हरो-ग़ज़व^{१४} जब कोई हमसा न हुआ
 फिर ग़लत क्या है कि हमसा कोई पैदा न हुआ
 वन्दगी में भी वह आज़ादाओ - खुदवी^{१५} हैं, कि हम
 उल्टे फिर आये दरे कावा अगर वा^{१६} न हुआ
 सबको मक़बूल^{१७} है दावा तिरी यक्ताई^{१८} का
 रूबरू^{१९} कोई वुते - आईन - सीमा^{२०} न हुआ

१. मैं समुद्र हूं, २. संकोच, ३. निगाह के मारे हुए, ४. जान की कीमत,
 ५. प्रेम रूपी धन का लुटेरा, ६. दिल के शीशे का टूटना, ७. साहस, ८. प्रेमी
 का संतोष, ९. संतोष की परीक्षा लेने वाला वचन, १०. शक्ति चुराने वाला
 फ़ितना, ११. जान के लिए मुसीबत, १२. लिखावट, १३. संकेत, १४. क्रोध
 और अत्याचार का पात्र, १५. स्वच्छन्द और अमिमानी, १६. खुला १७. प्रिय,
 स्वीकार, १८. अद्वितीयता, १९. सामने, २०. आईने के सदृश चमकने वाला ।

कम नहीं, नाज़िशे - हम - नामिए - चश्मे - खूना^१
 तेरा वीमार, बुरा क्या है, गर अच्छा न हुआ
 सीने का दाग है वो नाला,^२ कि लव तक न गया
 खाक का रिज्क^३ है वो कतरा, जो दरिया न हुआ
 नाम का मेरे है वो दुख, कि किसी को न मिला
 काम में मेरे है वो फितना, कि वरपा न हुआ
 हर बुने - मूँ से दमे - जिक्र न टपके खूनाव^४
 हमजा का किस्ता हुआ, इश्क का चर्चा न हुआ
 कतरे में दज़ला दिखाई न दे और जुज्व^५ में कुल^६
 खेल लड़कों का हुआ, दीदए - बीना^७ न हुआ
 थी ख़वर गर्म कि 'ग़ालिब' के उड़ेंगे पुरजे
 देखने हम भी गये थे, पै तमाशा न हुआ

* * * * *

पए - नज़रे - करम^१ तोहफ़ा है शर्मे - ना - रसाई^२ का
 बख़ू - ग़लतीदए - सद - रंग^३ दावा पारसाई का
 न हो हुस्ने तमाशा दोस्त रुस्वा वेवफ़ाई का
 वमुहरे - सद - नज़र सावित है दावा पारसाई^४ का
 ज़काते - हुस्न^५ दे, ऐ जल्वए - बीनश^६ कि मेहर - आसा^७
 चिरागे - ख़ानए - दरवेश^८ हो, कासा - गदाई^९ का

१. प्रेमिकाओं की आँख, २. ख़द, ३. खुराक, ४. रयों की नोक,
 ५. सुख खून, ६. अंश, ७. पूर्ण, ८. देखनेवाली आँख, ९. कृपादृष्टि के लिए,
 १०. न पहुँच सकने की लज्जा, ११. सौ तरह खून में लिथड़ा हुआ,
 १२. पवित्रता, १३. सौंदर्य का दान, १४. चमकदार, १५. सूर्य के सदृश,
 १६. भिखारी के घर का चिराग, १७. भिक्षा-पात्र ।

न मारा जान कर वेजुर्म, कातिल तेरी गर्दन पर
 रहा मानिन्दे खूने वेगुनह हक आशनाई का
 तमन्नाए - जुवां^१ महवे - सिपासे - वे - जुवानी^२ है
 मिटा जिससे तकाजा, शिकवए - वे - दस्तो - पाई^३ का
 वही इक वात है जो यां नफ़स, वां नकहते-गुल^४ है
 चमन का जल्वा वाइस^५ है मिरी रंगीं - नवाई^६ का
 दहाने - हर - बुते - पैगारा^७ - जू, जंजीरे - रुस्वाई^८
 अदम^९ तक वेवफ़ा ! चर्चा है तेरी वेवफ़ाई का
 न दे नामे^{१०} को इतना तूल 'ग़ालिव' मुख़्तसर लिख दे
 कि हसरत - संज^{११} हूं, अजें - सितमहाए - जुदाई^{१२} का

* * * * *

गर न अन्दोहे - शवे - फुर्क़त^{१३} वयां हो जायगा
 वे - तक़ल्लुफ़ दागे - मह^{१४} मुहरे - दहां^{१५} हो जायगा
 जुहरा^{१६} गर ऐसा ही शामे - हिज्र^{१७} में होता है अव
 परतवे - मेहताव^{१८} सैले - ख़ानुमां^{१९} हो जायगा
 ले तो छूं सोते में उसके पांव का वोसा, मगर
 ऐसी बातों से वो काफ़िर बदगुमां हो जायगा
 दिल को हम सर्फ़े - वफ़ा^{२०} समझे थे क्या मात्तम था
 यानी यह पहले ही नज्र - इम्तहां^{२१} हो जायगा

१. ज़वान की तमन्ना, २. मौन की प्रशंसा में लीन, ३. मजबूरी की शिकायत, ४. फूल की खुशबू, में लीन, ५. कारण, ६. मधुर ध्वनि, ७. हर लड़ाकू प्रेमी का मुँह, ८. परलोक, ९. खत, १०. विरह के दुख, ११. वियोग की रात्रि की पीड़ा, १२. चौंद का दाग, १३. मुँह पर मुहर, १४. पिता, १५. विरह की शाम, १६. सरल का प्रतिबिम्ब, १७. घर की वाढ़, १८. प्रेम के लिए अर्पित, १९. परीक्षा की भेंट।

सबके दिल में है जगह तेरी, जो तू राज़ी हुआ
 मुझपे गोया इक ज़माना मेहरवां हो जायगा
 गर निगाहे - गर्म^१ फ़रमाती रही—तालीमे - ज़ुन्न^२
 शोला खस^३ में जैसे, खूं रग में निहां हो जायगा
 वाग़ में मुझको न ले जा, वरना मेरे हाल पर
 हर गुले तर एक चश्मे - खूं - फिशों^४ हो जायगा
 बाए गर मेरा तिरा इंसफ़ महशर^५ में न हो
 अब तलक तो यह तबक्को^६ है कि वां हो जायगा
 फ़ायदा क्या ? सोच, आख़िर भी दाना है 'असद'
 दोस्ती नादां^७ की है, जी का ज़ियां^८ हो जायगा

* * * * *

दर्द मिन्नत - कशों^९ दवा न हुआ
 मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ
 जमा करते हो क्यों रक़ीवों को ?
 इक तमाशा हुआ गिला न हुआ
 हम कहां किस्मत आज़माने जायं ?
 तू ही जब खंजर - आज़मा^{१०} न हुआ
 कितने शीरी हैं तेरे लव ! कि रक़ीव
 गालियां खाके वे - मज़ा^{११} न हुआ
 है ख़वर गर्म उनके आने की
 आज ही घर में चोरिया न हुआ

१. स्निग्ध दृष्टि, २. संयम की सीख, ३. घास, ४. चुर्ख आँख, रक्त रंजित,
 ५. क्रयामत; प्रलय, ६. आशा, ७. अनजान, ८. नुक़सान, ९. आभारी,
 १०. खंजर चलाना, ११. निरानन्द, खिन्न ।

क्या वो नमस्सुद्ध^१ की खुदाई थी ?
 वन्दगी^२ में मिरा भला न हुआ
 जान दी, दी हुई उसी की थी
 हक तो यह है कि हक अदा न हुआ
 ज़रम गर दव गया, लहू न थमा
 काम गर रुक गया रवा न हुआ
 रहज़नी^३ है, कि दिल - सितानी^४ है ?
 ले के दिल दिलसिता^५ रवा^६ न हुआ
 कुछ तो पढ़िये कि लोग कहते हैं
 “आज ‘ग़ालिव’ ग़ज़ल - सरा^७ न हुआ”

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

गिला है शौक को दिल में भी तंगीए-ज़ा^८ का
 गुहर^९ में मह^{१०} हुआ इज़तेराव^{११} दरिया का
 यह जानता हूं, कि तू और पासुखे - मक्तूब^{१२}
 मगर, सितमज़दा हूं, जौके - ख़ामा - फ़र्सा^{१३} का
 हिनाए - पाए - ख़िज़ां^{१४} है वहार अगर है यही
 दवाम^{१५} कुलफ़ते - ख़ातिर^{१६} है ऐश दुनिया का
 ग़मे - फ़िराक़ में तकीलफ़े सैरे गुल मत दो
 मुझे दिमाग़ नहीं ख़न्दाहाए - बेजा^{१७} का

१. एक ज़ालिम बादशाह का नाम, २. पूजा - आराधना, ३. ढाकाज़नी,
 ४. दिल चुराना, ५. प्रेमिका, ६. राजी, ७. ग़ज़ल सुनाने वाला, ८. स्थानाभाव,
 ९. मोती १०. निहित, ११. विकलता, १२. पत्रोत्तर, १३. लिखने वाला;
 क़लम, १४. ख़िज़ां के पौव की मेंहदी, १५. नित्यता, १६. कष्ट का कारण,
 १७. अनुचित मुल्कान ।

हनूज^१ महरमिए - हुस्न^२ को तरसता हूँ
 करे है हर चुनेमू^३ काम चश्मे - वीना^४ का
 दिल उसको पहले ही, नाजोअदा से दे बैठे
 हमें दिमाग़ कहां हुस्न के तकाज़ा का
 न कह कि गिरिया^५ वमिकदारे-हसरते - दिल^६ है
 मिरी निगाह में है जम्ओखुर्व^७ दरिया का
 फलक को देखके करता हूँ उसको याद 'असद'^८
 जफ़ा में उसकी है अन्दाज़ कारफ़रमा का

* * * * *

क़तरए - मै^९, वस कि हैरत से नफ़स - परवर^{१०} हुआ
 ख़त्ते - जामे - मै^{११} सरासर रिश्तए - गौहार^{१२} हुआ
 एतवारे - इश्क की ख़ाना ख़राबी देखना
 ग़ैर ने की आह, लेकिन वो ख़फ़ा मुक्त पर हुआ

* * * * *

जब, व - तक़रीबे - सफ़र^{१३} यार ने महमिल^{१४} बांधा
 तपिशे - शौक^{१५} ने हर ज़र्रे पे इक दिल बांधा
 अहले - वीनश^{१६} ने व - हैरत - कदए - शोखिए - नाज़^{१७}
 जौहरे - आईना^{१८} को तूतिए - चिस्मिल^{१९} बांधा

१. अमी, २. सौंदर्य की जानकारी, ३. रोम-राम, ४. देखने वाली
 आँख, ५. रुदन, ६. दिल के हसरत के अनुपात से, ७. शराब की वूद,
 ८. सौंस बढ़ाने वाला, ९. शराबी के प्याले की रेखा, १०. मोती का सूत्र,
 ११. यात्रा के लिए, १२. कूट का जुक़्क़ावा, पर्दा, १३. उन्नाद की जलन,
 १४. दृष्टि वाले, १५. नखरे की चंचलता को प्रतिबिम्बित करने वाला,
 १६. आईने का पानी, १७. घायल पत्नी।

यासो - उम्मीद^१ ने, एक अरबुदा^२ मैदां मांगा
 इज्जो - हिम्मत^३ ने तिलिस्मे - दिले - साइल^४ बांधा
 न बंधे तश्नगिए - जौक^५ के मज्मूं 'गालिव'
 गरचे दिल खोल के दरिया को भी साहिल बांधा



मैं और वज्मे - मैं^६ से यों तिश्ना - काम^७ आऊँ !
 गर मैंने की थी तीबा, साकी को क्या हुआ था
 है एक तीर जिसमें दोनों छिदे पड़े हैं
 वो दिन गये, कि अपना दिल से जिगर जुदा था
 दरमान्दगी^८ में 'गालिव' कुछ बन पड़े तो जानूं
 जब रिश्ता वेगिरह था नाखुन गिरह-कुशा^९ था



घर हमारा जो न रोते भी . तो वीरां^{१०} होता
 बहर^{११}, गर बहर न होता, तो बयावां होता
 तंगिए - दिल का गिला क्या, यह वो काफिर दिल है
 कि अगर तंग न होता तो परीशां होता
 बाद एक उम्रे - बरा^{१२}, बार तो देता चारे
 काश, रिज्वां^{१३} ही दरे - बार का दरवां होता

१. निराशा और आशा, २. लड़ाई, ३. साहस और विनम्रता, ४. भिखारी
 के दिल का जादू, ५. उम्माद की प्यास, ६. शराबी की महफिल, ७. प्यास,
 ८. धकन, ९. गोंठ खोलने वाला, १०. बरवाद, ११. समुद्र, १२. पवित्र
 आयु, १३. खुदा ।

* * * * *
 न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता
 डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता ?
 हुआ जब ग़म से यूँ बेहिस, तो ग़म क्या सर के कटने का !
 न होता गर जुदा तन से, तो ज़ानू पर घरा होता
 हुई मुदत कि 'ग़ालिब' मर गया पर याद आता है
 वो हर इक बात पर कहना, कि यों होता तो क्या होता ?

* * * * *
 यक ज़रूर भी ज़मीं नहीं वेकार वाग़ का
 यां जादा भी फतीला है लाले के दाग़ का
 वे - मैं किसे है ताक़ते - आशोवे - आगही
 खींचा है इज्जे - हौसला ने ख़त, अयाग़ का
 बुलबुल के कारोवार पे हैं ख़न्दाहाए - गुल
 कहते हैं जिसको इश्क़ ख़लल है दिमाग़ का
 ताज़ा नहीं है नशए - फ़िक्र - सुखन मुझे
 तिरियाकिए - क़दीम हूँ दूदे - चिराग़ का
 सौ वार वन्दे - इश्क़ से आज़ाद हम हुए
 पर क्या करें, कि दिल ही उदू है फ़राग़ का
 देखूने - दिल है चश्म में मौजे - निगह गुवार
 यह मैकदा ख़राब है मैं के सुराग़ का

१. शिथिल, २. जीव, ३. मार्ग, ४. वत्ती, ५. एक प्रकार का फूल,
 ६. विपदा को जानने का सामर्थ्य, ७. साइस की विनम्रता, ८. व्याला,
 ९. फूल का चिद्रूप, १०. काव्य-रचना का नशा, ११. पुराना काजल,
 १२. चिराग का धुआँ, १३. इश्क के वंघन, १४. दुश्मन, १५. अवकारा,
 विश्राम, १६. निगाह का तार, १७. निद्रा।

वागे - शगुफ़ता^१ तेरा विसाते - निशाते - दिल^२
 अत्रे - वहार^३ खुमकदा^४ किसके दिमाग का

* * * * *

वो मिरी - चीने - जर्बी^५ से गुमे - पिन्हां^६ समझा
 राजे - मक्तूब^७ व वेरन्तिए - उनवां^८ समझा
 यक अलिफ़ वेश^९ नहीं सैक़ले - आईना^{१०} हनूज़
 चाक करता हूं मैं, जवसे कि गरेवां समझा
 शरहे - अशवावे - गिरफ़तारिए - खातिर^{११} मत पूछ
 इस क़दर तंग हुआ दिल, कि मैं जिन्दां समझा
 वद - गुमानी^{१२} ने न चाहा उसे सरगमें - ख़राम^{१३}
 रुख़ पे हर क़तरए - अर्क^{१४} दीदए - हैरां^{१५} समझा
 इज्ज़ से अपने यह जाना कि वह वदखू^{१६} होगा
 नब्जे - ख़स^{१७} से तपिशे - शोलए - सोज़ा^{१८} समझा
 सफ़रे - इश्क़^{१९} में की ज़ोफ़^{२०} ने राहत - तलवी^{२१}
 हर क़दम साये को मैं अपने शविस्तां^{२२} समझा
 था गुरेज़ां^{२३} मज़ए - यार^{२४} से दिल तादमे - मर्ग^{२५}
 दफ़ए - पैकाने - कज़ा, ^{२६} इस क़दर आसां समझा

१. खिला हुआ वाग, २. दिल की खुशी की विसात, ३. बरसात का बादल, ४. मधुशाला; ५. माथे की शिकन, ६. भीतरी गुम, ७. पत्र का रहस्य, ८. शीर्षक की असंगति, ९. अधिक. १०. आईने की कलई, ११. गिरफ्तार होने के कारणों की व्याख्या, १२. सन्देह, १३. गतिमान, १४. पसीने की वूँद, १५. विस्मित नेत्र, १६. अशिष्ट, १७. फूस की नाड़ी, १८. प्रज्वलित आग की आँच, १९. प्रेम-यात्रा, २०. दुर्बलता, २१. विधाम की इच्छा, २२. शयनगृह, २३. कितराता, २४. प्रेमी की पलक, २५. मरने तक, २६. मृत्यु के तीरे से वचाव।

दिल दिया जान के क्यों उसको वफ़ादार 'असद'
ग़लती की कि जो काफ़िर को मुसलमां समझा



फिर	मुझे	दीदए	-	तर ^१	याद	आया
दिल	जिगर	तशनए ^२		फरियाद		आया
दम	लिया	था	न	क़यामत	ने	हनूज़
फिर	तिरा	वक़ते	-	सफ़र	याद	आया
सादगी	-	हाए	-	तमन्ना		यानी
फिर	वो	नैरंगे	-	नज़र ^३	याद	आया
उज्र	-	वामान्दगी ^४		ऐ	हसरते	- दिल
नाला	करता	था		जिगर	याद	आया
ज़िन्दगी	यों	भी		गुज़र	ही	जाती
क्यों	तिरा	राह		गुज़र	याद	आया
क्या	ही	रिज़्वा ^५		से	लड़ाई	होगी
घर	तिरा	ख़ुल्द ^६	में	गर	याद	आया
आह	वो	जुरअते	-	फरियाद		कहां
दिल	से	तंग	आके	जिगर	याद	आया
फिर	तिरे	कूचे	को	जाता	है	ख़याल
दिले	-	गुम	-	गश्ता ^७	मगर	याद
कोई	वीरानी	सी		वीरानी		है !
दश्त ^८	को	देखके		घर	याद	आया

१. भीगी हुई ओख, २. प्यास ३. दृष्टि का सांदर्भ, ४. थकन का वहाना, ५. स्वर्ग के बाग का माली; खुदा, ६. स्वर्ग, ७. खोया हुआ दिल, ८. जंगल ।

मैंने मजनूँ पे लड़कपन में 'असद'
संग उठाया था कि सर याद आया

✧ ✧ ✧ ✧ ✧

हुई ताखीर,^१ तो कुछ वाइसे ताखीर भी था
आप आते थे, मगर कोई अनांगीर^२ भी था
तुमसे वेजा है मुझे अपनी तवाही का गिला
इसमें कुछ शायवए - खूविए - तकदीर^३ भी था
तू मुझे भूल गया हो तो पता बतला दूँ
कभी फितराक^४ में तेरे कोई नखचीर^५ भी था
कैद में थी तिरे वहशी को वही जुल्फ की याद
हां कुछ इक रंजे गरांवारिए - जंजीर^६ भी था
विजली इक कौन्द गई आंखों के आगे तो क्या
बात करते कि मैं जब तशनए - तकरीर^७ भी था
यूसुफ उसको कहूँ, और कुछ न कहे खैर हुई
गर विगड़ बैठे तो मैं लायके - ताजीर^८ भी था
देखकर गैर को हो क्यों न कलेजा ठण्डा
नाला करता था बले, तालिवे - तासीर^९ भी था
पेशे में ऐव नहीं रखिये न फरहाद को नाम
हम ही आशुफ़ता - सरो^{१०} में वो जवां मीर भी था
हम थे मरने को खड़े, पास न आया न सही
आखिर उस शोख के तरकश में कोई तीर भी था

१. पत्थर २. देर. ३. रोकने वाला, ४. सौभाग्य का अंश, ५. शिकारी का धैला, ६. शिकार, ७. वेदी का बोझ, ८. भाषण सुनने के लिए उल्लुख, ९. दण्ड का भागी, १०. असर चाहने वाला, ११. सौदाई ।

पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक
 आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था
 रखती के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'गालिव'
 कहते हैं अगले ज़माने में कोई 'मीर' भी था

* * * * *

लवे - खुशक, दर - तश्नगी मुर्दगाँ का
 जियारत - कदा हूँ दिल - आजुर्दगाँ का
 हमाँ ना - उमीदीँ हमा - वदगुमानीँ
 मैं दिल हूँ फरेवे - वफ़ा - खुर्दगाँ का

* * * * *

तू दोस्त किसी का भी सितमगर न हुआ था
 औरों पे है वो जुल्म कि मुझ पर न हुआ था
 छोड़ा महे - नखशब की तरह दस्ते - कज़ाँ ने
 खुशीद हनूज़ उसके वरावर न हुआ था
 तौफीक वअन्दाज़ए - हिम्मत है अज़ल से
 आंखों में है वो क़तरा कि गौहर न हुआ था
 जब तक कि न देखा था क़दे - चार का आलम
 मैं मोतकिदे फ़ितनए - महशर न हुआ था

१. मुर्दा, २. दर्शन-स्थान, ३. परेशान, पीड़ित, ४. पूर्ण, ५. निराशा.
 ६. पूर्ण आशंका, ७. प्रेम का फरेव खाये हुए, ८. कृत्रिम चन्द्रमा ९. नृत्य
 का हाथ, १०. सरज, ११. सामर्थ्य. १२. साहस के अनुरूप, १३. सृष्टि का
 आरम्भ, १४. मानने वाला, १५. कयामत का फितना,

मैं सादादिल, आजुर्दगिए - यार^१ से खुश हूं
 यानी सबके - शौक^२ मुकर्रर न हुआ था
 दरियाए - मआसी^३ तुनुक - आवी^४ से हुआ खुशक
 मेरा सरे - दामन^५ भी अभी तर न हुआ था
 जारी थी 'असद' दागे जिगर से मिरे तहसील^६
 आतिशकदा, जागीरे - समन्दर न हुआ था

* * * * *

शव कि वो मजलिस - फ़िरोज़े - ख़लवते - नामूस^७ था
 रिश्तए - हर शम्अ^८, ख़ारे - कस्वते - फ़ानूस^९ था
 मशहदे - आशिक^{१०} से कोसों तक जो उगती है हिना
 किस क़दर यारव ! हलाके हसरते - पावूस^{११} था
 हासिले उल्फ़त न देखा जुज^{१२} शिकस्ते - आरजू^{१३}
 दिल बदिल पैवस्ता^{१४} गोया यक लवे - अफ़सोस था
 क्या कहूं वीमारिए ग़म की फ़रागत^{१५} का वयां !
 जो कि खाया खूनेदिल वेमिन्नते - केमूस^{१६} था

* * * * *

आईना देख अपना सा मुंह लेके रह गए
 साहब को दिल न देने पे कितना ग़ुरूर था

१. यार की नाराजी, २. उन्माद का पाठ, ३. पाप की नदी, ४. पानी की कमी, ५. दामन का सिरा, ६. प्राप्ति, ७. एकान्त-समा की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला, ८. हर एक शमआ का धागा, ९. फ़ानूस के लिवास का कौंय, १०. प्रेमी के शहीद होने का स्थान, ११. पाँव चूमने की हसरत, १२. अति-रिक्त, १३. अभिलाषा की पराजय, १४. चुमा हुआ, १५. विश्राम, आराम, १६. सहज पचने वाला ।

कासिद को अपने हाथ से गर्दन न मारिए ✓
 उसकी ख़ता नहीं है यह मेरा कुमूर था
 अर्जे - नियाजे - इश्क^१ के काविल नहीं रहा
 जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा
 जाता - हूँ दागे हसरते हस्ती लिये हुए
 हूँ शम्ए - कुशता^२ दरखुरे - महफ़िल^३ नहीं रहा
 मरने की ऐ दिल और ही तदवीर कर कि मैं
 शायाने - दस्तो - वाजुए - कातिल^४ नहीं रहा
 वरूए - शश - जहत^५ दरे - आईना^६ वाज़^७ है
 था इम्तियाजे - नाक़िसो - कामिल^८ नहीं रहा
 वां कर दिये हैं शौक ने, वन्दे - नकावे - हुस्न
 ग़ैर - अज़ - निगाह^९ अब कोई हाइल^{१०} नहीं रहा
 गो मैं रहा रहीने - सितम - हाए - रोज़गार^{११}
 लेकिन तेरे ख़याल से ग़ाफ़िल^{१२} नहीं रहा
 दिल से हवाए - किशते - वफ़ा^{१३} मिट गई, कि वां
 हासिल, सिवाए - हसरते - हासिल^{१४} नहीं रहा
 वेदादे - इश्क^{१५} से नहीं डरता मगर 'असद'
 जिस दिल पे नाज़ था मुझे, वो दिल नहीं रहा

१. प्रेम-याचना, २. बुझा हुआ चिराग, ३. महफ़िल के योग्य, ४. हत्यारे द्वारा मरने लायक, ५. छः दिशाएँ, ६. आईने का दरवाज़ा, ७. गुला, ८. सदोष और निर्दोष का अन्तर, ९. खोल, १०. निगाह के अतिरिक्त, ११. बाधक; रुकावट, १२. जीविका की चिन्ता से पीड़ित, १३. उदासीन, १४. वफ़ा की आशा, १५. प्राप्ति की इच्छा के अतिरिक्त, १६. प्रेम की निष्ठुरता।

रश्क कहता है कि उसका गैर से इखलास,^१ हैफ़!^२
 अक़ल कहती है कि वो वेमेहर^३ किसका आश्ना ?^४
 ज़र्ज़ा ज़र्ज़ा साग़रे - मैख़ानए - नैरंग^५ है
 गर्दिशे मजनूं, वचश्मकहाए - लैला^६ आश्ना
 शौक है सामां - तराज़े - नाज़िशे - अरवावे - इज्ज़^७
 ज़र्ज़ा सहरा - दस्तगाहो^८ क़तरा - दरिया - आश्ना^९
 मैं और इक आफ़त का टुकड़ा वह दिले वहशी, कि है
 आफ़ियत^{१०} का दुश्मन और आवारगी का आश्ना
 शिकवा - संजे - रश्के - हम - दीगर^{११} न रहना चाहिये
 मेरा ज़ानू^{१२} मूनिस^{१३} और आईना तेरा आश्ना
 रक्ते - यक शीराज़ए - वहशत^{१४} हैं अज़्ज़ाये - वहार^{१५}
 सब्ज़ा बेगाना, सवा आवारा, गुल ना - आश्ना
 कोहकन नक्काशे - यक तिमसाले^{१६} - शीरीं था, 'असद'
 संग से सर मारकर होवे न पैदा आश्ना

ज़िक्र उस परीवश^{१७} का और फिर वयां अपना
 बन गया रक्तीव आख़िर, था जो राज़दां^{१८} अपना

१. मुहब्बत, २. खेद, ३. निष्ठुर, ४. परिचित, ५. दुनिया की
 मधुशाला का प्याला, ६. लैला की शत्रुता, ७. विनम्र लोगों के गर्व की
 सामग्री जुटाने वाला, ८. रेगिस्तान तक पहुँचने वाला, ९. बूँद नदी से
 परिचित, १०. कुशलता, ११. एक दूसरे की ईर्ष्या की शिकायत करने वाले,
 १२. जीव, १३. हमदर्द, १४. उन्माद के संग्रह का सूत्र, १५. वसंत के तत्त्व,
 १६. चित्र, १७. परी जैसे चेहरे वाला, १८. भेदी मित्र ।

मैं वो क्यों बहुत पीते बड़े - गैर^१ में, यारव
 आज ही हुआ मंज़ूर, उनको इम्तेहां अपना
 मंज़ूर^२ इक बुलन्दी पर, और हम बना सकते
 अर्श^३ से उधर होता, काश कि मकां अपना
 दे वो जिस क़दर ज़िल्लत हम हंसी में टालेंगे
 वारे आश्ना निकला, उनका पास्वा^४ अपना
 ददें दिल लिखूं कब तक, जाऊं उनको दिखलादू^५
 उंगलियां फ़िगार^६ अपनी, ख़ामा^७ ख़ूचका^८ अपना
 घिसते घिसते मिट जाता आपने अवस^९ बदला
 नंगे - सिजदा^{१०} से मेरे, संगे - आस्ता^{११} अपना
 ता करे न गुस्माज़ी,^{१२} कर लिया है दुश्मन को
 दोस्त की शिकायत में हमने हमजुवां अपना
 हम कहां के दाना थे, किस हुनर में यक्ता^{१३} थे
 वे सबव हुआ 'ग़ालिव', दुश्मन आस्मां अपना

* * * * *

सुरमए - मुफ़्ते - नज़र^{१४} हूं, मेरी कीमत यह है
 कि रहे चश्मे - ख़रीदार^{१५} पे अहसां मेरा
 लज्जते - नाला^{१६} मुझे दे, कि मचादा^{१७} ज़ालिम
 तेरे चेहरे से हो जाहिर, गुमे - पिन्हां^{१८} मेरा

१. गैर की महफ़िल, २. दृश्य, ३. आकाश, ४. चौकीदार, ५. जल्मी,
 ६. क़लम, ७. खून में लथपथ, ८. व्यर्थ, ९. भेद जानने वाले की लज्जा,
 १०. दलदल का पत्थर, ११. चुगली, १२. अद्वितीय, १३. निगाह के लिए
 मुफ़्त, १४. खरीददार की आँख, १५. रोने की फुर्तत १६. ऐसा न हो,
 १७. छिपा हुआ दुख ।

* * * * *

गाफ़िल,^१ व वहमे - नाज़^२ खुद - आरा है वरना यां
वे - शानए - सवा^३ नहीं . तुरी गयाह^४ का
वज़मे - क़दह^५ से ऐशे - तमन्ना^६ न रख, कि रंग
सैदे - ज़दाम - जस्ता^७ है, इस दामगाह^८ का
रहमत^९ अगर कुबूल करे, क्या वर्ईद^{१०} है
शर्मिन्दगी से उज्र न करना गुनाह का
मक़तल^{११} को किस निशात^{१२} से जाता हूं मैं, कि है
पुर - गुल^{१३} ख़याले - ज़रूम^{१४} से, दामन निगाह का
जां दर^{१५} हवाए - यक - निगहे - गर्म^{१६} है, 'असद'
परवाना है वकील, तेरे दाद - ख़्वाह^{१७} का

* * * * *

जौर^{१८} से वाज़ आये पर, वान आयें क्या
कहते हैं, हम तुम्हको मुंह दिखलायें क्या
रात दिन, गर्दिश में हैं सात आस्मां
हो रहेगा कुछ न कुछ, धवरायें क्या
लाग^{१९} हो तो उसको हम समझें लगाव
जव न हो कुछ भी, तो धोका खायें क्या
हो लिये क्यों नामावर^{२०} के साथ साथ
यारव ! अपने ख़त को हम पहुंचायें क्या

१. बेखबर, २. अदा के वहम में, ३. हवा की कंधी के बगैर, ४. घास,
५. प्याला, ६. रोप की चाह ७. जाल से छूटा हुआ शिकार, ८. जाल लगाने
का स्थान, ९. खुदा, १०. दूर, ११. कत्ल का स्थान, १२. खुशी, १३. फूलों
से भरा, १४. धाव का ध्यान, १५. इच्छुक, १६. स्निग्ध दृष्टि की एक हवा,
१७. फरियाद करने वाला, १८. जुल्म, १९. आसक्ति, २०. सन्देशवाहक ।

मीजे - खूँ, सर से गुज़र ही क्यों न जाय
 आस्ताने - यार^१ से उठ जायें क्या
 ✓ उम्र भर देखा किये मरने की राह
 भर गये, पर देखिए दिखलायें क्या
 पृथ्वी हैं वह, कि 'गालिव' कौन है
 कोई बतलाओ कि हम बतलायें क्या

* * * * *

लताफ़त^१ बे-कसाफ़त^२ जल्ना पैदा कर नहीं सकती
 चमन जंगार^३ हैं आईनए - वादे - बहारी^४ का
 हरीफ़े - जोशिशे - दरिया^५ नहीं, खुदरिए - साहिल^६
 जहां साकी हो नू, वातिल^७ हैं दावा होशियारी का

* * * * *

इशरते - क़तरा^८ हैं, दरिया में फ़ना^९ हो जाना
 दर्द का हृद से गुज़रना है दवा हो जाना
 तुमसे, किस्मत में मेरी, मूरते - कुफ़ले - अबजद^{१०}
 या लिखा, बात के बनते ही जुदा हो जाना
 दिल हुआ क़शमक़शे - चारए - ज़हमत^{११} में तमाम
 मिट गया घिसने में इस उक़दा^{१२} का वा हो जाना^{१३}

१. खून की तरंग, २. यार की चौखट, ३. चूमनता, ४. रथूलता, ५.
 जंग, ६. वसंत-वायु का आर्दना, ७. नदी का जोश, ८. तट का आत्मानिमान,
 ९. मूठ, व्यर्थ, १०. बूँद का आनन्द, ११. विलय, १२. अबजद ताले के
 सदृश, १३. विपद के उपचार की चेष्टा, १४. पहली, १५. खुलना।

अब जफ़ा से भी हैं महसूस^१ हम, अल्लाह अल्लाह !
 इस क़दर दुश्मने - अरवाचे - वफ़ा^२ हो जाना
 जोफ़^३ से गिरिया^४ मुवदल^५ वदमे - सर्द^६ हुआ
 वावर^७ आया हमें पानी का हवा हो जाना
 दिल से मिटना तेरी अंगुशते - हिनाई^८ का खयाल
 हो गया, गोश्त से नाखून का जुदा हो जाना
 है मुझे, अत्रे - बहारी^९ का बरस कर खुलना
 रोते रोते ग़मे - फुर्कत में, फ़ना हो जाना
 गर नहीं नक़हते - गुल^{१०} को तेरे कूचे की हविस
 क्यों है, गर्दे - रहे - जौलाने - सवा^{११} हो जाना
 ताकि, तुझ पर खुले ऐजाजे - हवाए - सैकल^{१२}
 देख बरसात में सच्च आईने का हो जाना
 बरश्शे है जल्वए - गुल^{१३} जौके - तमाशा, 'ग़ालिव'
 चश्म को चाहिये हर रंग में वा हो जाना

* * * * *

अफ़सोस कि दन्दां का किया रिज़क^{१४} फ़लक^{१५} ने
 जिन लोगों की थी दरखुरे - अक़दे - गुहर^{१६} अंगुशत
 काफ़ी है निशानी तेरे छल्ले का न देना
 ख़ाली मुझे दिखलाके बबक़ते सफ़र अंगुशत

१. वंचित, २. चाहने वालों का शत्रु, ३. निर्वलता, ४. रुदन,
 ५. परिणत, ६. ठंडी सांस, ७. विश्वास, ८. मैहदी वाली अंगुली, ९. बरसात
 का बादल, १०. पुण्य-सौरभ, ११. चमन की वायु के मार्ग की धूल, १२.
 कलाई की वायु का रहस्य, १३. फूलों का दृश्य, १४. खुराक, १५.
 आकाश, १६. मोती पहनने योग्य।

लिखता हूं 'असद' सोज़िशे - दिल^१ से सुखनेगर्म^२
ता रख न सके कोई मिरे हर्फ^३ पे अंगुशत

* * * * *

मुन्द गई, खोलते ही खोलते आंखें 'गालिव'
यार लाये मेरी चाली^४ पे उसे, पर, किस वक्त !

* * * * *

आमदे - खत^५ से हुआ है सर्द जो बाज़ारे दोस्त
दूदे - शम्प - कुश्ता^६ था, शायद खते - रुखसारे - दोस्त^७
ऐ दिले - ना - आक़वत - अन्देश^८ ज़न्ते - शौक^९ कर
कौन ला सकता है तावे - जल्वए - दीदारे - दोस्त^{१०}
खाना^{११} वीरां - साज़िए - हैरत^{१२} तमाशा कीजिये
सूरते - नक्शे - क़दम^{१३} हूं रुफ़्तए^{१४} - रफ़्तारे - दोस्त
इश्क में वेदादे - रश्के - ग़ैर^{१५} ने मारा मुझे
कुश्तए - दुश्मन^{१६} हूं आख़िर, गरचे या वीमारे - दोस्त
चश्मे - मा - रौशन^{१७} कि उस वेदर्द का दिल शाद^{१८} है
दीदए - पुरखूं हमारा, साग़रे - सरशारे - दोस्त^{१९}
ग़ैर, यों करता है मेरी पुरसिश^{२०} उसके हिज़्र^{२१} में
वेतकल्लुफ़ दोस्त हो जैसे कोई गुमख़्वारे - दोस्त

१. दिल की जलन, २. जलते हुए शेर, ३. सिरहाने, ४. खत का आना,
५. शम्प के धुआँ का मारा हुआ, ६. मित्र के चेहरे के बाल, ७. नासमझ
दिल, ८. शौक को संयत कर, ९. प्रेमी के देखने की सामर्थ्य, १०. घर,
११. बरवादी से उत्पन्न आश्चर्य, १२. पद-चिह्न के सदृश, १३. दोस्त की
मंथर गति पर मोहित, १४. प्रतिद्वन्द्वी की ईर्ष्या का दुख, १५. दुश्मन का
मारा हुआ, १६. हम प्रसन्न हैं, १७. खुरा, १८. यार के लिए मरा हुआ
प्याला, १९. पूछ, २०. वियोग ।

ताकि मैं जानू, १क है इसकी रसाई^१ वां तलक
 मुझको देता है, पयामे - वादए - दीदारे - दोस्त^२
 जबकि मैं करता हूँ अपना शिकवए - जोफ़े - दिमाग^३
 सर करे है वो हदीसे - जुल्फ़े - अम्बर - वारे - दोस्त^४
 चुपके चुपके मुझको रोते देख पाता है अगर
 हंस के करता है बयाने - शोखिए - गुफ़्तारे - दोस्त^५
 मेहरवानीहाए दुश्मन की शिकायत कीजिये
 या बयां कीजे, सिपासे - लज्जते - आजारे - दोस्त^६
 यह गुज़ल अपनी मुझे जी से पसन्द आती है आप
 है रदीफ़े शेर में 'ग़ालिव', ज़वस तक़रारे - दोस्त^७

* * * * *

गुलशन में वन्दोवस्त^८ वरंगे - दिगर^९, है आज
 कुमरी का तौक हलकए बेरूने - दर^{१०} है आज
 आता है एक पारए - दिल^{११} हर फुगा^{१२} के साथ
 तारे - नफ़स^{१३}, कमन्दे - शिकारे - असर^{१४}, है आज
 ऐ आफ़ियत^{१५} किनारा कर, ऐ इन्तज़ाम चल
 सैलावे - गिरिया^{१६} दर - पए^{१७} दीवारो - दर, है आज

१. पहुँच, २. मित्र के दर्शन के वचन का संदेश, ३. मानसिक निर्वलता
 की शिकायत, ४. मित्र की सुगन्धि बिखेरने वाली जुल्फ़ की बात, ५. मित्र
 द्वारा मिलने वाले कष्ट के आनन्द की प्रशंसा, ६. मित्र शब्द का दोहराना,
 ७. व्यवस्था, ८. नए ढंग से, ९. दरवाज़े से बाहर, १०. दिल का टुकड़ा,
 ११. आह, १२. साँस का सूत्र, १३. प्रभाव के शिकार का फंदा, १४. कुश-
 लता, १५. रुदन की वाद, १६. निकट ।

* * * * *

लो हम मरीज़े - इश्क़ के तीमारदार हैं
अच्छा अगर न हो तो, मसीहा का क्या इलाज ?

* * * * *

हुस्न गुम्जे^१ की कशाकश^२ से छुटा, मेरे वाद
वारे, आराम से हैं अहले - जफ़ा,^३ मेरे वाद
मंसवे - शेफ़ितगी^४ के कोई काविल न रहा
हुई माजूलिए - अन्दाज़ो - अदा,^५ मेरे वाद
शम्अ बुकती है तो उसमें से घुआं उटता है
शोलए - इश्क़ सियह - पोश^६ हुआ, मेरे वाद
खूं है दिल खाक में, अहंवाले - बुता^७ पर यानी
इनके नाखून हुए मोहताजे - हिना^८ मेरे वाद
दरखुरे - अर्ज^९ नहीं, जौहरे - वेदाद^{१०} को, जा
निगहे - नाज़^{११} है मुरमे से खफ़ा मेरे वाद
है जुनूं, अहले - जुनूं^{१२} के लिये आगोशे^{१३} - विदा
चाक होता है गरेवां से जुदा, मेरे वाद
कौन होता है हरीफ़े - मए - मर्द - अफ़गने - इश्क़^{१४}
है मुकर्रर^{१५} लवे - साक़ी पे सला,^{१६} मेरे वाद

१. नाज़ और अदा, २. प्रयास, ३. नेहनत करने वाले, ४. आशक़ी का दर्जा, ५. नाच-नख़रे जाते रहे, ६. काले वस्त्र पहने हुए, ७. रूप वालों का वृत्तान्त, ८. मेहंदी लगानी पड़ती है (क्योंकि खून नहीं मिलता), ९. प्रार्थना के योग्य, १०. निष्फुर तत्त्व, ११. सुन्दर और खूब, १२. उन्मत्त व्यक्ति, १३. गोद, १४. मनुष्यवातक प्रेम की शराब पीने का साहस कौन करता है, १५. दुबारा, १६. आवाज ।

ग़म से मरता हूँ, 1क इतना नहीं दुनिया में कोई
 कि करे ताज़ियते^१ - मेहरो - वफ़ा, मेरे वाद
 आये है बेकसिए - इश्क^२ पे रोना 'ग़ालिब'
 किसके घर जायगा सैलावे - बला,^३ मेरे वाद

✱

✱

✱

✱

बला से हूँ, जो ये पेशे - नज़र^४ दरोदीवार
 निगाहे शौक को है, बालो - पर^५ दरोदीवार
 वफ़ारे - अश्क^६ ने काशाने^७ का किया यह रंग
 कि हो गये मेरो दीवारोदर, दरोदीवार
 नहीं है साया कि सुनकर नवेद - मक़दमे - यार^८
 गये हैं चन्द क़दम पेशतर, दरोदीवार
 हुई है किस क़दर अरज़ानिए - मए - जल्बा^९
 कि मस्त है तेरे कूचे में हर दरो दीवार
 जो है तुम्हे सरे - सौदाए - इन्तेज़ार,^{१०} तो आ
 कि हूँ दुकाने - मताए - नज़र^{११} दरो दीवार
 हुजूमे - गिरिया का सामान कब किया मैंने ?
 कि गिर पड़े न मेरे पांव पर दरो दीवार
 वह आ रहा मिरे हमसाए में, तो साये से
 हुए फ़िदा दरोदीवार पर, दरोदीवार
 नज़र में खटके है, बिन तेरे घर की आवादी
 हमेशा रोते हैं हम, देखकर दरोदीवार

१. शोक प्रकट करना, २. प्रेम की विवशता, ३. विपत्ति की बाढ़,
 ४. दृष्टि के सामने, ५. बाल और पंख, ६. आँसुओं की अधिकता, ७. घर,
 ८. मित्र के आने का समाचार, ९. दर्शन रूपी शराब की अधिकता,
 १०. प्रतीक्षा के उन्माद का सामर्थ्य, ११. दृष्टिरूपी धन की दुकान ।

न पूछ वेखुदि- ए - ऐशे - मक़दमे - सैलाव^१
 कि नाचते हैं पड़े, सरवसर^२ दरोदीवार
 न कह किसी से, कि 'ग़ालिव' नहीं ज़माने में
 हरीफ़े - राज़े - मुहच्चत, मगर दरोदीवार

✧

✧

✧

✧

घर जब बना लिया तेरे दर पर, कहे वग़ैर
 जानेगा अब भी तू न मेरा घर, कहे वग़ैर
 कहते हैं, जब रही न मुझे ताक़ते - सुखन^३
 जानू किसी के दिल की मैं क्योंकर कहे वग़ैर
 काम उससे आ पड़ा है, कि जिसका जहान में
 लेवे न कोई नाम "सितमगर" कहे वग़ैर
 जी में - ही कुछ नहीं है हमारे, वगरना हम
 सर जाये या रहे, न रहें पर कहे वग़ैर
 छोड़ूंगा मैं न उस बुते - काफ़िर का पूजना
 छोड़े न ख़ल्क^४ गो मुझे काफ़िर कहे वग़ैर
 मक़सद है नाज़ो ग़म्ज़ा, बले गुफ़्तगू में, काम
 चलता नहीं है, दर्शना-ओ - खंजर^५ कहे वग़ैर
 हरचन्द, हो मुशाहिदए - हक़^६ की गुफ़्तगू
 बनती नहीं है, वादा - ओ - सागर^७ कहे वग़ैर
 बहरा हूं मैं, तो चाहिये दूना हो इल्तेफ़ात^८
 सुनता नहीं हूं बात, मुकर्रर^९ कहे वग़ैर

१. वाद के स्वागत के आनन्द की मस्ती, २. सर्वथा, ३. बोलने की शक्ति, ४. दुनिया, ५. चाकू और खंजर ६. भगवत-दर्शन, ७. सुराही और प्याला, ८. कृपा, ९. दोबारा ।

‘गालिव’ न कर हुजूर में तू बार बार अर्ज
जाहिर है तेरा हाल सब उन पर, कहे वगैर

* * * * *

क्यों जल गया न तावे - रुखे - यार^१ देखकर
जलता हूं, अपनी ताकते - दीदार देखकर
आतिश - परस्त कहते हैं अहले - जहां^२ मुझे
सरगमें - नालाहाए - शरर - वार^३ देखकर
क्या आवरूप - इश्क, जहां आम हो जफ़ा
रुकता हूं तुमको वे - सबव - आज़ार देखकर
आता है मेरे क़त्ल को पुरजोशे रश्क से
मरता हूं उसके हाथ में तलवार देखकर
सावित हुआ है, गर्दने - मीना^४ पे खूने - खल्क^५
लरज़े है मोजे में तेरी रफ़्तार देख कर
चा - हसरता,^६ कि यार ने खींचा सितम से हाथ
हमको हरीसे - लज़्जते - आज़ार^७ देख कर
विक जाते हैं हम आप, मताए - सुखन^८ के साथ
लेकिन अयारे - तवए - ख़रीदार^९ देखकर
जुन्नार^{१०} बांध, सुवहे - सदाना^{११} तोड़ डाल
रहरो^{१२} चले हैं राह को, हमवार देखकर
इन आवलों से पांव के, घवरा गया था मैं
जी खुश हुआ है राह को पुरखार^{१३} देखकर

१. मित्र के चेहरे का चमक, २. दुनिया वाले, ३. सुराही का गर्दन,
४. दुनिया की हत्या, ५. हाथ हसरत, ६. कष्ट के स्वाद का लोभी, ७.
अच्छो बात, ८. चालाक ख़रीदार की तर्बायत, ९. जनेऊ, १०. सो मनकों
वालो माला, ११. राही, १२. कोंठों से मरी ।

क्या बदगुमां है मुझसे, कि आईने में मेरे
तूती का अक्स^१ समझे है, ज़िगार देखकर
गिरनी थी हम पे वर्कें - तजल्ली,^२ न तूर^३ पर
देते हैं वादा,^४ जफें - क़दह - ख़्वार^५ देख कर
सर फोड़ना वो, 'ग़ालिवे' शोरीदा - हाल^६ का
याद आ गया मुझे, तेरी दीवार देखकर

* * * * *

लरज़ता है मेरा दिल, ज़हमते मेहरे - दरख़शा^७ पर
मैं हूं वो क़तरए - शवनम, कि हो ख़ारे - बयावां^८ पर
फ़ना तालीमे - दसें - बेख़ुदी हूं उस ज़माने से
कि मजनूं लाम अलिफ़ लिखता था दीवारे - दचिस्तां^९ पर
फ़रागत किस क़दर रहती मुझे, तशवीशे - मरहम^{१०} से
बहम^{११} गर सुलह करते पाराहाए - दिल^{१२} नमकदां पर
मुझे अब देखकर अवे - शफ़क़ - आलूदा,^{१३} याद आया
कि फ़र्क़त में तेरी, आतिश^{१४} बरसती थी गुलिस्तां पर
बजुज़ - परवाज़े^{१५} शौक़े नाज़, क्या बाक़ी रहा होगा
क़यामत इक़ हवाए - तुन्द^{१६} है ख़ाक़े शहीदां पर
न लड़ नासेह से, 'ग़ालिव' क्या हुआ, गर उसने शिद्दत की
हमारा भी तो आख़िर, ज़ोर चलता है गरेबां पर

१. प्रतिबिम्ब, २. काँधती हुई बजली, ३. पहाड़ विशेष जिस पर खुदा ने
मूसा को दर्शन दिये, ४. शराब ५. पीने वाले का सामग्र्य, ६. परीक्षण हाल,
७. चमकता हुआ सूरज, ८. जंगल का काँटा, ९. मदरसा, १०. मरहम
की चिन्ता, ११. परस्पर, १२. दिल के टुकड़े, १३. लालिमारांजित बादल,
१४. आग, १५. उड़ान के अतिरिक्त, १६. तीव्र वायु,

है वस कि, हर इक उनके इशारे में निशां और करते हैं मुहब्बत, तो गुज़रता है गुमां और यारव, वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात दे और दिल उनको जो न दे मुझको जवां और अवरु^१ से है क्या, उस निगहे - नाज़^२ को, पैवन्द है तीर मुक़र्रर, मगर उसकी है कमां और तुम शहर में हो, तो हमें क्या ग़म, जब उठेंगे ले आयेंगे बाज़ार से, जाकर दिलो - जां और हर चन्द सुबुक - दस्त^३ हुए, चुत शिकनी में हम हैं, तो अभी राह में है संगे - गिरां और है खूने ज़िगर जोश में, दिल खोल के रोता होते जो कई दीद ए - खूनावा - फ़िशां और मरता हूं इस आवाज़ पे, हर चन्द सर उड़ जाय जल्लाद को, लेकिन, वो कहे जाएं कि “हां और” लोगों को है ख़ुशीदे - जहां - ताव^४ का धोका हर रोज़ दिखाता हूं मैं इक दागे - निहां और लेता, न अगर दिल तुम्हें देता, कोई दम चैन करता, जो न मरता कोई दिन, आहो फुगां और पाते नहीं जब राह, तो चढ़ जाते हैं नाले रुकती है मेरी तन्त्र^५, तो होती है रवां और

१. भवें, २. प्रेमी की निगाह, ३. चतुर, ४. भारी पत्थर, ५. खून टपकाने वाली आँख, ६. दुनिया में चमकने वाला सूरज, ७. छिपा हुआ दाग,
८. तबीयत ।

हैं और भी दुनियां में सुखनवर बहुत अच्छे
कहते हैं, कि 'गालिव' का है अन्दाजे - क्या और

* * * * *

लाजिम था कि देखो मेरा रस्ता कोई दिन और
तन्हा गये क्यों ? अब रहो तन्हा कोई दिन और
मिट जाएगा सर, गर तेरा पत्थर न घिसेगा
हूं दर पे तेरे नासिया - फर्सा^१ कोई दिन और
आये हो कल और आज ही कहते हो कि जाऊं
माना, कि हमेशा नहीं अच्छा, कोई दिन और
जाते हुए कहते हों, क्यामत को मिलेंगे
क्या खूब ! क्यामत का है गोया कोई दिन और
हां ऐ फलके-पीर, जवां था अभी 'आरिफ़'
क्या तेरा विगड़ता, जो न मरता कोई दिन और
तुम माहे - शवे - चार - दहुम^२ थे, मेरे घर के
फिर क्यों न रहा घर का वो नक्शा कोई दिन और
तुम कौन से ऐसे थे खरे, दादो सितद^३ के
करता मलेकुल - मौत,^४ तकाज़ा कोई दिन और
मुझसे तुम्हें नफ़रत सही, नय्यर से लड़ाई
बच्चों का भी देखा न तमाशा कोई दिन और
गुज़री न बहरहाल यह मुद्दत खुशो-नाखुश
करना था, जवां - मर्ग गुज़ारा कोई दिन और

१. माथा घिसना, २. चौदहवीं की रात का चांद, ३. लेन-देन,
४. यमराज ।

नादां हो, जो कहते हो, कि क्यों जीते हो 'ग़ालिव'
किस्मत में है, मरने की तमन्ना कोई दिन और

* * * * *

क्योंकर रखूं उस वुत से जान अज़ीज़
क्या नहीं है मुझे ईमान अज़ीज़
दिल से निकला, पै न निकला दिल से
हैं तेरे तीर का पैकान^१ अज़ीज़
ताव लाए ही वनेगी, 'ग़ालिव'
वाक़या सरलत^२ है और जान अज़ीज़

* * * * *

न गुले - नग़मा हूं, न पर्दे - साज़
मैं हूं अपनी शिकस्त की आवाज़
तू, और आराइशे - खुमे - काकुल^३
मैं, और अन्देशा - हाए - दूरो - दराज़^४
लाफ़े - तमकी^५ फ़रेवे - सादा - दिली^६
हम हैं, और राज़हाए सीना गुदाज़
हूं गिरफ़्तारे उल्फ़ते - सैयाद^७
वरना वाक़ी है ताक़ते परवाज़
वो भी दिन हो, कि उस सितमगर से
नाज़ खेंचूं वजाय हसरते - नाज़

१. तीर, २. जुल्फ़, ३. दूर और निकट की चिंता, ४. अहंकार की बातें, ५. सरलता का धोखा, ६. शिकारी से प्रेम ।

नहीं दिल में मेरे, वो कतरए - खूं
 जिससे मिज़गां' हुई न हो गुलवाज़'^१
 मुझको पूछा तो कुछ ग़ज़व न हुआ
 मैं ग़रीब और तू ग़रीब नवाज़
 'असदुल्लाह खां' तमाम हुआ
 ऐ दरेगा,^२ वो रिन्दे - शाहिद - वाज़'^३

* * * *

मुशदा^४ ऐ जौक़े - असीरी,^५ कि नज़र आता है
 दाम ख़ाली, कफ़से - मुर्गे - गिरफ़्तार^६ के पास
 जिगरे - तश्नए - आज़ार^७ तसल्ली न हुआ
 जूए खूं हमने वहांई बुने - हर ख़ार^८ के पास
 मुन्द गई खोलते ही खोलते आंखें हय, हय
 खूब वक्त आये तुम इस आशिक़े-वीमार के पास
 मैं भी रुक रुक के न मरता, जो जवां के बदले
 दर्शा^९ इक तेज़ सा होता, मेरे ग़मख़वार के पास
 दहने - शेर^{१०} मैं जा बैठिए लेकिन ऐ दिल
 न खड़े हूजिये खूंवाने - दिल - आज़ार^{११} के पास
 देखकर तुझको, चमन वसकि नमू^{१२} करता है
 खुद वखुद पहुंचे है गुल गोशए दस्तार^{१३} के पास

१. पलकें, २. फूल बरसाना, ३. हाथ, ४. सौंदर्य-प्रेमी शराबी, ५. शुभ
 समाचार, ६. कैदी बनने का शौक, ७. पकड़े हुए पक्षी का पिंजरा, ८. कष्ट
 का प्यासा जिगर, ९. हर एक कोटे की नोक, १०. चाकू, खंजर, ११. शेर
 का मुँह, १२. दिल को पीड़ित करने वाली सुन्दरी प्रेमिकाएँ, १३. खिलता,
 १४. पगड़ी का कोना ।

मर गया फोड़ के सर, 'गालिवे' वहशी, हय, हय
 बैठना उसका वो आकर तेरी दीवार के पास

* * * * *

न लेवे गर, ख़से - जौहर^१ तरावत^२ सच्चए - ख़त से
 लगा दे ख़ानए - आईना^३ में रूप - निगार^४ आतिश
 फ़रोगे - हुस्न^५ से होती है हल्ले - मुश्किले - आशिक
 न निकले शमअ के पा से, निकाले गर न ख़ार^६ आतिश

* * * * *

रुखे - निगार^७ से, है सोजे - जाविदानिए - शमअ^८
 हुई है आतिशे - गुल,^९ आवे - ज़िन्दगानिए - शमअ^{१०}
 जुवाने - अहले - जुवा^{११} में है, मर्गे - ख़ामोशी^{१२}
 यह बात वज़म में, रौशन हुई जुवानिए - शमअ
 करे है सर्फ़^{१३} व ईमाए - शोला^{१४} किस्सा तमाम^{१५}
 वतर्जे - अहले - फ़ना,^{१६} है फ़साना - ख़वानिए - शमअ^{१७}
 ग़म उसको हसरते परवाने का है, ऐ शोला
 तेरे लरज़ने से ज़ाहिर है नातवानिए - शमअ^{१८}

१. घास की जड़, २. तरी, ३. वह कमरा जिसमें बहुत से आइने लगे हों
 और एक का प्रतिबिम्ब दूसरे में पड़ता ४. सुंदर प्रेमिका का चेहरा,
 ५. रूप की चमक, ६. कौटा, ७. प्रेमी का चेहरा, ८. शमअ की स्थिर जलन,
 ९. फूल की आग, १०. शमअ के लिए अमृत, ११. भाषा विशेषणों की
 भाषा, १२. मूक मृत्यु, १३. खर्च, १४. आग के संकेत से, १५. ख़तम,
 १६. मिटने वालों की शैली, १७. शमअ का कहानी कहना, १८. शमअ की
 दुर्बलता,

निशाते - दागे - गुम - इश्क^१ की बहार, न पूछ
 शिगुफ्तगी^२ है शहीदे - गुले - खिजानिए - शम्भ्र
 जले है देख के वालीने - यार^३ पर मुझको
 न क्यों हो दिल पे मेरे दागे - बदगुमानिए शम्भ्र

* * * *

बीमे - रक़ीब^४ से नहीं करते विदाए - होश
 मजबूर यां तलक हुए, ऐ इख्तियार हैफ़ !
 जलता है दिल, कि क्यों न हम एक बार जल गए
 ऐ नातमामिए - नफ़से - शोला - बार,^५ हैफ़ !

* * * *

ज़ख़्म पर छिड़कें कहां, तिफ़लाने^६ - बेपरवा, नमक
 क्या मज़ा होता, अगर पत्थर में भी होता, नमक
 गढ़ें - राहे - यार^७ है सामाने - नाज़े^८ - ज़ख़्मे दिल
 बरना होता है जहां में किस क़दर पेदा, नमक
 मुझको अरज़ानी^९ रहे, तुझको मुबारिक हो जियो
 नालए - बुलबुल का दर्द, और ख़न्दए-गुल^{१०} का नमक
 शोरे-जोलां^{११} या किनारे-बहर^{१२} पर किसका, कि आज
 गढ़ें - साहिल^{१३} है, बज़ख़्मे - मौजए - दरिया^{१४}, नमक

१. इश्क के ग़म के दाग का उल्लास, २. खिज़ाना, ३. बार के सिरहाने,
 ४. रक़ीब का मय, ५. आग बरसा रही सौंस ६. बच्चे, ७. प्रेमी की राह
 की धूल ८. हाव-भाव के टपकरण, ९. बहुजता, १०. फूल का मुस्कान,
 ११. अधिक शोर, १२. समुद्र तट, १३. किनारे की धूल, १४. नदी को लहर
 के घाव से,

दाद देता है मेरे ज़ख्मे - जिगर की वाह, वाह
याद करता है मुझे, देखे है वो जिस जा, नमक
छोड़कर, जाना तने - मजबूते - आशिक^१ हैफ है
दिल तलब करता है ज़ख्म, और मांगे हैं आज्ञा^२, नमक
गैर की मिन्नत न खींचूंगा, पए - तौकीरे - दर्द^३
ज़ख्म मिस्ले - खन्दए - दतिल^४ है, सर ता पा नमक
याद हैं वो दिन तुम्हे 'गालिव', कि वज्दे-जौक^५ में
ज़ख्म से गिरता, तो मैं पलकों से चुनता था नमक

* * * * *

आह को चाहिए इक उम्र, असर होने तक
कौन जीता है तेरी जुल्फ के सर होने तक
दामे - हर - मौज^६ में है, हल्कए - सदकामे - निहंग^७
देखें क्या गुजरे है कतरे पे गुहर होने तक
आशिकी सब - तलब और तमन्ना वेताव
दिल का क्या रंग करूं, खूने - जिगर होने तक
हमने माना, कि तगाफुल^८ न करोगे लेकिन
खाक हो जायेंगे हम, तुमको खबर होने तक
परतवे - खुर^९ से है शवनम को, फना की तालीम
मैं भी हूं, एक इनायत की नज़र होने तक

१. घायल प्रेमी का शरीर, २. आंग, ३. पीड़ा की प्रतिष्ठा के लिए,
४. हत्यारे की मुस्कान के सदृश, ५. उन्माद से भ्रमते हुए, ६. प्रत्येक तरंग
का जाल, ७. सौ जवाइँ वाले मगरमच्छ का घेरा, ८. उपेक्षा, ९. सरज का
प्रतिविम्ब ।

यक नज़र वेश' नहीं, फुर्सते - हस्ती' गाफ़िल
 गर्मिए - बझ है, इक रक्से - शरर' होने तक
 गुमे हस्ती का, 'असद' किससे हो जुज़' मर्ग' इलाज
 शम्भ्र हर रंग में जलती है सहर' होने तक

✧ ✧ ✧ ✧ ✧

गर तुझको है यकीने - इजावत' दुआ न मांग
 यानी वगैरे - यक - दिले - वे - मुद्आ' न मांग
 आता है दागे - हसरते - दिल' का शुमार याद
 मुझसे मेरे गुनह का हिसाब ऐ खुदा न मांग

✧ ✧ ✧ ✧ ✧

है किस क़दर हलाके - फ़रेवे - बफ़ाए - गुल"
 बुलबुल के कारोबार पे हैं ख़न्दाहाए - गुल"
 आज़ादिए - नसीम"
 मुबारक, कि हर तरफ़
 टूटे पड़े हैं हल्क़ाए - दामे - हवाए - गुल"
 जो था, सो मौजे रंग के धोके में मर गया
 ऐ बाए नालए - लवे - ख़ूनी"
 नवाए - गुल"
 खुशहाल उस हरीफ़े - सियह - मस्त"
 का, कि जो रखता हो मिस्ले - सायए - गुल," सर बपाए - गुल"

१. ज्यादा, २. जीने की मोहलत, ३. चिंगारी का नृत्य, ४. सिखा,
 ५. मौत, ६. सुवह, ७. क़यामत के दिन चना किये जाने का विश्वास, ८.
 उद्देश्य से ज़ाली दिल, ९. दिल की हसरतों के दाग, १०. फूलों के प्रेम
 के छल का मारा हुआ ११. फूलों का हंसना १२. हवा, १३. फूलों की
 हवा के नाल का धेरा, १४. खूनी होठ का आह, १५. फूलों की आवाज़, १६.
 उन्मत्त प्रेमी, १७. फूल की परछाई के सदृश, १८. फूल के पांव पर।

ईजाद^१ करती है उसे तेरे लिये, वहार
 मेरा रक्तीव है, नफ़से - इत्र - साए - गुल
 शमिन्द^२ रखते हैं मुझे वादे - वहार^३ से
 मीनाए - वेशराचो^४ - दिले - वेहवाए - गुल^५
 सतवत^६ से तेरे जल्वए - हुस्ने - गयूर^७ की
 खूं है मेरी निगाह में रंगे - अदाए - गुल
 तेरे ही जल्वे का है यह धोका, कि आज तक
 बेइस्तिथार दौड़े है गुल दर - कफ़ाए - गुल
 'गालिव' मुझे है उससे हम - आगोशी आरजू^८
 जिसका खयाल है गुले - जैवे - क़वाए - गुल
 ग़म नहीं होता है आज़ादों को, वेश अज़ यक नफ़स
 बर्क^९ से करते हैं रौशन, शमए - मातम - ख़ाना^{१०} हम
 महफ़िलें बरहम^{११} करे है, गंजफ़ा - बाज़े - खयाल^{१२}
 हैं बरक - गरदानिए - नैरंगे - यक - बुतख़ाना^{१३} हम
 चावजूदे यक जहां, हंगामा पैदाई^{१४} नहीं
 हैं चिराग़ाने - शविस्ताने - दिले - परवाना^{१५} हम
 जोफ़^{१६} से है, ने क़नाअत^{१७} से, ये तर्कें - जुस्तजू^{१८}
 हैं बवाले - तकिया - गाहे - हिम्मते - मर्दाना^{१९} हम
 दायमुल हक्स इसमें हैं लाखों तमन्नाएं, 'असद'
 जानते हैं सीनए - पुर - खूं^{२०} को जिन्दांख़ाना^{२१} हम

१. आविष्कार, २. वसंत की हवा, ३. शराब से खाज़ी सुराही, ४. फूल
 की हवा से रिक्त दिल, ५. शान; रोव, ६. गौरव युक्त सौन्दर्य का दर्शन,
 ७. फूल के पहनावे की जेब का फूल, ८. विजली, ९. शोक-गृह की शमआ,
 १०. अस्तव्यस्त, ११. ताश खेलने का खयाल, १२. उत्पत्ति, १३. परवाने के
 हृदय-प्रदेश का प्रकाश १४. कमजोरी, १५. संतोष, १६. खोज का त्याग,
 १७. मर्दों का हौसला, १८. आजीवन बन्दी. १९. खून से भरा सीना,
 २०. कैदख़ाना, २१. परदेस ।

* * * * *

मुझको दयारे - गैर^१ में मारा, वतन से दूर
 रख ली मेरे खुदा ने, मेरी बेकसी की शर्म
 वो हल्का - हाए - जुल्फ^२ कमी^३ में हैं ऐ खुदा
 रख लीजो मेरे दावए - वारस्तगी^४ की शर्म

* * * * *

लूँ वाम^५ बरखते - खुफ़ता^६ से, यक स्वावे - खुश,^७ बले
 'ग़ालिव' यह खौफ़ है, कि कहां से अदा करूँ

* * * * *

वो फिराक^८ और वो विसाल,^९ कहां
 वो शबो^{१०} रोज़ो, माहो साल कहां
 फुर्सते - कारोवारे - शौक^{११} किसे
 जौके - नज़ारए - जमाल^{१२} कहां
 दिल तो दिल वो दिमाग़ भी न रहा
 शोरे - सौदाए - ख़त्तो - ख़ाल कहां
 थी वो इक शख्स के तसव्वुर^{१३} से
 अब वो रानाइए - ख़याल^{१४} कहां
 ऐसा आसां नहीं लहू रोना
 दिल में ताक़त जिगर में हाल^{१५} कहां
 हमसे छूटा कुमार - ख़ानए - इश्क़
 वां जो जावें, गिरह में माल कहां

१. पराया घर, २. जुल्फ़ के घेरे, ३. घात, ४. किसी पर मोहित होना,
 ५. उधार, ६. सुप्त भाग्य, ७. मधुर स्वप्न, ८. विदोष, ९. मिलन, १०. रात,
 ११. सौन्दर्य, १२. कल्पना, १३. विचार-सौन्दर्य, १४. मस्ती ।

फ़िक्रे - दुनिया में सर खपाता हूँ
 मैं कहां और ये बवाल कहां
 मुज़महिल^१ हो गये क़वा,^२ 'ग़ालिव'
 वो अनासिर^३ मैं एतदाल = कहां

* * * * *

की वफ़ा हमसे तो ग़ैर उसको ज़फ़ा कहते हैं
 होती आई है, कि अच्छों को बुरा कहते हैं
 आज हम अपनी परीशानिए - खातिर^४ उनसे
 कहने जाते तो हैं, पर देखिए क्या कहते हैं
 अगले वक्तों के हैं ये लोग इन्हें कुछ न कहो
 जो मै-ओ - नग्मा^५ को अन्दोह - रुवा^६ कहते हैं
 दिल में आ जाये है, होती है जो फुर्सत ग़श से
 और फिर कौनसे नाले को रसा^७ कहते हैं
 है परे सरहदे-इदराक^८ से, अपना मस्जूद^९
 क़िवले^{१०} को अहले-नज़र क़िवला-नुमा कहते हैं
 पाए-अफ़गार^{११} पे, जब से तुम्हे रहम आया है
 ख़ारे - रह^{१२} को तेरे हम, मेहर^{१३} गया कहते हैं
 इक शरर दिल में है, उससे कोई घवरायेगा क्या
 आग मतलूब है हमको, जो हवा कहते हैं
 देखिए लाती है उस शोख की नख़वत,^{१४} क्या रंग
 उसकी हर बात पे हम नामे - खुदा, कहते हैं

१. शिथिल, २. अंग, ३. तत्त्व, ४. परीशान हालत, ५. शराब और संगीत, ६. दुखदर्द हरने वाला, ७. प्रभावित करने वाला, ८. समझ की सीमा, ९. सजदे का स्थान, १०. असल, ११. पाँव का ज़ख़म, १२. मार्ग का कौटा, १३. सूरज, १४. घमण्ड ।

वहशत - ओ - शेफ़ता अब मरसिया कहवें शायद
 “मर गया ग़ालिबे आशुफ़ता - नवा,” कहते हैं

* * * * *

आवरू क्या खाक उस गुल की, कि गुलशन में नहीं
 है गरेवां नंगे - पैराहन^१ जो दामन में नहीं
 जोफ़ से, ऐ गिरिया, कुछ बाकी मिरे तन में नहीं
 रंग होकर उड़ गया, जो खूं कि दामन में नहीं
 हो गये हैं जम्अ अज्ज़ाए - निगाहे - आफ़ताव^२
 ज़रें, उसके घर की दीवारों के रौज़न^३ में नहीं
 क्या कहूं तारीकिए - जिन्दाने - ग़म,^४ अन्धेर है
 पम्वा^५ नूरे - सुबह से कम, जिसके रौज़न में नहीं
 रौनके - हस्ती^६ है, इश्क़े - ख़ाना - वीरां साज़ से
 अंजुमन वे शम्अ है, गर वर्क़ ख़िरमन^७ में नहीं
 ज़ल्म सिलवाने से मुफ़ पर चारा - जोई^८ का है तान^९
 ग़ैर समझा है कि लज्जत ज़ल्मे - सोज़न^{१०} में नहीं
 वस कि है हम इक वहारे नाज़ के मारे हुए
 जल्बए - गुल के सिवा, गर्द अपने मदफ़न^{११} में नहीं
 क़तरा क़तरा इक हयूला^{१२} है, नये नासूर का
 खूं भी ज़ौके - दर्द से फ़ारिग़^{१३} मिरे तन में नहीं

१. परीशान आवाज़ २. पहनावे के लिए लज्जास्पद, ३. सूरज की दृष्टि का तत्त्व, ४. सुराख, ५. विषाद के वन्दीगृह का अन्धकार, ६. रुई का फाहा, ७. सुबह का प्रकाश, ८. जीवन की शोभा, ४३. खलिहान, ९. उपचार, १०. ताना; उलाहना, ११. सुई का घाव, १२. दफन करने का स्थान, १३. भौतिक तत्त्व, १४. मुक्त ।

ले गई हाकी की नखवत,^१ कलजुम - आशामी^२ मेरी
 मौजे - मैं की आज रग मीना की गर्दन में नहीं
 हो फिशारे - जोफ^३ में क्या नातवानी^४ की नमूद^५?
 कद के मुकने की भी गुंजाइश मेरे तन में नहीं
 थी वतन में शान क्या 'गालिव,'^६ कि हो गुर्वत^७ में कद्र
 वेतकल्लुफ^८ हूं वो मुश्ते - खस,^९ कि गुलखन^{१०} में नहीं

* * * * *

ओहदे से मदहे^१ - नाज के, बाहर न आ सका
 गर इक अदा हो, तो उसे अपनी कजा^२ कहुं
 हल्के हैं चश्म - हाए - कुशादा^३ बसूए - दिल^४
 हर तारे - जल्फ को निगाहे - सुरमा सा कहुं
 मैं और सद हजार नवाए - जिगर खराश^५
 तू, और एक वो न शुनीदन,^६ कि क्या कहुं
 जालिम मेरे गुमां से मुझे मुनफइल^७ न चाह
 हय, हय, खुदा न करदः, तुझे वेवफा कह

* * * * *

मेहरवां हो के बुलालो मुझे, चाहो जिस वक़्त
 मैं गया वक़्त नहीं हूं कि फिर आ भी न सकं

१. घमण्ड, २. नदी पी जाना, ४३. दुर्वलता की विकलता; कमजोरी,
 ५. विकास, ६. परदेस, ७. मुट्ठी भर घास, ८. घास उगने का स्थान,
 ९. प्रशंसा, १०. मृत्यु, ११. विस्फारित आँखें, १२. दिल की ओर,
 १३. जिगर चीरने वाली आवाज़, १४. सुनना, १५. पश्चात्ताप करने वाला।

जोफ़^१ में तानए - अगुयार^२ का शिकवा क्या है
 वात कुछ सर तो नहीं है, कि उठा भी न सकूँ
 ज़हर मिलता ही नहीं मुझको, सितमगर वरना
 क्या क़सम है तेरे मिलने की, कि खा भी न सकें

✧ ✧ ✧ ✧ ✧

हम से खुल जाओ वक्त्रते - मैं - परस्ती,^३ एक दिन
 वरना हम छेड़ेंगे, रखकर उज्र - मस्ती एक दिन
 गर्ए - ओजे - विनाए - आलमे इस्का^४ न हो
 इस बुलन्दी के नसीबों में है पस्ती एक दिन
 क़र्ज की पीते थे मैं, लेकिन समझते थे कि हाँ
 रंग लायेगी हमारी फ़ाका - मस्ती, एक दिन
 नःमाहाए गुम को भी ऐ दिल ग़नीमत जानिए
 बेसदा^५ हो जायगा, यह साजे - हस्ती^६ एक दिन
 धौल घप्पा उस सरापा - नाज़ का शेवा नहीं
 हम ही कर बैठे थे, 'ग़ालिव' पेश - दस्ती^७ एक दिन

✧ ✧ ✧ ✧ ✧

हम पर जफ़ा से, तर्क - वफ़ा का गुमों नहीं
 इक छेड़ है, बगरना मुराद इम्तिहां नहीं
 किस मुंह से शुक्र कीजिये, इस लुत्फ़े खास का
 पुरसिश^८ है और पाए - सुखन^९ दरमियां नहीं

१. दुर्बलता, २. दूसरों का व्यंग्य-वाण ३. शराब पीते समय, ४. दुनिया
 को अपने आधार के शिखर का गर्व, ५. मौन, ६. शरीर, ७. पहल, छेड़-
 खानी, ८. पूछना, ९. बात का माध्यम ।

हमको सितम अजीज़, सितमगर को हम अजीज़
 ना मेहरवां नहीं है, अगर मेहरवां नहीं
 चोसा नहीं, न दीजिये, दुश्नाम^१ ही सही
 आखिर जुवां तो रखते हो तुम, गर दहां^२ नहीं
 हर चन्द जां - गुदाज़िए - क़हरो - इताव^३ है
 हर चन्द पुश्त गर्मिए - तावो - तवां नहीं
 जां मुतरिवे - तरानाए - हल मिन - मज़ीद^४ है
 लव परदा - संजे - ज़मज़माए - अल - अमां^५ नहीं
 खंजर से चीर सीना अगर दिल न हो दुनीम^६
 दिल में छुरी चुभो, मिशा^७ गर खूंचकां^८ नहीं
 है नंगे - सीना, दिल अगर आतिश - कदा न हो
 है आरे - दिल,^९ नफ़स अगर आज़र - फ़िशां^{१०} नहीं
 नुफ़सां नहीं जुनूं में, वला से हो घर ख़राब
 सौ गज़ ज़मी के बदले, वयावां गरां^{११} नहीं
 कहते हो “क्या लिखा है तेरी सरनविश्त^{१२} में”
 गोया जर्वी^{१३} पे सजदए - वुत^{१४} का निशां नहीं
 पाता हूं उससे दाद कुछ अपने कलाम की
 रूहुल - कुदुस^{१५} अगरचे मेरा हम जुवां नहीं
 जां है वहाए - वोसा,^{१६} वले क्यों कहे, अभी
 ‘ग़ालिब’ को जानता है, कि वे नीमजां नहीं

१. गाली, २. मुँह, ३. क्रोध और रोष का कष्ट, ४. और लाओ का
 नीत गाने वाला रागी, ५. शरण माँगना, ६. दो डकड़े, ७. पलक,
 ८. रक्तरंजित, ९. दिल के लिए लज्जा, १०. आग उगलने वाला,
 ११. महंगा, १२. जन्मपत्री, १३. माथा, १४. प्रेमी को सजदा करना,
 १५. एक फरिश्ता, १६. चुम्बन के लिए।



मानए - दशत - नवदी^१ कोई तदवीर नहीं
 एक चक्कर है, मेरे पांव में जंजीर नहीं
 शौक उस दशत में दौड़ा है मुझको कि जहां
 जादा^२ गैर - अज^३ निगहे - दीदए - तस्वीर^४ नहीं
 हसरते - लज्जते - आज़ार^५ रही जाती है
 जादए - राहे - वफ़ा,^६ जुजु दमे - शमशीर^७ नहीं
 रंजे - नौमीदिए - जावेद गवारा रहियो
 खुश हूं गर नाला - जुवूनी कशे - तासीर नहीं
 सर खुजाता है जहां ज़ल्मे सर अच्छा हो जाय
 लज्जते - संग^८ वअन्दाज़ाए - तकरीर नहीं
 जब करम^९ रखसते - बेबाकी - ओ - गुस्ताखी दे
 कोई तकसीर^{१०} वजुज खिजलते - तकसीर^{११} नहीं
 'ग़ालिव' अपना यह अक़ीदा^{१२} है वक़ौले - 'नासिख'
 "आप वे वहरा है जो मोतकिदे^{१३} 'मीर' नहीं^{१४}"



मत मदुर्मके - दीदा^{१५} में समझो ये निगाहें
 हैं जम्अ सवेदाये - दिले - चश्म^{१६} में आहें

१. जंगल में घूमने में बाधा, २. मार्ग, ३. सिवा, ४. तस्वीर की
 आँख की दृष्टि, ५. दुख के स्वाद की आकांक्षा, ६. प्रेम-मार्ग की मंजिल,
 ७. तलवार की धार, ८. पत्थर खाने का मज्जा. ९. उदारता, १०. अपराध,
 ११. अपराध की लज्जा, १२. विश्वास, १३. श्रद्धालु, १४. आँख की पुतली,
 १५. दिल के दाग की आँख ।

* * * * *

चरशिकाले - गिरियाए - आशिक^१ है, देखा चाहिये
 खुल गई मानिन्दे - गुल,^२ सौ जा^३ से दीवारे चमन
 उलफते - गुल से गुलत है दावाए - वारस्तगी^४
 सर्वे है वावस्फे - आजादी^५ गिरफ्तारे - चमन

* * * * *

इश्क तासीर^६ से नौमीद^७ नहीं
 जां सुपारी^८ शजरे - वेद^९ नहीं
 सलतनत दस्त बदस्त आई है
 जामे - मे खातिमे - जमशेद^{१०} नहीं
 है तजल्ली^{११} तेरी सामाने - वजूद
 ज़री वे - परतवे - खुशीद^{१२} नहीं
 राजे - माशूक . न रुस्वा^{१३} हो जाय
 चरना मर जाने में कुछ भेद नहीं
 गर्दिशे रंगे - तरव^{१४} से डर है
 गुमे - महरूमिए - जावेद^{१५} नहीं
 कहते हैं, जीते हैं उम्मीद पे लोग
 हम को जीने की भी उम्मीद नहीं

१. प्रेमीकी आँखों की बरसात, २. फूल के सदृश, ३. जगह, ४. रिहाई का दावा, ५. आजादी के वावजूद, ६. प्रभाव, ७. निराश, ८. जान निझावर करना. ९. वेद का पेड़, १०. जमशेद बादशाह की अंगूठी, ११. प्रकाश, १२. सूरज के प्रतिविम्ब के बिना, १३. बदनाम, १४. प्रसन्नता के परिवर्तनशील रंग, १५. सदा वंचित रहने का दुख ।

* * * * *

जहां तेरा नक्शे - कदम^१ देखते हैं
 खियावां खियावां^२ इरम^३ देखते हैं
 दिल - आशुस्तगां^४ खाले - कुंजे - दहन^५ के
 सवेदा^६ में सैरे अदम^७ देखते हैं
 तेरे सर्वे - कामत^८ से, इक कद^९ - आदम^{१०}
 कयामत के फितने को, कम देखते हैं
 तमाशा कर ऐ , महवे - आईना दारी^{११}
 तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं
 सुरागे - तुफे - नाला^{१२} ले दागे - दिल से
 कि शव रौ^{१३} का नक्शे - कदम देखते हैं
 बनाकर फूकीरों का हम भेस, 'गालिव'
 तमाशाए अहले - करम^{१४} देखते हैं

* * * * *

मिलती है खूए - यार^{१५} से नार,^{१६} इल्लहाव^{१७} में
 काफ़िर हूं गर न मिलती हो राहत अज़ाव^{१८} में
 कब से हूं, क्या बताऊं जहाने खराब में
 शवहाए - हिज्र^{१९} को भी रखूं गर हिसाब में
 ता फिर न इन्तज़ार में नीन्द आये उम्र भर
 आने का अहद^{२०} कर गये, आये जो ख्वाब में

१. पद-चिह्न, २. क्यारी, ३. स्वर्ग, ४. परीशानहाल, ५. अधर के कोने का तिल, ६. दिल का दाग. ७. परलोक की सैर, ८. सरू के पेड़ जैसा लम्बा कद, ९. मनुष्य का क्रद, १०. आईना देखने में मस्त, ११. आह की गर्मी का पता, १२. रात का राही, १३. दानशील, १४. प्रेमी का स्वभाव, १५. आग, १६. नरक, १७. दुख, १८. वियोग की रातें, १९. वादा ।

कासिद^१ के आते आते खत इक और लिख रखें
 मैं जानता हूँ, जो वो लिखेंगे जवाब में
 मुझ तक कब, उनकी वज्र में आता था दौरे - जाम
 साकी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में
 जो मुँकिरे - वफा^२ हो, फरेव उस पे क्या चले
 क्यों बदगुमां हूँ दोस्त से, दुश्मन के वाव^३ में
 मैं मुजतरिव^४ हूँ वस्ल में, खौफे - रकीव^५ से
 डाला है तुमको वहम ने, किस पेचो - ताव में
 मैं और हज्जे - वस्ल^६, खुदा - साज^७ वात है
 जां नज्र देनी भूल गया, इज्तिराव^८ में
 है तेवरी चढ़ी हुई, अन्दर नकाव^९ के
 है इक शिकन पड़ी हुई, तर्फें - नकाव में
 लाखों लगाव, एक चुराना निगाह का
 लाखों बनाव, एक विगड़ना अताव^{१०} में
 वो नाला दिल में खस के बराबर जगह न पाये
 जिस नाले से शिगाफ^{११} पड़े आफताव^{१२} में
 वो सेहर, मुद्आ - तलवी^{१३} में न काम आये
 जिस सेहर से सफीना^{१४} रवां^{१५} हो सराव^{१६} में
 'गालिव' छुटी शराब; पर अब भी कभी कभी
 पीता हूँ रोजे - अब्रो^{१७} शवे - माहताव^{१८} में

१. संदेशवाहक. २. वफा से इनकार करने वाला, ३. वारे में, ४. बेचैन,
 ५. प्रतिद्वन्द्वी का भय, ६. मिलने का आनन्द, ७. खुदा की ओर से,
 ८. विकलता, ९. क्रोध, १०. सूरज, ११. जादू; मंत्र, १२. इच्छा-पूर्ति,
 १३. नाव, १४. चलना, १५. मरीचिका, १६. जिस दिन बादल छाया हो,
 १७. चाँदनी रात।

कल के लिये कर आज न ख़िस्सत^१ शराव में
यह सूए - ज़ुन^२ है, साक़िए - कौसर^३ के वाव में
हैं आज क्यों ज़लील, कि कल तक न थी पसन्द
गुस्ताख़िए - फ़रिश्ता हमारी जनाव में^४
जां क्यों निकलने लगती है तन से, दमे - समा^५
गर वो सदा समाई है चंगो - रवाव में
रौ^६ में है रख्यो - उंम्र,^७ कहां, देखिये, थमे
ने हाथ वाग पर है, न पा है रकाव में
उतना ही मुझको अपनी हकीकत से वोद^८ है
जितना कि वहमे - ग़ैर से हूं पेचो - ताव में
अस्ले - शहूदो - शाहिदो - मशहूद^९ एक है
हैरां हू फिर मुशाहिदा^{१०} है किस हिसाब में
है मुश्तमिल^{११} नमूदे - सुवर^{१२} पर वजूदे - वहर^{१३}
यां क्या धरा है क़तरओ^{१४} - मौजो - हवाव^{१५} में
शर्म इक अदाए - नाज़ है, अपने ही से सही
हैं कितने बेहिजाव कि हैं, यों हिजाव^{१६} में

१. कंज़ूसी, २. अविश्वास, ३. कौसर स्रोत का साक्षी; खुदा, ४. खुदा ने मनुष्य को बनाकर सब फ़रिस्तों से कहा कि तुम इसे सज्जदा अर्थात् प्रणाम करो। एक फ़रिश्ते ने यह आदेश मानने से इन्कार किया तो खुदा ने उसे स्वर्ग से निकाल दिया और वह शैतान बना। इसी ओर संकेत करते हुए कहा है कि कभी हमारे अर्थात् मनुष्य के हज़ूर में फ़रिश्ता की उद्वेगता भी ग़वारा नहीं थी, पर आज वही मनुष्य इतना अपमानित क्यों हो रहा है? ५. सुनते समय, ६. गति, ७. आयु का घोड़ा, ८. दूरी, ९. दृश्य, द्रष्टा और दिखाने वाले की वास्तविकता, १०. देखना, ११. निर्भर, १२. आवाज़ पैदा होना- १३. समुद्र का अस्तित्व, १४. तरंग के बुलबुले की बूंद, १५. पर्दा।

आराइशें - जमाल^१ से फ़ारिग नहीं हनोज़
 पेशे - नज़र है आइना दाइम नक़्ाव में
 है ग़ैवे - ग़ैव,^२ जिसको समझते हैं हम शहूद^३
 हैं ख़्वाव में हनोज़, जो जागे हैं ख़्वाव में
 'ग़ालिव' नदीमें - दोस्त^४ से, आती है बूर - दोस्त
 मशगूले - हक़ हूं, वन्दगीए - बू तुराव^५ में

* * * * *

हैंरां हूं, दिल को रोऊं, कि पीटूं जिगर को मैं
 मक़दूर^६ हो, तो साथ रखूं नौहागर^७ को मैं
 छोड़ा न रश्क^८ ने, कि तेरे घर का नाम लं
 हर इक से पूछता हूं, कि जाऊं किधर को मैं
 जाना पड़ा रक़ीव के दर पर, हजार बार
 ऐ काश, जानता न तेरी रहगुज़र को मैं
 है क्या, जो कसके बांधिए, मेरी बला डरे
 क्या जानता नहीं हूं, तुम्हारी कमर को मैं
 लो, वह भी कहते हैं कि यह बेनंगो - नाम है
 यह जानता अगर, तो लुटाता न घर को मैं
 चलता हूं थोड़ी दूर, हर इक तेज़ रौं के साथ
 पहचानता नहीं हूं अभी, राहवर^९ को मैं
 ख़्वाहिश को, अहमकों ने, परस्तिश^{१०} दिया क़रार
 क्या पूजता हूं उस वृते - बेवादगर^{११} को मैं

१. सौंदर्य का शृंगार, २. छिपा हुआ, ३. प्रकट, ४. प्रेमी का दोस्त,
 ५. हज़रत अली, ६. सामर्थ्य, ७. रोने वाला; मर्सिया कहने वाला, ८. इश्या,
 ९. द्रुतगामी, १०. पथ-प्रदर्शक, ११. पूजा, १२. निष्ठुर प्रेमी।

फिर बेखुदी में भूल गया, राहें ब्रूए थार
जाता बगरना एक दिन अपनी खबर को मैं
अपने पे कर रहा हूँ कयास, अहले - दहर^१ का
समझा हूँ दिल - पिज़ीर,^२ मताए - हुनर^३ को मैं
'ग़ालिब' खुदा करे कि सवारे - समन्दे - नाज़^४
देखें अली बहादुरे आली गुहर को मैं

* * * * *

ज़िक्र मेरा, बबदी भी, उसे मंज़ूर नहीं
गैर की बात बिगड़ जाये, तो कुछ दूर नहीं
बादए - सैरे - गुलिस्ताँ हैं, खुशा^५ ताले - ए - शौक^६
मुज़दए - क़त्ल^७ मुक़दर^८ है, जो मंज़ूर नहीं
शाहिदे - हस्तिए - मुत्तक^९ की कमर हैं आलम
लोग कहते हैं कि हैं, पर हमें मंज़ूर नहीं
क़तरा अपना भी हकीकत में हैं दरिया, लेकिन
हमको तकलीदे^{१०} - तुनुक - ज़फ़िर^{११} - मंसूर नहीं
हसरत ! ये ज़ाँके - ख़राबी, कि वो ताक़त न रही
इश्के - पुर - अरबदा^{१२} की गौं^{१३} तने रज़ूर^{१४} नहीं
जल्म कर, जुल्म, अगर लुफ़्फ़ा दरेग़ आता हो
तू तगाफ़ुल^{१५} में किसी रंग से माज़ूर^{१६} नहीं

१. दुनिया वाले, २. दिल को लुभाने वाला, ३. हुनर की दीलत, ४. गर्व के घोड़े पर सवार, ५. प्रसन्न होने की बात, ६. शौक का भाव्य, ७. क़त्ल की खुश-ख़बरी ८. किस्मत में लिखी हुई, ९. ज़िक्र, १०. स्वच्छन्द अस्तित्व वाला भगवान्, ११. अनुसरण, १२. मंसूर का ओढ़ापन, १३. लड़ाई, १४. स्थान, १५. बीमार शरीर, १६. उपेक्षा, १७. विवश ।

मैं जो कहता हूँ कि हम लेंगे क़यामत में तुम्हें
 किस रज़नत^१ से तो कहते हैं, कि हम द्वार नहीं
 साफ़ दुर्दी कशे - पैमानए - जम^२ हैं, हम लोग
 बाए, वो वादा कि अफ़शुर्दए - अंगूर^३ नहीं
 हूँ ज़हूरी के मुक़ाविल में ख़िफ़ाई 'ग़ालिव'
 मेरे दावे पे यह हुज्जत है, कि मशहूर नहीं

* * * * *

नाला गुज़ हुस्ने - तलव,^४ ऐ सितम इजाद, नहीं
 है तकाज़ाए - जफ़ा, शिकवए - वेदाद^५ नहीं
 इश्को मज़दूरिए - इशरत - गहे - ख़ुसरु^६ क्या ख़ूब !
 हमको तस्लीम निकुनामिए^७ - फ़रहाद नहीं
 कम नहीं वो भी ख़राबी में, पे बुसअत^८ मात्तूम
 दश्त^९ में, है मुझे वो ऐश कि घर याद नहीं
 अहले - वीनिश^{१०} को है तूफ़ाने - हवादिस,^{११} मकतव
 लतमए - मौज,^{१२} कम अज़ सेलिए - उस्ताद^{१३} नहीं
 बाए महस्मिए - तस्लीमो - वदा^{१४} हाले - वफ़ा
 जानता है, कि हमें ताक़ते - फ़रियाद नहीं
 रंगे - तमकीने^{१५} - गुलो - लाला परीशां क्यों है ?
 गर चराग़ाने - सरे - रह गुज़रे - वाद^{१६} नहीं

१. घमंड, २. जमशेद के प्याले की तलछट पीने वाले, ३. अंगूर की
 निचोड़ी हुई, ४. सविनय, ५. निष्ठुरता की शिकायत, ६. ख़ुसरु बादशाह के
 महल की मज़दूरी (जो फ़रहाद ने की थी), ७. नेकनामी, ८. विस्तार,
 ९. जंगल, १०. समझदार, ११. विपत्तियों का तूफ़ान, १२. तमाचा,
 १३. उस्ताद की चपत, १४. बहुत बुरा, १५. शोभा, १६. हवा ।

सबदे - गुल^१ के तले वन्द करे है गुलची
 मुशदा, ऐ मुर्ग^२, कि गुलजार में सय्याद नहीं
 नफि से करती है इस्वात^३ तराविश^४ गोया
 दी ही जाए - दहन^५ उसको दमे - ईजाद, नहीं
 कम नहीं, जल्वागरी में तेरे कूचे से वहिश्त
 यही नक्शा है, वले इस क़दर आवाद नहीं
 करते किस मुंह से हो, गुर्वत की शिकायत 'ग़ालिब'
 तुम को बे - मेहरिए - याराने - वतन^६ याद नहीं

* * * *

दोनों जहान दे के, वो समझे, यह खुश रहा
 यां आपड़ी यह शर्म, कि तकरार क्या करें
 थक थक के, हर मुक़ाम पे दो चार रह गये
 तेरा पता न पायें, तो नाचार क्या करें ?
 क्या शम्भ्र के नहीं है हवात्माह^७ अहले - वज़म^८
 हो ग़म ही जां गुदाज़^९ तो ग़मख़वार क्या करें

* * * *

हो गई है ग़ैर की शीरी^{१०} - वयानी^{११}, कारगर^{१२}
 इश्क़ का उसको गुमां हम बेजुवानों पर नहीं

१. फूलों की टोकरी, २. साकार, ३. तराशना, ४. मुंह, ५. देशवासियों
 की निष्ठुरता, ६. शुभचिंतक, ७. महफिल वाले, ८. ज्ञान बुलाने वाला, ९
 ९. मधुर वाणी, १०. सफल ।

क्यामत है, कि सुन लैला का दश्ते - कैस^१ में आना
ताज्जुब से वो बोला, यों भी होता है ज़माने में
दिले - नाजुक पे उसके रहम आता है, मुझे, 'ग़ालिब'
न कर सरगर्म उस काफ़िर को उत्कृत आजमाने में

दिल लगाकर लग गया उनको भी तन्हा बैठना
चारे, अपनी बेकसी की हमने पाई दाद, यां
हैं ज़वाल - आमादा^२ अज्ज़ा^३ आफ़रीनिश^४ के तमाम
मेहरे - गरदू^५ हैं चिरागे - रह - गुज़ारे - वाद यां

यह हम जो हिज़्र^६ में, दीवारो - दर को देखते हैं
कभी सबा को, कभी नामावर^७ को देखते हैं
वो आयें घर में हमारे, खुदा की कुदरत है
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं
नज़र लगे न कहीं, उसके दस्तो - बाजू^८ को
ये लोग क्यों मेरे ज़रमे - जिगर को देखते हैं
तेरे जवाहिरे - तरफ़े - कुलह^९ को क्या देखें
हम औजे - तालए - लालो - गुहर^{१०} को देखते हैं

१. मजनूँ के प्रवास का जंगल, २. पतनोन्मुख, ३. पंचभूत, ४. सृष्टि,
५. आरमान का सूरज, ६. वियोग, ७. संदेशवाहक, ८. हाथ और बाहें,
९. टोपी में टंके मोती, १०. हारे-जवाहर के भाग्य की पराकाष्ठा ।

नहीं, कि मुझको क़यामत का एतिकाद^१ नहीं
शवे - फिराक^२ से रोज़े - जज़ा^३ ज़ियाद^४ नहीं

* * * * *

कोई कहे, कि शवे - मैं में क्या घुराई हैं
बला से, आज अगर दिन को अन्नो - वाद^५ नहीं
जो आज सामने उनके, तो मरहवा^६ न कहे
जो जाऊं वां से कहीं को, तो ख़ैरवाद नहीं
कभी जो याद भी आता हूं मैं, तो कहते हैं
कि, आज बज़्म में कुछ फ़ितनओ - फ़साद नहीं
अलावा ईद के मिलती हैं, और दिन भी, शराब
गदाए - कूचए - मेखाना^७ नामुराद नहीं
जहां मैं हो गुमो - शादी वहम, हमें क्या काम
दिया है हमको खुदा ने वो दिल, कि शाद नहीं
तुम उनके वादे का ज़िक्र उनसे क्यों करो, 'ग़ालिब'
यह क्या, कि तुम कहो, और वो कहें, कि याद नहीं

* * * * *

तेरे तौसन^८ को सवा^९ बांधते हैं
हम भी मज़मूं की हवा बांधते हैं
आह का किसने असर देखा है
हम भी इक अपनी हवा बांधते हैं

१. विश्वास, २. वियोग की रात, ३. क़यामत का दिन, जब कैसले होंगे,
४. अधिक, ५. रात को शराब पीना, ६. घटा, ७. शाबाश, ८. मधुशाला
के दूधे का मिखारी, ९. घोड़ा, १०. हवा ।

तेरी फुर्सत के मुक़ाविल, ऐ उम्र !
 बर्क को पा व हिना^१ बांधते हैं
 कैंदे - हस्ती^२ से रिहाई, मात्स्य
 अश्क को वे सरो - पा बांधते हैं
 नशए - रंग से, हे वाशुदे - गुल^३
 मस्त कव वन्दे - किचा^४ बांधते हैं
 गलतीहाए - मज़ामी मत पूछ
 लोग नाले को रसा बांधते हैं
 अहले - तदवीर की वामान्दगियाँ^५
 आवलों पर भी हिना बांधते हैं
 सादा पुरकार^६ हैं बूवाँ, 'ग़ालिव'
 हमसे पैमाने - वफ़ा बांधते हैं

* * * * *

ज़माना सरस्त कम - आज़ार^७ है बजाने - 'असद'
 बगरना हम तो तवक्को ज़ियादा रखते हैं

* * * * *

'दाइम' पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूँ मैं
 खाक ऐसी ज़िन्दगी पे, कि पत्थर नहीं हूँ मैं
 क्यों गर्दिशे - मुदाम^८ से घबरा न जाए दिल ?
 इंसान हूँ, प्यालओ - सागर नहीं हूँ मैं

१. मेंहदी, २. जीने की कैद, ३. आँख, ४. फूल का खुलना, ५. कुतों के वन्द, ६. ध्वान, ७. चालाक, ८. कम दुःख देने वाला, ९. हमेशा, १०. सदा का चक्कर ।

गारव ! ज़माना मुझको मिटाता है किसलिं !
 लीहे^१ जहां पे हफें - मुकरर^२ नहीं हूं मैं
 हद चाहिये सज़ा में उकूवत^३ के वास्ते
 आखिर गुनाहगार हूं क़ाफ़िर नहीं हूं मैं
 किस वास्ते अज़ीज़ नहीं जानते मुझे ?
 लालो - ज़मुरुदो ज़रो - गौहर नहीं हूं मैं
 रखते हो तुम क़दम मिरी आंखों से क्यों दरेग
 रुतवे में मेहरो - माह^४ से कमतर नहीं हूं मैं
 करते हो मुझको मन्य क़दम - चोस^५ किस लिये ?
 क्या आसमान के भी बराबर नहीं हूं मैं ?
 'ग़ालिब' बज़ीफ़ा ख़्बार हो, दो शाह को दुआ
 वो दिन गये कि कहते थे "नौकर नहीं हूं मैं"



सब कहां ! कुछ लाल ओ गुल में नुमाया^६ हो गई
 ख़ाक में क्या सूरतें होंगी कि पिन्हां^७ हो गई
 याद थीं हमको भी रंगारंग बर्रम आराइयां^८
 लेकिन अब नक्क़शो - निगारे - ताक़े - निसियां^९ हो गई
 थीं विनातुन्नाशे - गदू^{१०} दिन को पदें में निहां^{११}
 शव को उनके जी में क्या आई कि उरियां^{१२} हो गई
 कैद में याकूब ने ली, गो न यूसुफ़ की ख़बर
 लेकिन आंखें रोज़ने - दीवारे - ज़िन्दा^{१३} हो गई

१. तल्ली, २. दोबारा लिखा गया अक्षर; फ़ालतू, ३. सज़ा देने वाला खुदा,
 ४. सूरज और चाँद, ५. क़दम चूमने से मना, ६. प्रकट, ७. छिप, ८. मजलिस
 सजाना, ९. विस्मृति के ताक का रेखाचित्र, १०. आसमान के नक्षत्र आदि,
 ११. छिप जाते, १२. प्रकट, १३. कैदखाने की दीवार के सुराख ।

सब रक़ीवों से हूँ नाखुश पर ज़नाने - मिस्र^१ से
 है जुलेखा खुश कि महवे - माहे - कनआ^२ हो गई
 जूए - खू^३ आंखों से बहने दो कि है शामे - फिराकू
 मैं यह समझूंगा कि शमएँ दो फुरोज़ाँ^४ हो गई
 इन परीज़ादों से लेंगे खुल्द^५ में हम इन्तेक़ाम
 कुदरते - हक़ से यही हूँ अगर वां हो गई
 नीन्द उसकी है दिमाग़ उसका है राते उसकी है
 तेरी जुल्फ़ें जिसके बाजू पर परीशां हो गई
 मैं चमन में क्या गया, गोया दविस्ताँ^६ खुल गया
 बुलबुलें सुनकर मिरे नाले गज़लख़्वां हो गई
 वो निगाहें क्यों हुई जाती हैं यारव दिल के पार
 जो मिरी कोताहिए - किस्मत^७ से मिज़गां हो गई
 घस कि रोका मैंने और सीने में उभरीं पै व पै
 मेरी आहें बख़ियए चाके गरीबां हो गई
 बां गया भी मैं, तो उनकी गालियों का क्या जवाब ?
 याद थीं जितनी दुआएं सफ़ें दरवां हो गई
 जा - फ़िज़ा^८ है वादा^९ जिसके हाथ में जाम आ गया
 सब लकीरें हाथ की गोया रगे - जां हो गई
 हम मुवहिद^{१०} हैं हमारा केश^{११} है तर्कें - रुसूम^{१२}
 मिल्लते^{१३} जब मिट गई अज्ज़ाए - ईमाँ^{१४} हो गई
 रंज से खूगर हुआ इंसां तो मिट जाता है रंज
 मुश्किलें मुश्क़ल पर पड़ीं इतनी कि आसां हो गई

१. मिस्र की स्त्रियों, २. यूसुफ़ को देखने में खो गई, ३. खून की नदी,
 ४. प्रकाशित, ५. स्वर्ग, ६. पाठशाला, ७. अभागापन, ८. प्राणदायक, ९. शराब,
 १०. एकेश्वरवादी ११. धर्म, १२. प्रथा-त्याग, १३. कौमै, १४. आदी ।

यों ही गर रोता रहा 'ग़ालिब' तो ऐ अहले जहां !
देखना इन वस्तियों को तुम, कि वीरां हो गईं

* * * * *

दीवानगी से दोश^१ पे जुन्नार^२ भी नहीं
थानी हमारी जेब में इक तार भी नहीं
दिल को नियाजे^३ - हसरते दीदार कर चुके
देखा तो हममें ताक़ते दीदार भी नहीं
मिलना तिरा अगर नहीं आसां तो सहल है
दुश्वार तो यही है, कि दुश्वार भी नहीं
वे - इश्क़ उम्र कट नहीं सकती है और यां
ताक़त बक़दरे - लफ़्ज़ते - आज़ार भी नहीं
शोरीदगी^४ के हाथ से सर है बचाले - दोश^५
सहरा में ऐ खुदा कोई दीवार भी नहीं
गुंजाइशे अदावते - अग़यार^६ इक तरफ़
यां दिल में ज़ोफ़ से हविसे यार भी नहीं
डर नाला हाए ज़ार से मेरे, खुदा को मान
आखिर नवाए - मुर्गे - गिरफ़्तार^७ भी नहीं
दिल में है यार की सफ़े - मिज़गां^८ से रुक़शी^९
हालांकि ताक़ते ख़लिशे - ख़ार^{१०} भी नहीं
इस सादगी पे कौन न मर जाय ऐ खुदा !
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं

१. कंधा, २. जनेक, ३. भेंट, ४. उन्माद, ५. कंधे
६. चौरों की दुश्मनी, ७. पिंजड़े में बन्द पक्षी की आवाज़
१०. काँटे की चुमन ।

देखा 'असद' को खलवतो - जल्वत^१ में वारहा
दीवाना गर नहीं है तो हुशियार भी नहीं

* * * * *

नहीं है ज़रूम कोई वखिया के दरखुर^२ मिरे तन में
हुआ है तारे - अशके - यास^३ रिश्ता^४ चश्मे - सोज़न^५ में
हुई है मानए - जौके - तमाशा खाना - वीरानी^६
कफ़े - सैलाव^७ वाकी है वरंगे - पम्वा^८ रौज़न में
वदीअत^९ खानए - वेदादे - काविश - हाए - मिज़गां हूं
नगीने-नामे^{१०} शाहिद^{११} है मिरा हर कतरा खूं तन में
वयां किससे हो जुल्मत - गुस्तरी^{१२} मेरे शविस्तां^{१३} की
शवे - मै हो जो रखदें पम्वा दीवारों के रौज़न में
निकोहिश^{१४} मानए - वेरव्तीए - शोरे - जुनूं^{१५} आई
हुआ है खन्दए - अहवाव^{१६} वखिया जेवो दामन में
हुए उस मेहर - वश^{१७} के जल्वए - तिमसाल^{१८} के आगे
पर - अफ़शां^{१९} जौहर आईने में मिस्ले - ज़री^{२०} रौज़न में
न जानूं नेक हूं या वद हूं पर सोहवत मुख़ालिफ़ है
जो गुल हूं तो हूं ख़सख़न^{२१} में, जो ख़स हूं तो हूं गुलशन में
हज़ारों दिल दिये जोंशे - जुनूने - इश्क ने मुझको
सियह होकर सवेदा^{२२} हो गया हर कतरा खूं तन में

१. एकान्त और महफिल, २. योग्य, ३. निराशा के आंसुओं का तार,
४. धागा, ५. सूई की आँख, ६. घर की बरवादी, ७. बाढ़ की भाग, ८. रूई
के फाहे की तरह, ९. धरोहर, १०. नाम खुदा नगीना, ११. देखने वाला,
१२. अंधकार फैलाना, १३. शयनगृह, १४. उलाहना, १५. उन्मादी को असंवद्ध
शोर की मनाही, १६. मित्रों का मुस्कराना, १७. सूर्यमुखी, १८. प्रतिबिंबित; दृश्य,
१९. फड़फड़ाता, २०. अणु के सदृश, २१. घास का खेत, २२. दिल का दाग।

‘असद’ जिन्दानिए - तासीरे - उल्फत - हाए - खूवा^१ हूँ
ख़मे - दस्ते - नवाजिश^२ हो गया है तौक़ गर्दन में

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

मजे जहान के अपनी नज़र में खाक नहीं
सिवाए खूने जिगर, सो जिगर में खाक नहीं
मगर गुवार^३ हुए पर हवा उड़ा ले जाए
बगरना तावो - तवा^४ वालो - परं में खाक नहीं
यह किस बहिश्त - शमाइल^५ की आमद आमद है ?
कि नैरे^६ जल्वए गुल रहगुज़र में खाक नहीं
भला उसे न सही, कुछ मुम्भी को रहम आता
असर मिरे नफ़से - वे - असर में खाक नहीं
ख़याले - जल्वए - गुल से ख़राब हैं मैकश^७
शराब ख़ाने के दीवारो-दर में खाक नहीं
हुआ हूँ इश्क़ की ग़ारत - गरी^८ से शमिन्दा
सिवाए हसरते - तामीर^९ घर में खाक नहीं
हमारे शेर हैं अब सिर्फ़ दिल्लगी के, ‘असद’
खुला कि फ़ायदा अर्जे - हुनर में खाक नहीं

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

दिल ही तो है न संगो-ख़िश्त^{१०} दर्द से भर न आये क्यों
रोयेंगे हम हजार बार कोई हमें सताये क्यों

१. प्रेमिकाओं की प्रीति के प्रभाव का बन्दी, २. प्यार से गले में पड़ी बांह,
३. मिट्टी: धूल, ४. शक्ति, ५. पंख, ६. स्वर्ग-सदृश, ७. अतिरिक्त, ८. शराबी,
९. बरबादी, १०. निर्माण की हसरत, ११. पत्थर और ढेला ।

दैर^१ नहीं, हरम^२ नहीं, दर नहीं, आस्तां^३ नहीं
 चैटे हैं रहगुजर पे हम, गैर हमें उठाये क्यों
 ज़व वो जमाले - दिलफ़रोज़,^४ सूरते-मेहरे - नीम - रोज़^५
 आप ही हो नज़ारा - सोज़, पर्दे में मुंह छिपाये क्यों
 दशनए - ग़मज़ा^६ जांसितां,^७ नावके - नाज़^८ वे - पनाह
 तेरा ही अक्से - रुख़^९ सही, सामने तेरे आये क्यों
 क़ैदे - हयातो^{१०} वन्दे - ग़म^{११} अस्ल में दोनों एक हैं
 मौत से पहले आदमी, ग़म से निजात पाये क्यों
 हुस्न और उसपे हुस्ने - ज़न,^{१२} रह गई बुलहवस^{१३} की शर्म
 अपने पे एतमाद है गैर को आज़माये क्यों
 चां वो गुरुरे इज़ज़ो - नाज़^{१४} यां यह हिजावे-पासे-वज़्र^{१५}
 राह में हम मिलें कहां, वज़म में वो बुलाये क्यों
 हां वो नहीं खुदा परस्त जाओ वो बेवफ़ा सही
 जिसको हो दीनो दिल अज़ीज़ उसकी गली में जाये क्यों
 'ग़ालिवे' ख़स्ता^{१६} के वग़ैर कौन से काम बन्द हैं
 रोइए ज़ार ज़ार क्या कीजिये हाय हाय क्यों

* * * * *

गुञ्चए नाशगुफ़ता^{१७} को दूर से मत दिखा कि यों
 चांसे को पूछता हूं मैं मुंह से मुझे बता कि यों

१. मंदिर, २. कावा, ३. चौखट, ४. मनोहर सांदर्य, ५. दोपहर के सूरज के सदृश, ६. अदा का नश्वर, ७. जान लेने वाला, ८. नखरे का तीर, ९. चेहरे का प्रतिबिंब, १०. जीवन का बंधन, ११. दुःख का बंधन, १२. अच्छी भावनाएं, १३. लाभ रखने वाला, १४. सम्मान और रूप का अहंकार, १५. स्वाभिमान के स्वभाव की लज्जा, १६. दुर्बल, १७. अविकसित।

पुरसिशे - तजें - दिलवरी^१ कीजिये क्या कि विन कहे
 उसके हरएक इशारे से निकले है यह अदा कि यों
 रात के वक्त में पिये साथ रक़ीब को लिये
 आये वो यां खुदा करे, पर न करे खुदा कि यों.
 “ग़ैर से रात क्या बनी” यह जो कहा तो देखिए
 सामने आन बैठना, और यह देखना कि यों
 वज़म में उसके रूबरू क्यों न तमोश बैठिए
 उसकी तो ख़ामुशी में भी है यही मुद्आ कि यों
 मैंने कहा कि वज़मे - नाज़^२ चाहिये ग़ैर से तही^३
 सुनके सितम - ज़रीफ़ ने मुझको उठा दिया कि यों
 मुझसे कहा जो यार ने “जाते हैं होश किस तरह”
 देख के मेरी बेखुदी चलने लगी हवा कि यों
 कब मुझे झूग - यार^४ में रहने की वज़अ^५ याद थी
 आइनादार बन गई हैरते - नज़शे - पा^६ कि यों
 गर तिरे दिल में हो ख़याल, वस्ल^७ में शौक का ज़वाल^८
 मौज मुहीते - आव^९ में मारे हैं दस्तो^{१०} - पा कि यों
 जो ये कहे कि रेख़ता^{११} क्योंकि हो रश्के फ़ारसी^{१२}
 गुफ़्तए “ग़ालिब”^{१३} एक बार पढ़के उसे सुना कि यं

* * * * *

हसद^{१४} से दिल अगर अफ़सुर्दा है गर्में - तमाशा हो
 कि चश्मे - तंग^{१५} शायद कसरते - नज़ारा^{१६} से वा हो

१. दिल धीनने का डंग क्या पूछिए, २. तुम्हारी महफ़िल, ३. खाली,
 ४. प्रेमी का कूचा, ५. डंग, ६. पदचिह्न का आश्चर्य, ७. मिलन, ८. पतन,
 ९. भँवर, १०. हाथ-पांव, ११. उर्दू, १२. फ़ारसी के बग़ादर, १३. ग़ालिब का
 कलाम, १४. द्वेष, १५. दृष्टि की संकीर्णता, १६. दृश्य की बहुलता।

वक़दरे हसरते दिल चाहिये जौक़े - मआसी^१ भी
 भस्म^२ यक गोशए - दामन, गर आवे - हफ़्त-दरिया^३ हो
 अगर वो सर्वक़द गर्मे - ख़िरामे - नाजे^४ आ जावे
 कफ़े हर खाके - गुलशन शक़ले - कुमरी^५ नाला - फरसा^६ हो



कावे में जा रहा तो न दो ताना क्या कहें
 भूला हूं हक्क़े सोहवते अहले - कुनिश्त^७ को
 ताअत^८ में ता रहे न मआ - अंगर्वी^९ की लाग
 दोज़ख़ में डाल दो कोई लेकर वहिश्त को
 हूं मुनहरिफ़^{१०} न क्यों रहों - रस्मे - सबाव^{११} से
 टेढ़ा लगा है क़त क़लमे - सर - नविश्त को
 आई अगर बला तो जिगर से टली नहीं
 एराही^{१२} देके हमने वचाया है किश्त को
 'ग़ालिव' कुछ अपनी सई से लहना^{१३} नहीं मुझे
 ख़िरमन^{१४} जले अगर न मलख़^{१५} खाये किश्त^{१६} को



बारुस्ता^{१७} उससे हैं कि मुहब्बत ही क्यों न हो
 कीजे हमारे साथ, अदावत ही क्यों न हो

१. गुनाहों का शौक, २. सात नदियों का पानी, ३. नाज़ दिखलाता हुआ,
 ४. कुमरी पत्नी के समान, ५. रुदन करने लगे, ६. गिरजा वाले; ईसाई,
 पूजा, ७. शराब और शहद, ८. न मानने वाला, ९. धार्मिक रीति-रिवाज़,
 बीच में मोहरा डालकर, १०. लाभ, ११. खलिहान, १२. टिड्डी,
 बेती, १३. आज़ाद।

छोड़ा न मुझमें जोफ़ ने रंग इखतलात^१ का
 है दिल पे वार^२ नक़शे - मुहव्वत ही क्यों न हो
 है मुझको तुझसे तज़करए - ग़ैर^३ का गिला
 हर चन्द वर - सवीले - शिकायत^४ ही क्यों न हो
 पेदा हुई है कहते हैं "हर दर्द की दवा"
 यों हो तो चारए - ग़मे - उल्फ़त ही क्यों न हो
 डाला न बेकसी ने किसी से मुआमला^५
 अपने से खींचता हूँ ख़िजालत^६ ही क्यों न हो
 है आदमी बजाए खुद इक महशारे - ख़याल^७
 हम अंजुमन समझते हैं ख़लवत^८ ही क्यों न हो
 हंगामए ज़बूनिए^९ हिम्मत है इंक़आल^{१०}
 हासिल न कीजे दहर^{११} से इवरत ही क्यों न हो
 वारुस्तगी - वहानए - बेगानगी नहीं
 अपने से कर न ग़ैर से वहशत ही क्यों नहीं
 मिटता है फ़ौते - फ़ुर्सते - हस्ती^{१२} का ग़म कहीं
 उम्रे - अज़ीज़ - सफ़े इबादत ही क्यों न हो
 उस फ़ितना - खूँ^{१३} के दर से अब उठते नहीं "असद"
 इसमें हमारे सर पे क़यामत ही क्यों न हो

* * * * *

क़फ़स^{१४} में हूँ गर अञ्छा भी न जानें मेरे शेवन को^{१५}
 मिरा होना बुरा क्या है नवा - संजाने - गुलशन^{१६} को

१. आवेशपूर्ण मिलन, २. वोक़, ३. ग़ैर का ज़िक्र, ४. शिकायत के तौर पर, ५. सरोकार, ६. शर्मिन्दगी, ७. विचारों का प्रलय, ८. एकान्त, ९. साहस का हास, १०. पश्चात्ताप, ११. दुनिया, १२. मृत्यु, १३. ख़राब आदत वाला; लड़ाका, १४. पिंजड़ा, १५. रुदन, १६. चमन में चढ़चढ़ाने वाला।

नहीं गर हमदमी^१ आसां न हो, यह रश्क क्या कम है ?
 न दी होती खुदाया आरजूए - दोस्त^२ दुश्मन को
 न निकला आंख से तेरी इक आंसू उस जराहत पर
 किया सीने में जिसने खूँचकां^३ मिजगाने - सोज़न^४ को
 खुदा शर्माए हाथों को कि रखते हैं कशाकश^५ में
 कभी मेरे गरीबां को कभी जानां के दामन को
 अभी हम क़त्लगाह का देखना आसां समझते हैं
 नहीं देखा शनावर^६ जूए - खूँ^७ में तेरे तौसन^८ को
 हुआ चर्चा जो मेरे पांव की जंजीर बनने का
 किया बेताब कां^९ में जुम्बिशे - जौहर^{१०} ने आहन^{११} को
 खुशी क्या खेत पर मेरे अगर सौ बार अब आवे
 समझता हूं कि दूण्डे है अभी से वर्क - खिरमन को
 वफ़ादारी वशर्ते - उस्तवारी^{१२} अरल ईमां है
 मेरे बुतखाने में तो कावे में गाड़ो ब्रह्मन को
 शहादत थी मेरी किस्मत में जो दी थी यह खूँ मुझको
 जहां तलवार को देखा मुक्का देता था गर्दन को
 न लुटता दिन को तो कब रात को यों बेखबर सोता
 रहा खटका न चोरी का हुआ देता हूं रहज़न^{१३} को
 सुखन क्या कह नहीं सकते कि जोया^{१४} हों जवाहर के
 जिगर क्या हम नहीं रखते कि खोदें जाके मादन^{१५} को

१. साथ, २. प्रेमी की अभिलाषा, ३. रक्त-रंजित, ४. सूई जैसी पलकों, ५. खींचातानी, ६. होशियार, ७. खून की नदी, ८. घोड़ा, ९. खान, १०. क्षीरे की करवट, ११. लोहा, १२. दृढ़ता की शर्त के साथ, १३. लुटेरा, १४. ढूंढने वाले, १५. खान ।

मेरे शाहे - सुलेमां जाह से निस्वत नहीं 'ग़ालिव'
फ़रीदूनो - जमो - कैखसरवो - दारावो - वहमन को

* * * * *

धोता हूं जब मैं पीने को - उस सीमतन^१ के पांव
रखता है ज़िद से खींच के बाहर लगन^२ के पांव
दी सादगी से जान पड़ूँ कोहकन के पांव
हैहात ! क्यों न टूट गये पीरज़न^३ के पांव
भागें ये हम बहुत सो उसी की सज़ा है ये
होकर असीर^४ दावते हैं राहज़न के पांव
मरहम की जुस्तुज़ में फिरा हूं जो दूर - दूर
तन से सिवा फ़िगार^५ हैं उस खस्ता - तन के पांव
अल्लाह रे जौक़े - दश्त - नवदी^६ कि वादे - मर्ग^७
हिलते हैं खुद - बखुद मेरे अन्दर कफ़न के पांव
है जोशे - गुल वहार में यां तक कि हर तरफ़
उड़ते हुए उलझते हैं, मुर्गें - चमन^८ के पांव
शव^९ को किसी के ख़ाव में आया नहीं कहीं
दुखते हैं आज उस वुते - नाजुक वदन के पांव
'ग़ालिव' मेरे कलाम में क्योंकि मज़ा न हो
पीता हूं धो के खुसरवे - शीरी - सुखन^{१०} के पांव

* * * * *

१. चाँदी जैसे शरीर वाला, २. वर्तन, ३. बूढ़ी औरत, ४. कैदी,
५. ज़ख्मी, ६. जंगल में घूमने का शौक, ७. मृत्यु के बाद, ८. उद्यान का पक्षी,
९. रात, १०. मधुर स्वर वाले खुसरवे (बादशाह 'जफ़र' की तरफ़ इशारा है) ।

वां उसको हौले - दिल है तो यां मैं हूं शर्मसार
 यानी ये मेरी आह की तासीर^१ से न हो
 अपने को देखता नहीं जौके - सितम तो देख
 आईना ताकि दीदए - नखचीर^२ से न हो



वां पहुंचकर जो गुश आता पै - हम^३ है हमको
 सद^४ रह आहंगों^५ - जमीं वोसे - कदम है हमको
 दिल को मैं और मुझे दिल महवे - वफ़ा रखता है
 किस क़दर जौके - गिरफ़्तारिए - दम^६ है हमको
 जोफ़^७ से नक्रशे - पए - मोर है तौके गर्दन
 तेरे कूचे से कहां ताक़ते - रम^८ है हमको
 जान कर कीजे तगाफ़ुल^९ कि कुछ उम्मीद भी हो
 ये निगाहे - ग़लत - अन्दाज़^{१०} तो सम^{११} है हमको
 रश्के - हम - तरहीओ^{१२} दर्दे - असरे - वांगे - हर्जी^{१३}
 नालाए - मुर्गे - सहर^{१४} तेग़े - दुदम^{१५} है हमको
 सर उड़ाने के जो वादे को मुकर्रर^{१६} चाहा
 हंस के बोले कि “तेरे सर की क़सम है हमको”

१. प्रभाव, २. शिकार की आंख, ३. बार-बार, ४. सौ, ५. आवाज़ का मार्ग, ६. जाल में फंसने की चाह, ७. दुर्बलता, ८. बाने की शक्ति, ९. उपेक्षा, १०. सरसरी नज़र, ११. विष, १२. एक भाषा-भाषी होने की ईर्ष्या, १३. व्यथित स्वर के प्रभाव का दर्द, १४. तरंग रूपी पक्षी का रुदन, १५. दोधारी तलवार, १६. दोबारा।

दिल को खूँ करने की क्या बजह ? व लेकिन नाचार
पासे - चे - रीनकीए - दीदा^१ अहम^२ है हमको
तुम वो नाजुक कि खमोशी को फुगा^३ कहते हो
हम वो आजिज़^४ कि तगाफुल भी हैं सितम हमको

क़सआ

लखनऊ आने का वाइत नहीं खुलता यानी
हविस - सैरो - तमाशा तो वो कम है हमको
मक़नए - मिलसिलए - शौक नहीं है यह शहर
अक्मे - सैरे - नजफो^५ तौफ़े - हरम^६ है हमको
लिये जाती हैं कहीं एक तबक्को^७ 'ग़ालिब'
जादए - रह^८ कशिशे - काफ़े - करम^९ है हमको

* * * * *

तुम जानो तुमको ग़ैर से जो रस्मो - राह हो
मुम्क़ो भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो
बचते नहीं माख़ज़ए - रोज़े - हश्र^{१०} से
क़ातिल अगर रक़ीब हैं तो तुम ग़वाह हो
क्या वो भी वेगुनह - कुशो^{११} हक़ - नाशनास^{१२} हैं
माना कि तुम वशर नहीं ख़ुर्शीदो - माह^{१३} हो

१. आँख की वे रीनकी का लिहाज, २. महत्वपूर्ण, ३. आह, ४. लाचार,
५. नजफ़ (सैर्य) की सैर का निश्चय, ६. कावा की परिक्रमा, ७. आशा,
८. मार्ग का निशान, ९. उदारता का आकर्षण, १०. क़नायत के दिन की
ज्वाब-तलबी, ११. निदोष घातक, १२. सत्य को न समझने वाले, १३. सुरुज
चांद ।

उभरा हुआ नकाव में है उनके एक तार
 मरता हूं मैं कि ये न किसी की निगाह हो
 जब मैकदा^१ छुटा, तो फिर अब क्या जगह की कैद
 मस्जिद हो, मदरसा हो, कोई खानकाह हो
 सुनते हैं जो वहिश्त की तारीफ़, सब दुरुस्त
 लेकिन खदा करे वो तेरी जल्वागाह^२ हो
 'गालिव' भी गर न हो तो कुछ ऐसा जरूर^३ नहीं
 दुनिया हो या रव ! और मेरा बादशाह हो

* * * * *

गई वो बात कि हो गुफ्तगू तो क्योंकर हो
 कहे से कुछ न हुआ फिर कहो, तो क्योंकर हो
 हमारे ज़हन में इस फ़िक्र का है नाम विसाल^४
 कि गर न हो तो कहां जायं, हो तो क्योंकर हो
 अदब है और यही कशमकश^५ तो क्या कीजे
 हया^६ है और यही गोमगो^७ तो क्योंकर हो
 तुम्हीं कहो कि गुज़ारा सनम - परस्तों^८ का
 बुतों की हो अगर ऐसी ही खू तो क्योंकर हो
 उलझते हो तुम अगर देखते हो आईना
 जो तुम से शहर में हों एक दो, तो क्योंकर हो
 जिसे नसीब हो रोज़े - सियाह^९ मेरा सा
 वो शरत्स दिन न कहे रात को तो क्योंकर हो

१. मधुशाला, २. दर्शन-स्थान, ३. नुक़सान, ४. मिलन, ५. खींचातानी,
 ६. लज्जा, ७. असमंजस, ८. आशिकों, ९. बुरा दिन ।

हमें फिर उनसे उमीद और उन्हें आईना
 हमारी बात ही पूछें न वो : आईना
 गलत न था हमें खत पर गु आईना
 न माने दीदण - दीदार - जू तो कि है
 बनाओ इस मित्रों को देखकर
 ये नेश हो रगेजों में फरो तो क्या
 मुझे जुनूं नहीं 'गालिव' बले बकौले - हुजूर
 किराके - यार में तस्कीन हो तो क्योंकर हो

* * * * *

किसी को देके दिल कोई नवा - संज - फुगाँ क्यों हो
 न हो जब दिल ही सीने में तो फिर मुंह में जुवाँ क्यों हो
 वो अपनी लूँ न छोड़ेंगे, हम अपनी बड़बूँ क्यों बदलें
 सुबुक - सर^१ बन के क्या पूछें कि हमसे सरगराँ^२ क्यों हो
 कियां गुमखवार ने रुखा, लगे आग इस मुहब्बत को
 न लावे ताव जो गुम कीं वो मेरा राजदाँ^३ क्यों हो
 बफा कैसी ? कहां का इश्क ? जब सर फोड़ना ठहरा
 तो फिर ऐ संग-दिल तेरा ही संगे-आस्ताँ^४ क्यों हो
 कफ़स में मुझसे रूदादे - चमन^५ कहते न डर हमदम
 गिरी है जिसपे कल बिजली वो मेरा आशियाँ क्यों हो

१. दर्शनाभिलाषा आख, २. पलक, ३. चैन, ४. डंक, ५. नाइ, ६. दूर,
 ७. हुजूर के कथनानुसार, ८. प्रार्थना करने वाला, ९. आदत, १०. मर्यादा,
 ११. हीन, १२. नाराज, १३. मेद जानने वाला; मित्र, १४. चौखट का पत्थर,
 १५. चमन की बात ।

उभरा । हकते हो “हम दिल में नहीं हैं” पर यह वतलाओ
 मरता । दिल में तुम्हीं तुम हो तो आंखों से निहां^१ क्यों हो
 जबत है जच्चे - दिल का शिकवा देखो जुर्म किसका है
 स खींचो गर तुम अपने को कशाकश दरमियां क्यों हो
 यह फितना आदमी की खाना-वीरानी^२ को क्या कम है
 हुए तुम दोस्त जिसके दुश्मन उसका आस्मां क्यों हो
 यही है आजमाना तो सताना किसको कहते हैं
 अदू^३ के हो लिये जब तुम तो मेरा इम्तेहां क्यों हो
 कहा तुमने कि “क्यों हो गैर के मिलने में रुस्वाई”^४
 वजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि ‘हां क्यों हो?’
 निकाला चाहता है काम क्या तानों से तू ‘गालिव’
 तेरे वे - मेहर^५ कहने से वो तुझ पर मेहरवां क्यों हो



रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो
 हम - सुखन^६ कोई न हो और हम - जुवां^७ कोई न हो
 वे दरो - दीवार - सा इक घर बनाया चाहिये
 कोई हमसाया न हो और पासवां कोई न हो
 पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
 और अगर मर जाइये तो नौहा - रूवां^८ कोई न हो



१. छिपे हुए, २. घर की बरवादी, ३. दुश्मन, ४. बदनामी, ५.
 निष्ठुर, ६. साथ बोलने वाला, ७. बड़ी भाषा बोलने वाला, ८. रोने
 वाला ।

अज - मेहर - तावा^१ - ज़री दिलो - दिल है आईना
तूती को शश - जहत^२ से मुकाविल है आईना

* * * *

है सवजा ज़ार हर दरो - दीवारे - गुम - कदा^३
जिसकी वहां ये हो फिर उसकी खिजां न पूछ
नाचार बेकसी की भी हसरत उठाइये
दुश्वारिये - रहो^४ सितमे - हमरहां^५ न पूछ

* * * *

शये - वसाल^६ में मूनस^७ गया है वन तकिया
हुआ है मृजन्ते - आरामे - जानोतन^८ तकिया
खिराज चादशहे - चीं से क्यों न माँगू आज
कि वन गया है खमे - जाद^९, पुरशिकन^{१०} तकिया
वना है तरतरा - गुलहाय - यास्मी^{११} विस्तर
हुआ है दस्तरा - नसरीनो - नस्तरन^{१२} तकिया
फरोगे - हुस्न से रौशन है ख्वावगाह तमाम
जो रास्ते ख्वाव है परचीं, तो परन तकिया
मजा मिले कहो क्या खाक साथ सोने का
रखे जो बीच में वह शोखे सीमतन तकिया

१. चमकता हुआ सूरज, २. छः दिशाएं, ३. विवाद-गृह, ४. मार्ग की कठिनाई, ५. हमरहां, ६. मिलन-रात्रि, ७. साथी, ८. जान और तन के लिए आराम का साधन, ९. माथे की ल्योरी, १०. सलवारों वाला, ११. यास्मी के फूलों का तन्ना, १२. नसरीन और नस्तरन नाम के फूलों का गुलदस्ता ।

अगरचे था यह इरादा मगर खुदा का शुक्र
 उठा सका न नज़ाकत से गुलबदन तकिया
 हुआ है काट के चादर को नागहाँ^१ गायब
 अगरचे ज़ानूरा नल^२ पर रखे दमन तकिया
 व ज़वे - तेशा^३ यह इस वास्ते हलाक हुआ
 किजवे - तेश पे रखता था कोहकन तकिया^४
 यह रात भर का है हंगामा सुबह होने तक
 रखो न शम्भ्र पर ऐ अहले - अंजमन तकिया
 अगरचे फेंक दिया तुमने दूर से लेकिन
 उठाये क्योंकि यह रंजूरे - खस्ता तने^५ तकिया
 गुश आगया जो पस - अज़ - क़ल^६ मेरे कातिल को
 हुई फिर उसको मेरी नाशे - वे - क़ून तकिया
 शवे - फिराक^७ में यह हाल है आज़ीयत^८ का
 कि साँप फर्श है और साँप का है मन तकिया
 खा^९ रखो न रखो, था जो लफ़्ज़ तकिया - कलाम
 अब उसको कहते हैं अहले - सुखन सुखन - तकिया
 हम और तुम फलके - पीर^{१०} जिसको कहते हैं
 फ़कीर 'ग़ालिब' मस्की का है कुहन^{११} तकिया

* * * * *

सद - जल्वा^{१२} खूबसूरत है जो मिज़गां उठाइये
 ताक़त कहां कि दीद^{१३} का एहसां उठाइये

१. सहसा, २. नल की जाँच, ३. तेशे की चोट से, ४. भरोसा, ५. दुर्बल
 शरीर; रोगी, ६. बल्ल के बाद, ७. विगयोग-रात्रि, ८. पीड़ा, ९. उचित,
 १०. बढ़ा आस्मान, ११. पुराना, १२. सौ आकर्षणों के साथ, १३. देखना ।

हैं संग पर वराते - मन्त्राशे - जुनूने - इश्क^१
यानी हनूज^२ मिन्नते - तिफलां^३ उठाइये
दीवार, वारे - मिन्नते - मजदूर^४ से हैं ख़म
ऐ ख़ानुमां - ख़राब^५ न एहसां उठाइये
या मेरे ज़ल्मे - रश्क को रुस्वा^६ न कीजिये
या परदा^७ - तवस्सुमे - पिन्हां^८ उठाइये

* * * * *

मैं हूं मुश्ताक़े - जफ़ा^९ मुझ पे जफ़ा और सही
तुम हो वे बेदाद^{१०} से ख़ूश इससे सवा और सहा
ग़ैर की मर्ग^{११} का ग़म किसलिए ऐ ग़ैरते - माह^{१२}
हैं हविस - पेशा^{१३} बहुत वो न हुआ और सही
तुम हो बुत^{१४} फिर तुम्हें पिंदारे - खुदाई^{१५} क्यों है
तुम खुदावन्द कहलाओ ख़दा और सही
हुस्न में हर से बढ़कर नहीं होने के कमी
आपका शेवण - आंदाज़ो - अदा और सही
तेरे कूचे का है मायल^{१६} दिले - मुज़तर^{१७} मेरा
कावा इक और सही, किवला - नुमा और सही
कोई दुनिया में मगर वाग़ नहीं है वाअज़^{१८}
खुल्द^{१९} भी वाग़ है ख़ैर आचो - हवा और सही

१. प्रेम के वन्माद का गुञ्जारा, २. वन्चों का पहसान, ३. मजदूर के पहसान का बोझ, ४. जिसका घर बरबाद हो चुका हो, ५. बदनाम, ६. छिपी मुस्कुराहटों का पर्दा ७. निष्पुरुता का इच्छुक, ८. अत्याचार, ९. मृत्यु, १०. जिसके सौंदर्य से चाँद भी शर्माये, ११. वासना के दास, १२. माराकू; सुन्दर व्यक्ति, १३. खुदाई का घमण्ड, १४. प्रवृत्त, १५. विकल मन, १६. उपदेशक, १७. स्वर्ग ।

क्यों न फिरदोस^१ में दोज़ख^२ को मिलालें, यारव
 सैर के वास्ते थोड़ी - सी फिज़ा और सही
 मुश्क़ो वो दो कि जिसे खा के न पानी मागं
 ज़हर कुछ और सही, आवे - बका^३ और सही
 मुश्क़ से 'ग़ालिव' यह अल्लाई ने ग़ज़ल लिखवाई,
 एक वेदाद - गरे - रंज - फ़जा^४ और सही

* * * * *

मस्जिद के ज़ेरे - साया ख़राबात चाहिये
 मैं पास आंख़ किबलए - हाजात^५ चाहिये
 आशिक़ हुए हैं आप भी इक़ और शख्स पर
 आख़िर सितम की कुछ तो मकाफ़ात^६ चाहिये
 दे दाद ऐ फ़लक ! दिले - हसरत - परस्त की
 हां कुछ न कुछ तलाफ़िए - माफ़ात^७ चाहिये
 सीखे हैं मैरुख़ों^८ के लिये हम मुसन्विरी^९
 तक़रीब^{१०} कुछ तो बहरे - मुलाक़ात चाहिये
 मैं से ग़रज़ निशात है किस रूसियाह^{११} को
 इक़ - गूना^{१२} बेखदी मुझे दिन रात चाहिये
 है रंगे - लालओ - गुलो - नसरीं जुदा - जुदा
 हर रंग में बहार का अस्वात^{१३} चाहिये
 सर पाए - ख़ुम^{१४} पे चाहिये हंगामे-बेखदी^{१५}
 रू^{१६} सूए - किब्ला बक्ते - मुनाजात^{१७} चाहिये

१. स्वर्ग, २. नरक, ३. अमृत, ४. दुख बढ़ाने वाला, ५. दूसरों की आवश्यकताएं पूरी करने वाला, ६. बदला, ७. गुजरी हुई बात की पूर्ति, ८. चांद सी सूरत वाले, ९. चित्रकारी, १०. बहाना, ११. कलमुंहा, १२. एक प्रकार की, १३. प्रमाण, १४. शराब के मटके के पांव, १५. नशे के समय, १६. मुंह, १७. प्रार्थना ।

नश्वो - नुमा है अस्ल से 'गालिव' फरोअ' को
खामोशी ही से निकले है जो वात चाहिये

* * * *

बिसाते - इज्ज में था एक दिल यक कतरा - खूं वो भी
सो रहता है वअन्दाजे चकीदन' सरनिगूं वो भी
रहे उस शोख से आजुर्दा' हम चन्दे - तकल्लुफ़ से
तकल्लुफ़ बरतरफ़ था एक अदान्जे - जुनूं वो भी
खयाले - मर्ग कब तस्की दिले - आजुर्दा को बरख़ो
मेरे दामे - तमन्ना में है इक सेंदे - जुबूं वो भी
न करता काश नाला, मुझको क्या मालूम था हमदम
कि होगा वाइसे - अफ़ज़ाइशे ददें - दस्तूं वो भी
न इतना बुरिंशे - तेगे - जफ़ा' पर नाज़ फ़रमाओ
मेरे दरियाए - बेताबी में है इक मौजे - खूं वो भी
मए इशरत की ख़्वाहिश साकिए - गर्दूं से क्या कीजे
लिये बैठा है इक दो चार जामे - वाज़गूं वो भी
मेरे दिल में है 'गालिव' शौक़े - वस्लो - शिकवए - हिजरां
खुदा वो दिन करे जो उससे मैं यह भी कहूं वो भी

* * * *

है वज़मे - बुतां में सुखन आजुर्दा' - लवों से
तंग आये हैं हम ऐसे खुशामद तलवों से

१. दृष्टियों और पत्तों का विकास जड़ के कारण होता है, २. चटकना,
३. नाराज़, ४. कमजोर शिकार, ५. भीतरी दर्द, ६. अत्याचार रूपी तलवार
की धार, ७. आसमान का साक़ी, खुदा; ८. आँधे प्याले, (आकाश को आँधा
प्याला कहते हैं और इस्लाम के अनुसार आकाश सात हैं।) ९. क्रोध।

है दौरे - क़दह^१ वज्हे परीशानिए - सहवा^२
 एक बार लगादो खुमे - मैं मेरे लवों से
 रिन्दाने - दरे - मैकदा, गुस्ताख हैं ज़ाहिद
 जिन्हार न होना तरफ़ इन बेअदवों से
 वेदादे - वफ़ा देखा कि जाती रही आखिर
 हर - चन्द मेरी जान को था रक्त^३ लवों से

* * * * *

ता, हमको शिकायत की भी वाक़ी न रहे जा
 सुन लेते हैं जो ज़िक्र हमारा नहीं करते
 'ग़ालिव' तिरा अहवाल सुना देंगे हम उनको
 वो सुन के बुलालें यह इज़ारा^४ नहीं करते

* * * * *

ग़मे - दुनिया से गर पाई भी फ़ुर्सत सर उठाने की
 फ़लक़ का देखना, तक़रीब तेरे याद आने की
 खुलेगा किस तरह मज़मूं मेरे मक़तूब^५ का यारव
 क़सम खाई है उस काफ़िर ने काग़ज़ के जलाने की
 लिपटना परनियां^६ में शोले - आतिश का आसां है
 बले मुश्किल है हिकमत, दिल में सोजे - ग़म छिपाने की
 उन्हें मंज़ूर अपने ज़ख़्मियों का देख आना था
 उटे थे सैरे - गुल को, देखना शोख़ी वहाने की

१. प्याले के दौर, २. शराब, ३. लगाव, ४. ठेका, ५. पत्र, ६. मखमल ।

हमारी सादगी थी इल्तफ़ाते - नाज़^१ पर मरना
 तेरा आना न था - ज़ालिम मगर तम्हीद^२ जाने की
 लकड़कोवे - हवादिस^३ का तहम्मुल^४ कर नहीं सकती
 मेरी ताक़त कि ज़ामिन थी बुतों के नाज़ उठाने की
 कहें क्या खूबिए - औज़ाए - अबनाए - ज़मा^५ 'ग़ालिव'
 वदी की उसने जिससे, की थी हमने वारहा नेकी

* * * * *

हासिल से हाथ धो बैठ ऐ आरजू - ख़रामी
 दिल जोशे गिरिया में है डूबी हुई असामी
 उस शम्भ्र की तरह से जिसको कोई बुझादे
 मैं भी जले हुवों में हूँ दागे - ना - तमामी

* * * * *

क्या तंग हम सितमज़दगां का जहान है
 जिसमें कि एक बैज़ए - मोर^६ आसमान है
 है कायनात को हरकत तेरे ज़ौक से
 परती^७ से आफ़ताव के ज़रें में जान है
 हालांकि हैं यह सैलिए - ख़ारा^८ से लालारंग
 ग़ाफ़िल को मेरे शीशे पे मैं का गुमान है
 की उसने गर्म सीनए - अहले - हविस में जां
 आवे न क्यों पसन्द कि उगड़ा मकान है

१. प्रेमी की कृपा, २. प्रारंभ, ३. मुसीबतों की लात खाये हुए, ४. सहन,
 ५. दुनिशवालों के स्वभाव की विशेषता, ६. चींटी का अंडा, ७. प्रतिबिंब,
 ८. पत्थर की चोट।

क्या खूब तुमने ग़ैर को बोसा नहीं दिया
 वस चुप रहो, हमारे भी मुंह में जुवान है
 बैठा है जो कि सायए - दीवारे - यार में
 फ़रमां - रवाए - किशवरे - हिन्दोस्तान^१ है
 हस्ती का एतवार भी ग़म ने मिटा दिया
 किससे कहूं कि दाग़, जिगर का निशान है
 है वारे - एतमादे - वफ़ादारी इस क़दर
 'ग़ालिब' हम इसमें खुश हैं कि नामेहरवान है



दर्द से मेरे है तुम्हको बेकरारी हाय हाय
 क्या हुई ज़ालिम तेरी ग़फलत - शाअरी^२ हाय हाय
 तेरे दिल में गर न था आशोबे - ग़म^३ का हौसला
 तूने फिर क्यों की थी मेरी ग़मगुसारी हाय हाय
 क्यों मेरी ग़मख़वारगी का तुम्हको आया था ख़याल
 दुश्मनी अपनी थी मेरी दोस्तदारी हाय हाय
 उम्र भर का तूने पैमाने - वफ़ा बाँधा तो क्या
 उम्र को भी तो नहीं है पायेदारी^४ हाय हाय
 ज़हर लगती है मुझे आवो - हवाए - ज़िन्दगी
 यानी तुम्हसे थी उसे नासाज़गारी हाय हाय
 गुलफ़िशानी - हाये नाज़े - जल्वा को क्या हो गया
 खाक पर होती है तेरी लालाकारी हाय हाय

१. हिन्दोस्तान की सल्तनत का शासक, २. उदासीनता, ३. ग़म सहना,
 ४. स्थिरता ।

शर्म - रुस्वाई से, जा छुपना नकावे - खाक में
 खत्म है उल्फत की तुफ़ पर परदादारी हाय हाय
 खाक में नामूसे - पैमाने - मुहव्वत^१ मिल गई
 उठ गई दुनिया से राहो - रस्मे - यारी हाय हाय
 हाथ ही तेग़ - आज़मा का काम से जाता रहा
 दिल पे इक लगने न पाया ज़ख़म - कारी^२ हाय हाय
 किस तरह काटे कोई शव - हाये - तारे - वर्षकाल^३
 है नज़र ख़ू - करदए - अख़्तर शुमारी^४ हाय हाय
 गोश^५ मेहज़रे - पयामो^६ चश्म मेहक़्मे - जमाल
 एक दिल, तिस पर ये नाउम्मीदवारी, हाय हाय
 इश्क़ ने पकड़ा न था, 'ग़ालिव', अभी वहशत का रंग
 रह गया, था दिल में जो कुछ ज़ौक़े - ख़वारी हाय हाय

* * * * *

सरगश्तगी^१ में, आलमे - हस्ती से यास है
 तस्की को दे नवेद, कि मरने की आस है
 लेता नहीं मेरे दिले - आवारा की ख़बर
 अब तक वो जानता है, कि मेरे ही पास है
 कीजे वयां सुख़रे - तवे - ग़म कहां तलक
 हर मूर मेरे वदन पे जुवाने - सिपास^२ है
 है वो गुख़रे - हुस्न से वेगानए - वफ़ा
 हर चन्द उसके पास दिले - हक़ शनास है

१. प्रेम के वचन की प्रतिष्ठा, २. गहरा घाव, ३. वरसात की अंधेरी रात, ४. तारे गिनने की आदत, ५. कान, ६. संदेश सुनने से लाचार, ७. वन्माद ; सिर फिरना, ८. रुआं, ९. प्रशंसा करने वाला जिद्दा ।

पी, जिस क़दर मिले, शवे - मेहताव - में शराव
 इस बलग़मी मिज़ाज को गर्मी ही रास है
 हर इक मकान को है मकीं से शरफ़, 'असद'
 मजनूँ जो मर गया है, तो जंगल उदास है

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

गर ख़ामुशी से फ़ायदा, इख़फ़ाए - हाल^१ है
 खुश हूँ, कि मेरी बात समझनी मुहाल है
 किसको सुनाऊँ हसरते - इज़हार का गिला
 दिल फ़र्दे - ज़मो - ख़र्च जुवां - हाए - लाल है
 किस पर्दे में है आइना परदाज़, ऐ खुदा
 रहमत, कि उज़रख़्वाह लवे - बेसवाल है
 है है, खुदा न ख़्वास्ता वो और दुश्मनी
 ऐ शौक़, मुनफ़इल,^२ यह तुझे क्या ख़याल है
 वहशत पे मेरी अर्सए - आफ़ाक़^३ तंग था
 दरिया ज़मीन को अरके - इनफ़िआल^४ है
 हस्ती के मत फ़रेव में आजाइयो 'असद'
 आलम तमाम हल्क़ए - दामे - ख़याल^५ है

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

एक जा हर्फ़ें - बफ़ा लिक्खा था सो भी मिट गया
 जाहिरा काग़ज़ तेरे ख़त का ग़लत बरदार है

१. हाल का छिपना, २. लज्जित, ३. दुनिया का विस्तार, ४. पश्चात्ताप का पसीना, ५. ख़याल का चक्कर ; माया ; झलना ।

जी जले जौंके - फ़ना की नातमामी पर न क्यों
 हम नहीं जलते, नफ़स हर चन्द आतिशवार है
 आग से, पानी में बुझते वक़्त, उठती है सदा
 हर कोई दरमान्दगी^१ में नाले से नाचार है
 है वही वदमस्ति^२ए - हर ज़र्रे का खुद उज़्रख्वाह
 जिसके जल्वे से ज़मीं ता आसमां सरशार है
 मुझसे मत कह, "तू हमें कहता था अपनी ज़िन्दगी"
 ज़िन्दगी से भी मेरा जी इन दिनों बेज़ार है
 आंस की तस्वीर सरनामे^३ पे खेंची है, कि ता
 तुझ पे खुल जावे, कि इसको हसरते - दीदार है

* * * * *

पीनस में गुज़रते हैं जो कूचे से वो मेरे
 कंधा भी कहारों को बदलने नहीं देते

* * * * *

मेरी हस्ती फ़ज़ाए - हैरत आवादे - तमन्ना है
 जिसे कहते हैं नाला वो इसी आलम का अन्का है
 ख़ज़ां क्या, फ़स्ले - गुल कहते हैं किसको, कोई मौसम हो
 वही हम हैं, क़फ़स है, और मातम वालो - पर का है
 वफ़ाए - दिलवरां है इत्तफ़ाक़ी, वरना ऐ हमदम
 असर फ़रियादे - दिलहाए - हज़ी^१ का, किसने देखा है

१. थकन, २. खेत पर लिखा हुआ पता, ३. उदास ; व्याकुल ।
 ६६

न लाई शोखिए - अन्देशा तावे - रंजे - नौमीदी^१
 कफे - अफ़सोस मलना अहदे - तजदीदे - तमन्ना^२ है

* * * * *

रहम कर ज़ालिम, कि क्या वूदे - चरागे - कुशता^३ है
 नब्जे - बीमारे - वफ़ा, दूदे - चरागे - कुशता है
 दिल लगी की आरजू, बेचैन रखती है हमें
 वरना यां बेरौनकी, सूदे - चरागे - कुशता है

* * * * *

इश्क़ मुझको नहीं, वहशत ही सही
 मेरी वहशत, तेरी शोहरत ही सही
 क़त्ल कीजे न ताल्लुक़ हम से
 कुछ नहीं है, तो अदावत ही सही
 मेरे होने में हैं क्या रुसवाई ?
 ऐ, वो मजलिस नहीं, ख़लवत ही सही
 हम भी दुश्मन तो नहीं हैं अपने
 ग़ैर को तुझसे मुहब्बत ही सही
 अपनी हस्ती ही से हो, जो कुछ हो
 आगही^४ गर नहीं गुफ़लत ही सही
 उम्र हर चन्द कि है चर्क़ - ख़राम^५
 दिल के ख़ू करने की फ़ुर्सत ही सही
 हम कोई तर्के - वफ़ा करते हैं ?
 न सही इश्क़, मुसीबत ही सही

१. निराशा का रंज, २. फिर तमन्ना करने की प्रतिष्ठा, ३. बुझा हुआ
 चिराग, ४. चेतना, ५. विजली की तरह तेज चलने वाली ।

कुछ तो दे, ऐ फलके - ना - इंसान
 आहो - फरियाद की लम्बत ही सही
 हम भी तस्लीम की खू डालेंगे
 बेनियाज़ी तेरी आदत ही सही
 चार से छेड़ चली जाय, 'असद'
 गर नहीं वस्ल, तो हसरत ही सही

* * * *

है 'आरमीदगी' में निकोहिश^१ वजा मुझे
 सुन्हे - वतन है खन्दए - दन्दा - नुमा मुझे
 ढूँढे है उस मुग़निए - आतिश - नफ़स^२ को जी
 जिसकी सदा हो जल्बए चक्रे - फ़ना - मुझे
 मस्ताना तै करूं हूं रहे - वादिए - खयाल
 ता वाज़गश्त^३ से न रहे मुद्आ मुझे
 करता है वस कि वाग़ में तू बेहिजावियां
 आने लगी है नक़हतें - गुल से हया मुझे
 खुलता किसी पे क्यों मेरे दिल का मुआमला
 शेरों के इन्तख़ाब ने रुखा किया मुझे

* * * *

ज़िन्दगी अपनी जब इस शक़ल से गुज़री 'ग़ालिब'
 हम भी क्या याद करेंगे, कि खुदा रखते थे

१. आरामतलवी, २. कमज़ोरी; निंदा, ३. आग बरसाने वाला गायक, ४. पलट आना; वापसी।



उस वज्रम में मुझे नहीं बनती हया किये
 बैठा रहा अगरचे इशारे हुआ किये
 दिल ही तो है सियासते - दरवां से डर गया
 मैं, और जाऊँ दर से तेरे, बिन सदा किये
 रखता फिरूँ हूँ, खिरक़ओ - सज्जाद^१ रहने - मैं
 मुदत हुई है दावते - आवो - हवा किये
 वेसफ़ा^२ ही गुज़रती है, हो गरचे उम्रे - ख़िज़र
 हज़रत भी कल कहेंगे, कि हम क्या किया किये
 मक़दूर हो तो खाक से पूछूँ कि, ओ लईम^३
 तूने वो गंज - हाए - गिराँमाया^४ क्या किये
 किस रोज़ तोहमते न तराशा किये अदू
 किस दिन हमारे सर पे न आरे चला किये
 सोहबत में ग़ैर की, न पड़ी हो कहीं ये खू
 देने लगा है वोसे वग़ैर इल्लिजा किये
 ज़िद की है और बात मगर खू बुरी नहीं
 भूले से उसने सैकड़ों वादे वफ़ा किये
 'ग़ालिव', तुम्हीं कहो, कि मिलेगा जवाब क्या
 माना कि तुम कहा किये और वो सुना किये



देखना किस्मत, कि आप अपने पे रश्क आजाये है
 मैं उसे देखूँ, भला कब मुझसे देखा जाये है

१. नमाज़ पढ़ने की चटाई और पहनावा, २. व्यर्थ, ३. कंजूस, ४. बड़े-
 बड़े खजाने अर्थात् महान् व्यक्तित्व ।

हाथ धो' दिल से, यही गर्मी गर अन्दरों में है
 आवगीना,^१ तुन्दिए - सहवा' से पिघला जाये है
 गैर को, यारव ! वो क्योंकर मन्ए - गुस्ताखी करे
 गर हया भी उसको आती है, तो शर्मा जाये है
 शौक को यह लत, कि हर दम नाला खींचे' जाइये
 दिल की वो हालत, कि दम लेने से घबरा जाये है
 दूर चश्मे - बद ! तेरी बज्मे - तरब' से, वाह, वाह
 नग्मा हो जाता है, वां गर नाला मेरा जाये है
 गरचे है तजें - तगाफल, पर्दादारे - राजे - इश्क
 पर हम ऐसे खोये जाते हैं, कि वो पा जाये
 उसकी बज्म आराइयां सुनकर, दिले - रंजूर, थां
 मिस्ले - नक्शे - मुद्आए - गैर' बैठा जाये है
 होके आशिक, वो परी रख, और नाजूक बन गया
 रंग खुलता जाये है, जितना कि उड़ता जाये है
 नक्श को उसके, मुसव्विर' पर भी क्या क्या नाज है
 खींचता है जिस क़दर, उतना ही खिंचता जाये है
 साया मेरा, मुक्तसे मिस्ले - दूद' भागे है, 'असद'
 पास मुक्त अतिश - बजाँ' के, किससे ठहरा जाये है

* * * * *

कसरत आराइए - वहदत है परस्तारिए - वहम
 कर दिया काफ़िर, इन असनामे - खयाली" ने मुझे

-
१. खो बैठना, २. चिन्तन, ३. शीशे का प्याला, ४. शराब की गर्मी,
 ५. रदन करना, ६. खुशी की महफ़िल, ७. दूसरे के प्रेम की छाप के समान,
 ८. चित्रकार, ९. धुरंधरे के समान, १०. जिसके तन में आग भड़कती हो,
 ११. काल्पनिक प्रतिमा ।

हविसे - गुल का तसच्चुर^१ मैं खटका न रहा
अजब आराम दिया, वेपरो - वाली^२ ने मुझे

* * * *

उग रहा है दरो - दीवार से सञ्जा, 'गालिव'
हम वयावां में हैं और घर में वहार आई है

* * * *

सादगी पर उसकी, मर जाने की हसरत, दिल में है
वस नहीं चलता, कि फिर खंजर कफ़े - कातिल^३ में है
देखना तक्ररीर की लङ्गत, कि जो उसने कहा
मैंने ये जाना, कि गोया ये भी मेरे दिल में है
गरचे है किस किस बुराई से, वले वा - ई - हमा^४
ज़िक्र मेरा, मुझसे बेहतर है, कि उस महफ़िल में है
वस, हुजूम - नाउमीदी, खाक में मिल जायगी
ये जो इक लङ्गत हमारी सड़ए - वे - हासिल^५ में है
रंजे - रह क्यों खींचिये ? वामान्दगी से इश्क़ है
उठ नहीं सकता, हमारा जो क़दम मंज़िल में है
जल्वा - राज़े - आतिशे - दोज़ख^६, हमारा दिल सही
फ़ितनाए - शोरे - क़यामत, किसके आचो - गिल^७ में है
है दिले - शोरीदए^८ 'गालिव,' तिलिस्मे पेचो - ताव
रहम कर अपनी तमन्ना पर, कि किस मुश्किल में है

१. कल्पना, २. पंखों के न होने ने, ३. कातिल के हाथ, ४. इसके वावजूद, ५. व्यर्थ प्रयास, ६. नरक की आग से परिचित, ७. मिट्टी, ८. पागल दिल ।

* * * * *

दिल से तेरी निगाह निगर तक उतर गई
 दोनों को इक अदा में रज़ामन्द कर गई
 शक^१ हो गया है सीना, खुशा लज्जते - फिराक^२
 तकलीफ़े पर्दादारिए ज़ख्मे - जिगर गई
 वो चादए - शवाना^३ की सर - मस्तियां कहां
 उठिये बस अब, कि लज्जते - ख्वावे - सहर गई
 उड़ती फिरे है खाक मेरी, कूर - यार में
 वारे अब ऐ हवा, हविसे - वालो पर गई
 देखो तो, दिल - फरेविए अन्दाजे - नक्शे पा
 मौजे - खिरामे - यार भी, क्या गुल कतर गई
 हर चुलहविस^४ ने हुस्न - परस्ती - शिआर^५ की
 अब आवरूए - शेवए - अहले - नज़र^६ गई
 नज़ारे ने भी, काम किया वां नकाव - का
 मस्ती से हर निगाह तेरे रुख पर बिखर गई
 फ़रदा - ओ - दी^७ का तफ़रका^८ एक बार मिट गया
 कल तुम गये, कि हम पे क़यामत गुज़र गई
 मारा ज़माने ने, असदुल्ला खां, तुम्हें
 वो बलबले कहां, वो जवानी किधर गई

* * * * *

तस्की को हम न रोयें, जो ज़ौके - नज़र मिले
हराने - खुल्द में तेरी सूरत मगर मिले

१. फट गया. २. वियोग का आनन्द, ३. वासी शराब, ४. व्यसनी,
 ५. सौन्दर्य-पूजा को आदत बना लिया, ६. हुस्न की परख करने वालों की
 शक्ति, ७. कल परसों, ८. अंतर ।

अपनी गली में, मुझको न कर दफ़न, वादे - क़त्ल
मेरे पते से ख़ल्क़ को क्यों तेरा घर मिले
साक़ीगरी की शर्म करो आज वरना हम
हर शव पिया ही करते हैं मैं, जिस क़दर मिले
तुमसे तो कुछ कलाम नहीं, लेकिन ऐ नदीम
मेरा सलाम कहियो, अगर नामावर मिले
तुमको भी हम दिखायें, कि मजनूँ ने क्या किया
'फ़ुर्सत कशाक़शे - ग़मे - पिन्हां' से गर मिले
लाज़िम नहीं, कि ख़िज़्र की हम पैरवी करें
माना कि इक़ जुर्ग़ हमें हम - सफ़र मिले
ऐ साकिनाने - कूचए - दिलदार देखना
तुमको कहीं जो ग़ालिवे - आशुफ़ता सर मिले

* * * * *

कोई दिन, गर ज़िन्दगानी और है
अपने जी में हमने ठानी और है
आतिशे - दोज़ख़^१ में, ये गर्मी, कहां
सोज़े - ग़म - हाए - निहानी^२ और है
चारहा देखी हैं उनकी रंजिशें
पर कुछ अब के सर - गरानी^३ और है
दे के ख़त, मुंह देखता है नामावर
कुछ तो पैग़ामे - जुवानी और है
कातए - आमार^४ हैं अक्सर नुज़ूम^५
वो बलाये - आसमानी और है

१. आंतरिक पीड़ा की व्याकुलता, २. नरक की आग, ३. आंतरिक
संताप की ज़नन, ४. नाराज़ी, ५. जान लेने वाले, ६. सितारे ।

हो चुकीं, 'गालिव', बलायें सब तमाम
 एक मर्गे - नागहानी और है

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

कोई उम्मीद बर नहीं आती
 कोई सुरन नज़र नहीं आती
 मौत का एक दिन मुण्डेयन^१ है
 नींद क्यों रात भर नहीं आती
 आगे आती थी हाले - दिल पे हँसी
 अब किसी बात पर नहीं आती
 जानता हूँ सबावे - ताअतो - ज़ोहद^२
 पर तबीअत इधर नहीं आती
 है कुछ ऐसी ही बात, जो चुप हूँ
 बरना क्या बात कर नहीं आती
 क्यों न चीखूं, कि याद करते हैं
 मेरी आवाज़ गर नहीं आती
 दागे - दिल गर नज़र नहीं आता
 वू भी ऐ चारागर नहीं आती
 हम वहां हैं, जहां से हमको भी
 कुछ हमारी ख़बर नहीं आती
 मरते हैं आरज़ में मरने की
 मौत आती है, पर नहीं आती

१. निश्चित, २. ईश्वर-पूजा और धार्मिककर्म का पुण्य ।

कावा किस मंह से जाओगे 'गालिव'
 शर्म तुमको मगर नहीं आती

* * * * *

दिले - नादां, तुम्हे हुआ क्या है
 आखिर इस दर्द की दवा क्या है
 हम हैं मुश्ताक और वो बेजार है
 या इलाही, ये माजरा क्या है
 मैं भी मुंह में जवान रखता हूँ
 काश, पृछों, कि "मुद्आ क्या है?"
 जबकि तुम्हें विन नहीं कोई मौजूद
 फिर ये हंगामा ऐ खुदा क्या है
 ये परीचेहरा लोग कैसे हैं
 गुमज़ओ - अश्वओ - अदा क्या है
 शिकने - जल्फे - अम्बरी' क्यों है
 निगाहे - चश्मे - सुर्मा - सा क्या है
 सव्जओ गुल कहां से आये हैं
 अब क्या चीज़ है, हवा क्या है
 हमको उनसे, वफ़ा की है उम्मीद
 जो नहीं जानते, वफ़ा क्या है
 "हां भला कर तेरा भला होगा"
 और दर्वेश की सदा क्या है
 जान तुम पर निसार करता हूँ
 मैं नहीं जानता, दुआ क्या है

मैंने माना कि कुछ नहीं 'गालिव'
मुफ्त हाथ आये, तो बुरा क्या है

* * * * *

फिर कुछ इक दिल को बेक़रारी है
सीना जोयाए - ज़ख्मे - कारी है
फिर ज़िगर खोदने लगा नाखुन
आमदे - फ़स्ले - लालाकारी है
क़िवलए - मक़सदे - निगाहे - नियाज़ है
फिर वही परदे - अमारी है
चश्मे - दल्लाल जिसे - रुस्वाई है
दिल ख़रीदारे - ज़ौके - ख़वारी है
वही सदरंग नाला - फ़रसाई है
वही सद - गूना अश्क़वारी है
दिल हवाए - ख़रामे - नाज़ से फिर
महशारिस्ताने - बेक़रारी है
जल्वा फिर अज़े - नाज़ करता है
रोज़े बाज़ारे जां - सिपारी है
फिर उसी बेवफ़ा पे मरते हैं
फिर वही ज़िन्दगी हमारी है
फिर खुला है दरे - अदालते - नाज़
गर्म बाज़ारे - फ़ौजदारी है

१. गहरे घाव का इच्छुक, २. प्यार भरी आँख का अभिप्राय, ३. बदनामी की सामग्री, ४. बदनामी के उन्माद का खरीदार, ५. रुदन करना, ६. सौ तरह, ७. शीघ्र बहाना, ८. जान न्योछावर करना ।

हो रहा है जहान में अंधेर
 जुल्फ़ की फिर सरिश्ता - दारी है
 फिर दिया पारए - जिगर ने सवाल
 एक फ़र्यादो - आहो - ज़ारी है
 फिर हुये हैं गवाहे - इश्क़ तलव
 अश्क - वारी का हुक्म जारी है
 दिलो - मिज़गां का जो मुक़दमा था
 आज फिर उसकी रूवकारी है
 वे खुदी वे सब नहीं, 'ग़ालिव'
 कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है

* * * * *

जुनू तोहमत - कशे - तस्कीं^१ न हो, गर शादमानी की
 नमक - पाशे - ख़राशे - दिल^२ है, लज़्ज़त जिन्दगानी की
 कशाकशहाए - हस्ती से करे क्या सईए-आज़ादी^३
 हुई जंजीर, मौजे - आव को फुर्सत रवानी की
 पस-अज़-मुर्दन^४ भी, दीवाना ज़ियारत - गाहे - तिफ़लां है
 शरारे - संग^५ ने तुरवत^६ पे मेरी गुलफ़िशानी की

* * * * *

निकोहिश है सज़ा, फरियादिए - वेदादे - दिलवर^७ की
मन्नादा^८ ख़न्दए - दन्दां - नुमा^९ हो सुन्हो - महशर^{१०} की

१. सांत्वना का आरोप लगाना, २. दिल के घाव पर नमक छिड़कना,
 ३. स्वतंत्रता का प्रयास, ४. मरने के पश्चात्, ५. पत्थर की भाग, ६. कब्र,
 ७. प्रेमी की निष्ठुरता, ८. ऐसा न हो, ९. खिलखिलाकर हँसना, १०. क्रयामत
 की सुबह ।

रगे - लैला को खाके - दश्ते - मजनूं, रेशगी बख्शो
 अगर वो दे वजाये दाना दहकां^१, नोक नशतर की
 परे - परवाना, शायद वादवाने - किश्तिए - मै था
 हुई मजलिस की गर्मी से रवानी दौरे - सागर की
 करूं वेदादे - जौके - पुरफिशानी अर्ज, क्या कुदरत
 कि ताकत उड़ गई, उड़ने से पहले, मेरे शहपर^२ की
 कहां तक रोजं, उसके खेमे के पीछे, क्यामत हैं
 मेरी किस्मत में, यारच, क्या न थी दीवार पत्थर की

* * * * *

वे एतदालियों से, सुबुक^३ सब में हम हुए
 जितने ज़ियादा हो गये, उतने ही कम हुए
 पिन्हां था दामे - सरत, करीब आशियान के
 उड़ने न पाये थे, कि गिरफ्तार हम हुए
 हस्ती हमारी, अपनी फना पर दलील है
 यां तक मिटे, कि आप हम अपनी क़सम हुए
 सरज़्ती - क़शाने - इश्क^४ की, पूछे है क्या ख़बर
 वो लोग रफ़ता रफ़ता सरापा^५ अलम^६ हुए
 तेरी वफ़ा से क्या हो तलाफ़ी, कि दहर में
 तेरे सिवां भी, हम पे बहुत से सितम हुए
 लिखते रहे, जुनूं की हिकायाते - खूचकां^७
 हर चन्द उसमें हाथ हमारे क़लम हुए

१. किसान, २. पंख, ३. लज्जित, ४. प्रेम का दुःख सहने वाले,
 ५. सिर से पांव तक, ६. दुःख, ७. रक्त-रंजित कहानी।

अल्ला - रे तेरी तुन्दिए - खू, जिसके वीम^१ से
 अज्जाए - नाला^२ दिल में मेरे रिक्के - हम हुए
 अहले - हवस की फतह है, तर्के - नवर्दे - इश्क^३
 जो पांव उठ गये, वही उनके अलम हुए
 नाले अदम में चन्द हमारे सुपुर्द थे
 जो वां न खिंच सके, सो वो यां आके दम हुए
 छोड़ी, 'असद' न हमने गदाई में दिल - लगी
 साइल^४ हुए, तो आशिके - अहले - करम हुए

* * * * *

जों न नक्कदे - दागे - दिल की करे शोला पास्वानी
 तो फसुर्दगी निहां है, व कमीने - बेजुबानी^५
 मुझे उससे क्या तवक्को वजमानए - जवानी
 कभी कोदकी^६ में जिसने, न सुनी मेरी कहानी
 यों ही दुख किसी को देना नहीं खूब वरना कहता
 कि मेरे अदू को, यारव ! मिले मेरी जिन्दगानी

* * * * *

जुल्मत - कदे^७ में मेरे, शवे - ग़म का जोश है
 इक शम्श है दलीले - सहर, सो खमोश है
 नै मुजदए - विंसाल^८ न नज़ाराए - जमाल
 मुद्त हुई, कि आशिए - चश्मो - गोश^९ है

१. भय, २. रुदन के तत्त्व, ३. प्रेमोन्माद को त्याग देना, ४. भिखारी,
 ५. मूकता की घात में, ६. वचपन, ७. अंवेरा घर, ८. मिलन की शुभ सूचना,
 ९. कान और आंख में मिश्रता ।

मैंने किया है हुस्ने - खुद आरा को, बेहिजाव
 ऐ शौक, यां इजाजते - तस्लीमे - होश है
 गौहर को इक्दे - गर्दने - खूबा^१ में देखना
 क्या श्रीज^२ पर सिताराए गौहर फ़रोश है
 दीदारे - वादा, हौसलाए - साकी, निगाहे - मस्त
 बज़मे - खयाल मैकदाए - बे - ख़रोश^३ है

क़तआ

ऐ ताज़ा चारिदाने - विसाते - हवाए - दिल
 जिन्हार^४, अगर तुम्हें हविसे - नायओनोश^५ है
 देखो मुझे, जो दीदए - इवरत - निगाह हो
 मेरी सुनो जो गोशे - हकीक़त - नियोश^६ है
 साकी, बजल्वा दुश्मने - ईमानो - आगही
 मुतरिव^७, वनमा, रहजने - तमकीनो - होश है
 या शव को देखते थे कि हर गोशए - विसात
 दामाने - वाग़वानो - कफ़े - गुलफ़रोश है
 लुत्फ़े - ख़िरामे साकीओ ज़ौके सदाए - चंग^८
 यह जन्नते - निगाह, वो फिरदौसे - गोश है
 या सुह - दम जो देखिये आकर, तो बज़म में
 ने वो सुरूओ - सोज़ न जोशो - ख़रोश है
 दागे - फ़िराके - सोहवते - शव की जली हुई
 इक शम्अ रह गई है, सो वो भी ख़मोश है

१. सुन्दरियों के गले का हार, २. बुलन्दी, ३. बिना शोर की मधुराला,
 ४. कदाचित्, ५. खाना-पीना, ६. सच्ची बात सुनने वाला कान, ७. गायक,
 ८. बाजे की आवाज़।

आते हैं गैव से, ये मजामी खयाल में
 'गालिव', सरीरे - खामा^१ - नवाए - सरोश^२ हैं

* * * * *

न हुई गर मेरे मरने से तसल्ली न सही
 इम्तेहां और भी वाकी हो तो ये भी न सही
 खार खारे - अलमे - हसरते - दीदार तो है
 शौके - गुलचीने गुलिस्ताने तसल्ली न सही
 मै - परस्तां खुमे - मै मुंह से लगाये ही बने
 एक दिन गर न हुआ बज्म में साकी न सही
 नफ़से - कैस कि है चश्मो - चिरागे - सहरा
 गर नहीं शम्अ - सियाखानए लैला, न सही
 एक हंगामे पे मौकूफ है घर की रौनक
 नीहए - गुम^३ ही सही नःमए - शादी^४ न सही
 न सताइश^५ की तमन्ना न सिले की परवा
 गर नहीं हैं मेरे अशआर में मानी न सही
 इशरते - सोहबते - खूवां^६ ही ग़नीमत समझो
 न हुई, 'गालिव', अगर उम्रे - तबीई^७ न सही

* * * * *

अजब निशात से, जल्लाद के, चले हैं हम, आगे
 कि अपने साये से सर, पांव से है दो क़दम आगे

१. कलम की आवाज, २. फ़रिश्तो की आवाज, ३. ग़म का रुदन,
 ४. खुशी का संगीत, ५. तारीफ़, ६. सुन्दर प्रेमिकाओं की संगति का आनन्द,
 ७. नैसर्गिक आयु।

कज़ा ने था मुझे चाहा, ख़राबे - वादए - उल्फ़त
 फ़क़त 'ख़राब' लिखा, वस न चल सका क़लम आगे
 ग़मे ज़माना ने झाड़ी, निशाते - इश्क़ की मस्ती
 वग़रना हम भी उठाते थे लज़ज़ते - अलम, आगे
 खुदा के वास्ते, दाद इस जुनूने - शौक़ की देना
 कि उसके दर पे पहुँचते हैं नामावर से हम, आगे
 ये उम्र भर जो परीशानियां उठाई हैं, हमने
 तुम्हारे आइयो, ऐ तुराहाए - ख़मवख़म, आगे
 दिलो - ज़िगर में पर - अफ़शां, जो एक मौज़ए - खूं है
 हम अपने ज़ोम^१ में समझे हुए थे उसको दम आगे
 क़सम जनाज़े पे आने की मेरे खाते हैं, 'ग़ालिब'
 हमेशा खाते थे, जो मेरी जान की क़सम आगे



शिकवे के नाम से, वेमेहर ख़फ़ा होता है
 यह भी मत कह, कि जो कहिये, तो ग़िला होता है
 पुर हूं मैं शिकवे से यों, राग से जैसे बाजा
 इक ज़रा छेड़िये, फिर देखिए, क्या होता है
 गो समझता नहीं, पर हुस्ने - तलाफ़ी^२ देखो
 शिकवए - जौर^३ से, सरगर्मे - जफ़ा होता है
 इश्क़ की राह में, है चखें - मर्क़ाक़व^४ की वो चाल
 सुस्त - रौ जैसे कोई आवला - पा होता है

१. प्रेम-उल्लास, २. वमंड, ३. क्षतिपूर्ति का डंग, ४. जुल्म की शिक्षायत,
 ५. तारों भरा आसमान ।

क्यों न ठहरें हृदके - नावके - वेदाद^१, कि हम,
 आप उठा लाते हैं गर तीर खता होता है
 खूब था, पहले से होते जो हम अपने वदरब्बाह
 कि भला चाहते हैं और बुरा होता है
 नाला जाता था, परे अर्श से मेरा, और अव
 लव तक आता है जो ऐसा ही रसा होता है

क़तआ

ख़ामा^२ मेरा, कि वो है चार - बुदे - वज़मे - सुखन^३
 शाह की मदह^४ में, यों नरमा - सरा होता है
 ऐ शहनशाहे कवाकिव^५ सिपहो - मेहर अलम
 तेरे इकराम^६ का हक़, किससे अदा होता है
 सात अक़लीम^७ का हासिल जो फ़राहम कीजे
 तो वो लश्कर का तेरे नाल - बहा^८ होता है
 हर महीने में, जो ये वद्र^९ से होता है हिलाल^{१०}
 आस्तां पर तेरे मैं नासिया - सा^{११} होता है
 मैं जो गुस्ताख़ हूं आईने - राज़ल ख़वानी में
 यह भी तेरा ही करम ज़ौक़ - फ़िज़ा होता है
 रखियो, 'ग़ालिव', मुझे इस तलख़ - नवाई में मुआफ़
 आज कुछ दर्द मेरे दिल में सवा होता है

१. जुलम के तीर का निशाना, २. क़लम, ३. मुशायरा, ४. तारीक़,
 ५. सितारे, ६. सम्मान, ७. सात लोक, ८. घोड़ों के सुर्मों में लगने वाले नाल,
 ९. पूरा चौद, १०. दूज का चौद, ११. माथा घिसने वाला ।

हर एक बात पे कहते हो तुम, कि तू क्या है
 तुम्हीं कहो कि ये अन्दाजे - गुफ्तगू क्या है
 न शोले में ये करिश्मा न वर्क में ये अदा
 कोई बताओ, कि वो शोखे - तुन्द - खू क्या है
 यह रश्क है, कि वो होता है हमसुखन तुमसे
 वगरना खीफे - वद - आमोजिए - उदू^१ क्या है
 चिपक रहा है वदन पर, लहू से, पैराहन
 हमारी जैव को अब हाजते - रफू^२ क्या है
 जला है जिस्म जहां, दिल भी जल गया होगा
 कुरेदते हो जो अब राख, जुस्तजू^३ क्या है
 रगों में दौड़ने फिरने के, हम नहीं कायल
 जब आंख ही से न टपका, तो फिर लहू क्या है
 वो चीज, जिसके लिए हमको हो, बहिश्त अजीज
 सिवाये वादए - गुलफामे - मुश्कवू^४ क्या है
 पियूं शराब, अगर खुम भी देखलूं दो चार
 ये शीशओ - क़दहो - कूज़ा व सुवू^५ क्या है
 रही न ताकते गुफ्तार, और अगर हो भी
 तो किस उम्मीद पर कहिए कि आरजू^६ क्या है
 हुआ है शह का मुसाहिव, फिरे है इतराता
 वगरना शहर में 'गालिव' की आवरू क्या है

१. दुश्मन के सिखाने-पढ़ाने का भय, २. फूलों के रंग की सुगन्धित शराब, ३. झुगझी ।

* * * * *

मैं उन्हें छेड़ूं, और कुछ न कहें
 चल निकलते, जो मैं लिए होते
 कहर हो, या चला हो, जो कुछ हो
 काश के, तुम मेरे लिए होते
 मेरी किस्मत में शम गर इतना था
 दिल भी, या रव, कई दिये होते
 आ ही जाता वो राह पर, 'शालिव'
 कोई दिन और भी जिये होते

* * * * *

आ, कि मेरी जान को करार नहीं है
 ताकते वेदादे - इन्तेज़ार नहीं है
 देते हैं जन्नत, हयाते - दहर के बदले
 नशशा वअन्दाजए - खुमार नहीं है
 गिरिया निकाले है तेरी वज्र से, मुक्तको
 हाय कि रोने पे इस्तिथार नहीं है
 हमसे अवस है, गुमाने - रंजिशे - खातिर
 खाक में उश्शाक^१ की गुवार नहीं है
 दिल से उठा लुत्फे - जल्वाहाए मआनी
 गैरे - गुल, आईनए - वहार नहीं है
 कत्ल का मेरे अहद तो किया है चारे
 वाये ! अगर अहद उस्तवार^२ नहीं है

तूने कसम मैकशी की खाई है, 'गालिव'
तेरी कसम का कुछ एतवार नहीं है

* * * * *

हुज्जमे राम से, यां तक सर - निगूनी^१ मुक्कको हासिल है
कि तारे दामनो - तारे - नज़र में फ़र्क मुश्किल है
रफ़ू - ज़ख्म से मतलब है लज्जत ज़ख्मे - सोज़न की
समझियो मत, कि पासे - दर्द से, दीवाना गाफ़िल है
वो गुल जिस गुलिस्तां में जल्वा फ़रमाई करे, 'गालिव'
चटकना गुंचे दिल का, सदाए - ख़न्दए - दिल है

* * * * *

पा व दामन हो रहा हूं, वस कि मैं सहरा नवर्द
खारे - पा^२ हैं; जीहरे - आईनए जानू मुक्के
देखना हालत मेरे दिल, की हम - आगोशी के बाद
है निगाहे आशना, तेरा सरे हर मू, मुक्के
हूं सरापा नाज़ आहंगे - शिकायत, कुछ न पूछ
है यही बेहतर, कि लोगों में न छेड़े तू मुक्के

* * * * *

जिस वज़म में, तू नाज़ से, गुफ़्तार में आवे
जां, कालबुदे^३ - सूरते - दीवार में आवे
साये की तरह साथ फिरें सर्वो - सनोवर
तू इस क्रदे दिलकश से, जो गुलज़ार में आवे

१. सिर मुकना, २. पांव का कांटा, ३. शरीर ।

तव नाज़े - गरां - मायगिए - अश्क^१ वजा है
 जब लख्ते - जिगर दीदए, खूंवार में आवे
 दे मुझको शिकायत की इजाज़त, कि सितमगर
 कुछ तुझको मज़ा भी मेरे आज़ार में आवे
 उस चश्मे - फुसूंंगर^२ का, अगर पाये इशारा
 तूती की तरह आईना गुफ्तार में आवे
 कांटों की जुवां सूख गई प्यास से, यारव
 इक आवला - पावादिए - पुरखार में आवे
 मर जाऊं न क्यों रश्क से, जब वो तने-नाजुक
 आगोशे - ख़मे - हल्कए - जुन्नार में आवे
 गारतगरे - नामूस^३ न हो, गर हविसे - ज़र^४
 क्यों शाहिदे - गुल^५, वाग़ से वाज़ार में आवे
 तव चाके - गरेवां का मज़ा है, दिले - नादां
 जब इक नफ़स उल्फ़ा हुआ, हर तार में आवे
 आतिश - कदा है सीना मेरा, राज़े - निहां से
 ऐ वाये, अगर मारिज़े - इज़हार^६ में आवे
 गंजीनए - मानी^७ का 'तिलिस्म' उसको समझिये
 जो लफ़्ज़ कि 'ग़ालिव', मेरे अशआर में आवे

* * * * *

हुस्ने - मह^८, गरचे वहंगामे - कमाल^९, अच्छा है
 उससे मेरा महे - ख़ुशीद - जमाल अच्छा है

१. आँख की बहुमूल्यता, २. जादू करने वाली आंख, ३. इज्जत को मिटाने वाली, ४. रुपये-पैसे का लालच, ५. सुन्दर फूल, ६. अभिव्यक्ति, ७. अर्थों का खजाना, ८. चांद का सौंदर्य, ९. चौदहवीं की रात को ।

बोसा देते नहीं, और दिल पे है हर लहजा निगाह
 जी में कहते हैं, कि मुफ्त आये, तो माल अच्छा है
 और बाज़ार से ले आये, अगर टूट गया
 सागरे - जम^१ से मेरा जामे - सिफ़ाल^२ अच्छा है
 चेतलव दें तो मज़ा उसमें सवा मिलता है
 वो गदा, जिसको न हो खूए - सवाल, अच्छा है
 उनके देखे से, जो आ जाती है मुंह पर रौनक
 वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है
 देखिये पाते हैं उश्शाक, बुतों से क्या फ़ैज़^३
 इक बेहमन ने कहा है, कि यह साल अच्छा है
 हम - सुखन तेशे ने फ़रहाद को, शीरीं से किया
 जिस तरह का भी किसी में हो कमाल, अच्छा है
 कतरा दरिया में जो मिल जाय, तो दरिया हो जाय
 काम अच्छा है वो, जिसका कि मआल^४ अच्छा है
 खिज़्र सुलतां को रखे, ख़ालिके अकवर सरसब्ज़
 शाह के वाग़ में, यह ताज़ा निहाल^५ अच्छा है
 हमको मालूम है, जन्नत की हकीकत, लेकिन
 दिल के खुश रखने को, 'ग़ालिव', ये ख़याल अच्छा है

* * * * *

ग़ैर ले महफ़िल में, बोसे जाम के
 हम रहें यों तशना - लव^६, पैग़ाम के

१. जमशेद बादशाह का प्याला, २. मिट्टी का प्याला, ३. लाम,
 ४. परिणाम, ५. पेड़, ६. प्यासे ।

खस्तगी का तुमसे क्या शिकवा कि ये
 हथकण्डे हैं चखें - नीली - फ़ाम^१ के
 खत लिखेंगे, गरचे मतलब कुछ न हो
 हम तो आशिक हैं, तुम्हारे नाम के
 रात पी ज़मज़म पे मै और सुवह - दम^२
 घोये धन्वे जामए - अहराम^३ के
 दिल को आखों ने फंसाया, क्या मगर
 ये भी हल्के हैं तुम्हारे दाम के
 शाह के हैं गुस्ले संहत की ख़बर
 देखिये, दिन कब फिरें हम्माम के
 इश्क ने, 'ग़ालिव' निकम्मा कर दिया
 वरना हम भी आदमी थे काम के

* * * * *

फिर इस अन्दाज़ से बहार आई
 कि हुए मेहरों - माह^४ तमाशाई
 देखो, ऐ साकिनाने - ख़ित्ताए - खाक^५ !
 इसको कहते हैं आलम - आराई^६
 कि ज़मी हो गई सरतासर^७
 रूकशे - सतहे - चखें - मीनाई^८
 सच्चे को जब कहीं जगह न मिली
 वन गया रूप - आव^९ पर काई

१. नीले रंग वाले आसमान, २. सुबह के वक्त, ३. हज की पोशाक,
 ४. चांद-सूरज, ५. दुनिया के वासी, ६. दुनिया को सजाना, ७. सर्वथा,
 ८. आसमान के समान, ९. पानी की सतह ।

सज्जत्रो गुल के देखने के लिए
 चश्मे - नरगिस को दी है वीनाई
 है हवा में शराब की तासीर
 वादा - नोशी है वाद - पैमाई
 क्यों न दुनिया को हो खुशी, 'गालिव'
 शाहे - दीदार ने शफा पाई

* * * * *

तगाफुल दोस्त हूं, मेरा दिमागो - इज्ज आली है
 अगर पहलू - तही कीजे, तो जा मेरी भी खाली है
 रहा आवाद आलम, अहले - हिम्मत के न होने से
 भरे हैं जिस क़दर जामो सुवू, मैखाना खाली है

* * * * *

कब वो सुनता है कहानी मेरी
 और फिर वो भी जुवानी मेरी
 खलिशो - ग़मज़ए - ख़ूब न पूछ
 देख खूनावा - फ़िशानी मेरी
 क्या वयां करके मेरा, रोयेंगे यार
 मगर आशुफ़ता - वयानी मेरी
 हूं ज़ख़ुद - रफ़तए - वेदाए - ख़याल
 भूल जाना है, निशानी मेरी

मुक्ताविल ^१	है,	मुक्ताविल	मेरा
रुक गया,	देख	रवानी	मेरी
कद्रे - संगे - सरे - रह		रखता	हूँ
सरल अरज़ां	है,	गिरानी	मेरी
गर्द वादे - रहे -		वेतावी	हूँ
सरसरे - शौक ^३	है,	वानी	मेरी
दहन उसका,	जो न	मात्तूम	हुआ
खुल गई	हेच -	मदानी ^२	मेरी
कर दिया ज़ोफ़	ने	आजिज़,	'ग़ालिव'
नंगे - पीरी	है,	जवानी	मेरी

* * * *

गुलशन को तेरी सोहवत, अज़ वस कि पसन्द आई है
हर गुंचे का गुल होना, आग़ोश - कुशाई है
वां कंगुरे - इस्तग़ना^४, हरदम है बुलन्दी पर
यां नाले को और उल्टा, दावाए रसाई है
अज़वस कि सिखाता है ग़म, ज़व्त के अन्दाज़े
जो दाग़ नज़र आया इक चश्म - नुमाई^५ है

* * * *

जिस ज़ख़्म की हो सकती हो तदवीर, रफू की
लिख दीजिये, यारव ! उसे किस्मत में उद् की

१. मुक्तावले पर न आने वाला, २. चाह रूपी हवा की ध्वनि, ३. कुछ न जानना, ४. निस्पृहता का कलश, ५. आंख के इशारे से बुझकी देना।

अच्छा है सर - अंगुशे - हिनाई^१ का तसचुर^२
 दिल में नज़र आती तो है, इक बूंद लहू की
 क्यों डरते हो, उश्शाक^३ की वे - हौसलगी^४ से
 यां तो कोई सुनता नहीं ! दियाद^५ किमू की
 दश्ने^६ ने कभी मुंह न लगाया हो जिगर को
 खंजर ने कभी बात न पूछी हो गुब्बू की
 सद हैफ़^७ ! वो नाकाम, कि एक उम्र से, 'गालिव'^८
 हसरत में रहे एक बुते - उरवदा - जू^९ की

* * * * *

सीमाव^१ पुश्ते - गर्मिए - आईना^२ दे कि हम
 हेरां किये हुए हैं दिले - बेकरार के
 आगोशे - गुल कशूदा^३ वराए विदाअ^४ हैं
 ऐ अन्दलीव^५ ! चल, कि चले दिन बहार के

* * * * *

हैं वस्ल हिज्र, आलमे - तमकीनो - ज़ुक्त में
 माशूके - शोखो - आशिके - दीवाना चाहिये
 उस लव से मिल ही जायगा बोसा कभी तो, हां
 शौके - फ़िज़ूलो - ज़ुरअते - रिन्दाना^६ चाहिये

१. मेंहदी लगी अंगुली का सिरा, २. कल्पना, ३. चाकू, ४. तसल्ल-
 अफ़सोस, ५. लड़ाकू प्रेमी, ६. पारा, ७. आईने की पुस्त की गर्मी, ८. खुली
 हुई, ९. बुलबुल, १०. शराबी का हौसला ।



चाहिये अच्छों को जितना चाहिये
 ये अगर चाहें, तो फिर क्या चाहिये
 सोहवते - रिन्दां से वाजिव हैं, हज़र^१
 जाए मैं अपने को खींचा चाहिए
 चाहने को तेरे क्या समझा था दिल
 चारे, अब इससे भी समझा चाहिये
 चाक मत कर जैव वे - अय्यामे - गुल^२
 कुछ उबर का भी इशारा चाहिये
 दोस्ती का पर्दा, हैं बेगानगी
 मुंह छिपाना हमसे छोड़ा चाहिये
 दुश्मनी ने मेरी खोया रंग को
 किस कदर दुश्मन हैं, देखा चाहिये
 अपनी रुस्वाई में क्या चलती हैं सई
 यार ही हंगामा - आरा^३ चाहिये
 मुनहसिर^४ मरने पे हों, जिसकी उमीद
 नाउमीदी उसकी, देखा चाहिये
 गाफिल, इन मह - तलअतों के वास्ते
 चाहने वाला भी अच्छा चाहिये
 चाहते हैं खूबसूरतों को 'असद'
 आपकी सूरत तो देखा चाहिये

१. दूर रहना, २. वसन्त के दिनों के अलावा, ३. हंगामा बरपा करने वाला, ४. निर्भर ।

हर कदम दूरिए मंज़िल हैं नुमायां मुझसे
 मेरी रफ्तार से भागे हैं, वयावां मुझसे
 दसें^१ - उनवाने - तमाशा, वतगाकुल खुशतर
 हैं निगह रिश्तए शीराज़ए मिज़गां मुझसे
 वहशते - आतिशे - दिल से, शवे - तन्हाई में
 सूरते - दूद^२, रहा साया गुरेज़ां^३ मुझसे
 गमे उश्शाक न हो, सादगी - आमोजे - बुतां^४
 किस कदर खानए - आईना है वीरां मुझसे
 अतरे आवला से, जादए - सहराए - जुनू^५
 सूरते - रिश्तए - गौहर है चिरागां मुझसे
 वेखुदी विस्तरे - तम्हीदे - फ़रागत^६ हो जो
 पुर है साये की तरह मेरा शबिस्तां^७ मुझसे
 शौक़े - दीदार में, गर तू मुझे गर्दन मारे
 हो निगह, मिस्ले - गुले - शम्त्र^८, परीशां मुझसे
 वेकसीहाए शवे - हिज्र की वहशत, है, है !
 साया^९ खुशीदे - क़यामत में है पिन्हां मुझसे
 गदिशे - सागरे - सद - जल्वए - रंगी, तुझसे
 आइना - दारिए - यक - दीदए - हैरां, मुझसे
 निगहे - गर्म से इक आग टपकती है, 'असद'
 है चिरागां, खसो - खाशाके - गुलिस्तां मुझसे

१. पाठ, २. धुएं के सदृश, ३. दूर-दूर, ४. प्रेमियों को सरलता सिखाने
 वाला, ५. उन्माद के रेगिस्तान का मार्ग, ६. सोने का कमरा, ७. शम्शरा के
 गुल के समान ।

* * * * *

नुक्ताची^१ है, गुमेदिल उसको सुनाये न बने
 क्या बने बात, जहां बात बनाये न बने
 मैं बुलाता तो हूं उसको, मगर ऐ जड़वए - दिल
 उसपे बन जाये कुछ ऐसी, कि विन आये न बने
 खेल समझा है, कहीं छोड़ न दे, भूल न जाय
 काश, यों भी हो, कि विन मेरे सताये न बने
 गैर फिरता हूँ, लिये यों तेरे खत को, कि अगर
 कोई पृच्छे, कि ये क्या है, तो छिपाये न बने
 इस नजाकत का बुरा हो, वो भले हैं, तो क्या
 हाथ आयें, तो उन्हें हाथ लगाये न बने
 कह सके कौन, कि ये जल्वागरी किसकी है
 पर्दा छोड़ा है वो उसने, कि उठाये न बने
 मौत की राह न देखूं, कि विन आये न रहे
 तुमको चाहूं, कि न आओ, तो बुलाये न बने
 वोफ़ वो सर से गिरा है, कि उठाये न उठे
 काम वो आन पड़ा है, कि बनाये न बने
 इश्क़ पर ज़ोर नहीं, है ये वो आतिश^२, 'ग़ालिव'
 कि लगाये न लगे और बुझाये न बने

* * * * *

चाक की ख्वाहिश, अगर वहशत बउरियानी^३ करे
 सुब्हो की मानिन्द, ज़रुमे - दिल गरेवानी करे

जल्वे का तेरे वो आलम है, कि गर कीजे खयाल
 दीदए - दिल को ज्यारत - गाहे हैरानी करें
 है शिकस्तन से भी दिल नौमीद^१, यारव कव तलक
 आवगीना कोह^२ पर अजें गरां - जानी करे
 मैकदा गर चश्मे मस्तेनाज से पाये शिकस्त
 मूए - शीशा^३ दीदए - सागर की मिजगानी करे
 खत्ते - आरिज^४ से, लिखा है जुल्फ को उल्फत ने अहद
 यक कलम मंज़र है, जो कुछ परीशानी करे

* * * * *

वो आके ख्वाब में, तिस्कीने - इस्तेराव तो दे
 वले मुम्मे तपिशे - दिल^५ मजाले - ख्वाब तो दे
 करे है कल्ल, लगावट में तेरा रो देना
 तेरी तरह कोई तेरो - निगाह को आव तो दे
 दिखा के जुम्बिशे - लव ही तमाम कर हमको
 न दे जो बोसा, तो मुंह से कहीं जवाब तो दे
 पिला दे ओक से, साकी, जो हमसे नफ़रत है
 प्याला गर नहीं देता, न दे, शराव तो दे
 'असद', खुशी से मेरे हाथ पांव फूल गये
 कहा जो उसने, ज़रा मेरे पांव दाव तो दे

* * * * *

१. निराश, २. पहाड़, ३. शीशे पर खरोच रूपी बाल, ४. गाल के बाल,
 ५. दिल की जलन ।

खतर है, रिश्तए - उल्फत रगे - गर्दन न हो जाए
 गुस्से दोस्ती आफत है, तू दुश्मन न हो जाए
 समझ इस फ़स्ल में कोताहिए - नश्वो - नुमाँ 'ग़ालिव'
 अगर गुल, सर्व के कामत पे, पैराहन^१ न हो जाए

* * * * *

फ़रियाद की कोई लै^२ नहीं है
 नाला पावन्दे - नै नहीं है
 क्यों बोते हैं वाग़वां तूवे
 गर वाग़ गदाए - मै^३ नहीं है
 हरचन्द हर एक शै में तू है
 पर तुझसी तो कोई शै नहीं है
 हां, खाइयो मत फ़रेवे - हस्ती^४
 हर चन्द कहें, कि "हे", नहीं है
 शादी से गुज़र, कि ग़म न होवे
 उरदी जो न हो, तो दै नहीं है
 क्यों रदो - क़दह^५ करे है, ज़ाहिद
 मै है, ये मगस^६ की कै नहीं है
 हस्ती है, न कुछ अदम है 'ग़ालिव'
 आख़िर तू क्या है, ऐ, "नहीं है"

* * * * *

१. विकास की कमी, २. पोशाक, ३. स्वर विशेष ४. शराब का भिखारी,
 ५. अस्तित्व का धोखा, ६. तकरार, ७. मक्खी ।

न पूछ नुसखए - मरहम, जराहते - दिल का
 कि उसमें रेजए - अल्मास जुच्चे - आजम^१ है
 बहुत दिनों में तगाफुल ने तेरे पैदा की
 वो इक निगाह, कि बजाहिर निगाह से कम है

हम रश्क को अपने भी, गवारा नहीं करते
 मरते हैं, बले उनकी तमन्ना नहीं करते
 दरपर्दा उन्हें गैर से, है रक्ते - निहानी^२
 ज़ाहिर का ये पर्दा है, कि पर्दा नहीं करते
 ये बाइसे - नौमीदिए - अरवावे - हविस है
 'ग़ालिव' को बुरा कहते हो, अच्छा नहीं करते

करे है वादा, तेरे लव से कस्वे - रंगे - फ़रोग^३
 खते - पियाला सरासर निगाहे - गुलची है
 कभी तो इस दिले - शोरीदा^४ की भी दाद मिले
 कि एक उम्र से हसरत परस्तए - वाली है
 बजा है, गर न सुने, नाला हाए - बुलबुले - ज़ार
 कि गोशे - गुल, नमे - शवनम^५ से, पंवा - आगी^६ है
 'असद' है नज़ा^७ में, चल बेवफ़ा, बराये खुदा
 मक़ामे - तर्क - हिजाबो - विदाए - तमकी^८ है

१. मुख्य अंश, २. भीतरी लगाव, ३. मनोहर रंग लेना, ४. उन्मत्त दिल,
 ५. ओस की तरी, ६. रुई का फाहा डाले, ७. दम तोड़ने की हालत, ८. घमंड
 और शर्म त्याग देने का समय ।

* * * * *

क्यों न हो चश्मे - चुतां महवे तगाफुल, क्यों न हो
 यानी इस बीमार को नज़ारे से परहेज़ है
 मरते मरते, देखने की आरजू रह जाएगी
 बाये नाकामी, कि उस काफ़िर का खंजर तेज़ है
 आरिजे - गुल^१ देख, रूए - यार याद आया, 'असद'
 जोशिशे - फ़स्ले - बहारी^२ इश्तियाक़ - अंगेज़ है

* * * * *

दिया है दिल अगर उसको, बशर^३ है, क्या कहिये
 हुआ रक़ीब, तो हो, नामावर है, क्या कहिये
 ये ज़िद, कि आज न आवे और आये विन न रहे
 कज़ा से शिकवा हमें किस क़दर है, क्या कहिये
 रहे है यों गहो - वेगह,^४ कि कूए - दोस्त को अब
 अगर न कहिये कि दुश्मन का घर है, क्या कहिये
 ज़िहे - करिश्मा, कि यों दे रखा है हमको फ़रेव
 • कि विन कहे ही उन्हें सब ख़बर है, क्या कहिये
 समझ के करते हैं, बाज़ार में वो, पुरसिशे - हाल
 कि ये कहे, कि सरे - रहगुज़र है, क्या कहिये
 तुम्हें नहीं है सरे - रिश्तए वफ़ा का ख़याल
 हमारे हाथ में कुछ है, मगर है क्या, कहिये
 उन्हें सवाल पे ज़ोमे - जुनूँ^५ है, क्यों लड़िये
 हमें जवाब से क़तए नज़र है, क्या कहिये

१. फूल के गाल, २. वसंत ऋतु का निखार, ३. मनुष्य, ४. आन-जाना,
 ५. उन्माद का घमंड ।

हसद, सजाए - कमाले - सुखन है, क्या कीजे
 सितम, वहाये - मताए - हुनर है, क्या कहिये
 कहा है किसने, कि 'ग़ालिव' बुरा नहीं, लेकिन
 सिवाए इसके, कि आशुप्रता - सर है, क्या कहिये

कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाये है मुझसे
 जफ़ायें करके अपनी याद शर्मा जाये है मुझसे
 खुदाया जङ्गए - दिल की मगर तासीर उल्टी है
 कि जितना सींचता हूं और खिंचता जाये है मुझसे
 वो बदखू, और मेरी दास्ताने - इश्क़ तूलानी
 इवारत मुक़्तसर, कासिद भी घवरा जाये है मुझसे
 उघर वो बदगुमानी है, इघर यह नातवांनी है
 न पूछा जाये है उससे, न बोला जाये है मुझसे
 संभलने दे मुझे, ऐ नाउमीदी, क्या क्यामत है
 कि दामाने - खयाले - यार, छूटा जाये है मुझसे
 तकल्लुफ़ वरतरफ़, नज़्ज़ागी में भी सही, लेकिन
 वो देखा जाये, कब ये जुलम देखा जाये है मुझसे
 हुये हैं पांव ही पहले, नवदें - इश्क़ में ज़रूमी
 न भागा जाये है मुझसे, न ठहरा जाये है मुझसे
 क्यामत है, कि होवे मुद्ई का हमसफ़र, 'ग़ालिव'
 वो काफ़िर, जो खुदा को भी न सौंपा जाये है मुझसे

क्या तअज्जुव है, कि उसको देखकर आजाये रहम
 वां तलक कोई किसी हीले से पहुँचा दे मुझे
 मुंह न दिखलाये, न दिखला, पर वअन्दाजे - अताव'
 खोलकर पर्दा, जरा आंखें ही दिखला दे मुझे
 यां तलक मेरी गिरफ्तारी से वो खुश है, कि मैं
 जुल्फ़ गर बन जाऊं, तो शाने में उल्फ़ा दे मुझे

* * * * *

वाज़ीचए - अतफ़ाल^१ है दुनिया, मेरे आगे
 होता है शवो - रोज़ तमाशा, मेरे आगे
 इक खेल है औरंगे - सुलेमां^२, मेरे नज़दीक
 इक बात है, ऐजाजे - मसीहा^३, मेरे आगे
 जुज़ नाम, नहीं सूरते - आलम मुझे मंज़ूर
 जुज़ वहम, नहीं हस्तिए - अशियां^४ मेरे आगे
 होता है निहां^५ गर्द में सहारा, मेरे होते
 घिसता है जर्वी^६ खाक पे दरिया, मेरे आगे
 मत पूछ, कि क्या हाल है मेरा, तेरे पीछे
 तू देख, कि क्या रंग है तेरा, मेरे आगे
 सच कहते हो, खुदवीनो - खुदआरा^७ हूं, न क्यों हूं ?
 बैठा है बुते - आईना - सीमां^८ मेरे आगे
 फिर देखिये, अन्दाजे - गुल अफ़शानिए - गुफ़्तार
 रख दे कोई, पैमानओ - सहवा मेरे आगे

१. क्रोध के ढंग से, २. बच्चों का खेल, ३. सुलेमान बादशाह का तख्त,
 ४. मसीहा का चमत्कार, ५. वस्तुओं का अस्तित्व ६. छिपना, ७. माथा,
 ८. अपने आप को देखने और संवारने वाला, ९. शीशे की तरह चमकते हुए
 मुख वाला प्रेमी ।

नफ़रत का गुमां गुज़रे है, मैं रश्क से गुज़रा
 क्योंकर कहूं, लो नाम न उनका मेरे आगे
 ईमां मुझे रोके है, तो खींचे है मुझे कुम्हर
 कावा मेरे पीछे है, कलीसा मेरे आगे
 आशिक हूं, पे माशूक फरेवी है मेरा काम
 मजनूं को चुरा कहती है लैला, मेरे आगे
 लुश होते हैं, पर वस्ल में यों मर नहीं जाते
 आई शवे - हिजरां की तमन्ना, मेरे आगे
 है मोजज़न इक कुल्ज़मे - खूं, काश, यही हो
 आता है, अभी देखिये, क्या क्या, मेरे आगे
 गो हाथ को जुम्बिश नहीं, आंखों में तो दम है
 रहने दो अभी सागरों - मीना मेरे आगे
 हम - पेशओ हम - मशरवो हम - राज है मेरा
 'ग़ालिव' को चुरा क्यों कहो, अच्छा, मेरे आगे

* * *
 कहूं जो हाल, तो कहते हो, "मुद्आ कहिये"
 तुम्हीं कहो, कि जो तुम यों कहो, तो क्या कहिए
 न कहियो तान से फिर तुम, कि हम "सितमगर" हैं
 मुझे तो खू है, कि जो कुछ कहो, वजा कहिये
 वो नेश्तर सही, पर दिल में जब उतर जाये
 निगाहे - नाज़ को फिर क्यों न आशना कहिये

नहीं ज़रीयए राहत, जराहते - पैकां
 वो जरूमे - तेग हैं, जिसको कि दिल - कुशा कहिये
 जो मुद्ई बने, उसके न मुद्ई बनिये
 जो नासज़ा^१ कहे उसको न नासज़ा कहिये
 कहीं हक़ीक़ते - जां - काहिए - मरज़^२ लिखिये
 कहीं मुसीबते ना - साज़िए - दवा कहिये
 कभी शिकायते - रंजे - गिरां - नशी^३ कीजे
 कभी हिकायते - सवे - गुरेज़ - पा^४ कहिये
 रहे न जान, तो कातिल को खूं वहा दीजे
 कटे ज़वान, तो खंजर को मर्हवा कहिये
 नहीं निगार को उल्फ़त, न हो, निगार तो हैं
 रवानिए - रविशो - मस्तिए - अदा कहिये
 नहीं वहार को फुर्सत, न हो, वहार तो हैं
 तरावते - चमनो - खूविए - हवा कहिये
 सफ़ीना^५ जबकि किनारे पे आ लगा, 'ग़ालिव'
 खुदा से क्या सितमो - जौरे नाखुदा कहिये

* * * * *

रौने से और इश्क़ में बेवाक हो गये
 धोये गये हम ऐसे, कि बस पाक हो गये
 सफ़ें - बहाए - मै^६ हुये, आलाते - मै - कशी^७
 ये ये ही दो हिसाब, सो यों पाक हो गये

१. तीर द्वारा चार-फाड़, २. अनुचित, ३. रोग के कष्ट की वास्तविकता,
 ४. भारी दुख की शिकायत, ५. बचाने वाले संतोष की कहानी; ६. नाव,
 ७. शराब के लिए खर्च, ८. शराब खींचने के यंत्र ।

रुस्वाए - दहर^१ गो हुये, आवारगी से तुम
 वारे तवीअतों के तो चालाक हो गये
 कहता है कौन नालए - बुलबुल को, वे - अस्तर
 परदे में गुल के लाख जिगर चाक हो गये
 पूछे है क्या बजूदो - अदम अहले - शौक का
 आप अपनी आग के खसो - खाशाक हो गये
 करने गये थे उससे, तगाफूल का हम गिला
 की एक ही निगाह, कि बस खाक हो गये
 इस रंग से उठाई कल उसने 'असद' की लाश
 दुश्मन भी जिसको देख के गुमनाक हो गये

इब्ने - मरियम^२ की हुआ करे कोई
 मेरे दुख पर दवा करे कोई
 शरओ - आईन^३ का मदार करे कोई
 ऐसे कातिल का क्या करे कोई
 चाल, जैसे कड़ी कमां का तीर
 दिल में ऐसे कि जा करे कोई
 बात पर वां जुवान कटती है
 वो कहें और सुना करे कोई
 बक रहा हूं जुनूं में क्या कुछ
 कुछ न समझे, खुदा करे, कोई

१. जमाने भर में बदनाम, २. मरियम का बेटा, मसीहा, ३. कायदे
 कानून ।

रोक लो, गर गलत चले कोई
 वाश दो, गर खता करे कोई
 कौन है, जो नहीं है हाजतमन्द
 किसकी • हाजत रवा करे कोई
 क्या किया खिज़र ने सिकन्दर से
 अब किसे रहनुमा करे कोई
 जब तबक्को ही उठ गई, 'गालिव'
 क्यों किसी का गिला करे कोई

* * * * *

बहुत सही ग़मे - गेती, शराव कम क्या है
 गुलामे साक़िए कौसर हूं, मुक्क़ो ग़म क्या है
 तुम्हारी तज़ों - रविश, जानते हैं हम, क्या है
 रकीव पर है अगर लुत्फ़, तो सितम क्या है
 कटे तो शव कहें काटे तो सांप कहलावे
 कोई बताओ, कि वो जुल्फ़े - ख़मवख़म क्या है
 लिखा करे कोई, अहकामे - तालए - मौलूद^१
 किसे ख़बर है, कि वां जुम्बिशे, क़लम क्या है
 न हश्रो - नश्र^२ का कायल न केशोमिल्लत^३ का
 खुदा के वास्ते, ऐसे की फिर क़सम क्या है
 सुखन में ख़ामए^४ - ग़ालिव की आतिश - अफ़शानी^५
 यकीं है हमको भी, लेकिन अब उसमें दम क्या है

१. जन्म-स्थान २. कयामत और उसका दंड, ३. धर्म और काम,
 ४. क़लम, ५. आग वरसाना ।

वाग पाकर खफकानी, ये डराता है मुझे
 सायए - शाखे - गुल, अफई नज़ आता है मुझे
 जीहरे - तेग वसर चश्मए - दीगर मालूम
 हूं मैं वो सव्ज़ा, कि ज़हराव उगाता है मुझे
 मुद्आ महवे - तमाशाए - शिकस्ते - दिल है
 आईना खाने में कोई लिये जाता है मुझे
 ज़िन्दगी में तो वो महफ़िल से उठा देते थे
 देखें, अब मर गये पर, कौन उठाता है मुझे

रौंदी हुई है, कौकबए - शहरयार की
 इतराये क्यों न खाक, सरे - रहगुज़ार की
 जब उसके देखने के लिये आयें बादशाह
 लोगों में क्यों नमूद न हो, लालाज़ार की
 भूके नहीं हैं सैरे - गुलिस्तां के हम, बले
 क्योंकि न खाइये, कि हवा है बहार की

हज़ारों ख्वाहिशें ऐसी, कि हर ख्वाहिश पे दम निकले
 बहुत निकले मेरे अरमान, लेकिन फिर भी कम निकले
 डरे क्यों मेरा कातिल, क्या रहेगा उसकी गर्दन पर
 वो खूं, जो चश्मेतर से उम्र भर यों दमवदम निकले

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये थे, लेकिन
 चहुत वेआवरू होकर तेरे कूचे से हम निकले
 भरम खुल जाये, ज़ालिम तेरे कामत^१ की दराज़ी का
 अगर इस तुर्रए पुर पेचोख़म का पेचोख़म निकले
 मगर लिखवाए कोई उसको ख़त, तो हमसे लिखवाये
 हुई सुबह, और घर से कान पर रखकर क़लम निकले
 हुई इस दौर में मंसूव मुफ़से वादा - आशामी
 फिर आया वो ज़माना, जो जहां में जामोज़म निकले
 हुई जिनसे तबक्को, ख़स्तगी की दाद पाने की
 वो हमसे भी ज़ियादा ख़स्तए तेगे सितम निकले
 मुहव्वत में नहीं है फ़र्क़, जीने और मरने का
 उसी को देखकर जीते हैं, जिस काफ़िर पे दम निकले
 ज़रा कर ज़ोर सीने पर कि तीरे पुर सितम निकले
 जो वो निकले तो दिल निकले, जो दिल निकले तो दम निकले
 खुदा के वास्ते पर्दा न कावे से उठा ज़ालिम
 कहीं ऐसा न हो यां भी, वही काफ़िर सनम निकले
 कहां मैख़ाने का दरवाज़ा, 'ग़ालिव', और कहां वाइज़
 पर इतना जानते हैं, कल वो जाता था, कि हम निकले

* * * * *

हूं मैं भी तमाशाइए - नैरंगे - तमन्ना
 मतलब नहीं कुछ इससे, कि मतलब ही चर आये^२

* * *
 सियाही जैसे गिर जाये दमे - तहरीर कागज़ पर
 मेरी किस्मत में यों तस्वीर है शवहाए - हिजरा की

* * *
 खमोशियों में तमाशा अदा निकलती है
 निगाह, दिल से तेरे, सुर्मा सा निकलती है
 फ़िशारे - तंगिए - ख़ल्त्त से बनती है शवनम
 सवा जो गुंचे के पर्दे में जा निकलती है
 न पूछ सीनए - आशिक से आवे - तेरे - निगाह
 कि ज़ल्मे - रौज़ने - दर से हवा निकलती है

* * *
 छिड़के हैं शवनम आइनए वों - गुल पर आव
 ते अन्दलीव, वक्ते - विदाए - बहार है
 पच आ पड़ी है वादए - दिलदार की मुझे
 वो आये या न आये पे यां इन्तेज़ार है
 बेपरदा सूए - वादिए मजनू गुज़र न कर
 हर ज़रें के नकाब में दिल बेकरार है
 दिल मत गंवा, ख़वर न सही, सैर ही सही
 पे बेदिमाग़, आइना तिमसाल - दार है
 ग़फ़लत कफ़ोलें - उम्रो - 'असद' ज़ामिने - निशात
 पे मर्गें नागहां, तुम्हे क्या इन्तेज़ार है

१. जुदाई की रातें, २. एकांत की संकीर्णता का दबाव, ३. चित्र देने वाला, ४. निर्मर ।

* * * * *

आईना क्यों न दूँ, कि तमाशा कहें जिसे
 ऐसा कहाँ से लाऊँ, कि तुफसा कहें जिसे
 हसरत ने ला रखा, तेरी वज्रमे - खयाल में
 गुलदस्तए - निगाह, सवैदा कहें जिसे
 फूँका है किसने गोशे - मुहव्वत में, ते खूदा
 अफसूने - इन्तिज़ारे - तमन्ना कहें जिसे
 सर पर हुज़्मे - ददें - ग़रीबी से डालिये
 वो एक मुश्ते - खाक, कि सहारा कहें जिसे
 है चश्मे - तर में हसरते - दीदार से निहां
 शौके - इनां - गुसेख़ता, दरिया कहें जिसे
 दरकार है शगुफ़्तने - गुलहाए - ऐश को
 सुवहे - वहार, पम्बए - मीना कहें जिसे
 'ग़ालिब' बुरा न मान जो वाइज़ बुरा कहे
 ऐसा भी कोई है, कि सब अच्छा कहें जिसे

* * * * *

शोले से न होती, हविसे - शोला ने जो की
 जी किस क़दर अफ़सुर्दगिए दिल पे जला है
 तिमसाल में तेरी है, वो शोख़ी, कि वसद - ज़ौक
 आईना व - अन्दाज़े - गुल आग़ोश - कुशा है
 माख़ूम हुआ हाले - शहीदाने - गुज़िश्ता
 तेगे - सितम - आईनए - तस्वीर नुमा है

ऐ परतवे - खुशीदे - जहां ताव, इधर भी
 साये की तरह हम पे अजब वक्त पड़ा है
 नाकरदा^१ गुनाहों की भी हसरत की मिले दाद
 यारव ! अगर इन करदा गुनाहों की सज़ा है
 बेगानगिए - खल्क^२ से वेदिल न हो 'ग़ालिव'
 कोई नहीं तेरा, तो मेरी जान, खुदा है

मंजूर थी ये शकल, तजल्ली^३ को नूर की
 किस्मत खुली तेरे क़दो - रुख़ से ज़हर की
 इक खूँचकां कफ़न में करोड़ों बनाव हैं
 पड़ती है आंख, तेरे शहीदों पे, हर की
 वाइज़ न तुम पियो, न किसी को पिला सको
 क्या बात है तुम्हारी शराबो - तहर^४ की
 लड़ता है मुझसे हथ्र में कातिल, कि क्यों उठा
 गया, अभी सुनी नहीं आवाज़ सूर^५ की
 आमद बहार की है, जो बुलबुल है नग्मा-संज
 उड़ती सी इक ख़बर है, जुवानी तयूर^६ की
 गो वां नहीं पे वां के निकाले हुए तो हैं
 कावे से इन बुतों को भी निस्वत है दूर की
 क्या फ़र्ज़ है, कि सबको मिले एक सा जवाब
 आओ न, हम भी सैर करें कोहे - तूर^७ की

१. न किये हुए, २. दुनिया की अवस्था, ३. प्रकाश, ४. पवित्र शराब जो
 स्वर्ग में मिलेगी, ५. वह विगुल जो क़ायामत के दिन बजेगा, ६. पक्षी, ७. तूर
 नामक एक पहाड़ ।

गमीं सही कलाम में, लेकिन न इस क़दर
 की जिससे बात, उसने शिकायत ज़रूर की
 'ग़ालिव', गर इस सफ़र में मुझे साथ ले चलें
 हज का सबाब नज़र करूंगा हुज़ूर की

* * * * *

ग़म खाने में वोदा, दिले - नाकाम बहुत है
 ये रंज, °कि कम हैं मए - गुलफ़ाम, बहुत है
 कहते हुए साकी से हया आती है, वरना
 है यों, कि मुझे दुर्दे - तहे - जाम¹ बहुत है
 नै तीर कमाँ में है, न सैयाद कमी² में
 गोशे में क़फ़स के, मुझे आराम बहुत है
 है अहले - ख़िरद³ किस रविशे - ख़ास पे नाज़ां
 पा वस्तगिये - रस्मो - रहे - आम⁴ बहुत है
 ज़मज़म ही पे छोड़ो, मुझे क्या तौफ़े - हरम⁵ से
 आबूदा व - मै जामए - अहराम⁶, बहुत है
 है केहर कि अब भी न वने बात, कि उनको
 इंकार नहीं और मुझे इब्राम⁷ बहुत है
 खूँ होके जिगर आंख से टपका नहीं, ऐ मर्ग
 रहने दे मुझे यां, कि अभी काम बहुत है
 होगा कोई ऐसा भी, कि 'ग़ालिव' को न जाने
 शाइर तो वो अच्छा है, पे वदनाम बहुत है

१. प्याले की तह पर बची हुई तलछट. २. घात, ३. बुद्धिमान,
 ४. साधारण रीतिरिवाज की पाबन्दी, ५. काबा की परिक्रमा, ६. हज का
 पहनावा, ७. इब्राम ।

* * *
 रहा बला में भी मैं मुञ्चिलाए - आफते - रश्क
 बलाए - जां है अदा तेरी एक जां के लिये
 फूलक न दूर रख उससे मुझे, कि मैं ही नहीं
 दराज दस्तिए - कातिल के इम्तेहां के लिये
 मिसाल ये मेरी कोशिश की है, कि मुर्गे - असीर
 करे कफूस में फराहम खस आशियां के लिये
 गदा समझ के वो चुप था, मेरी जो शामत आये
 उठा, और उठके कदम, मैंने पास्वां के लिये
 बकद्रे - शौक नहीं, जफे - तंगनाए - गजल^१
 कुछ और चाहिये वुसअत मेरे बयां के लिये
 जुवां पे बारे - खुदाया ये किसका नाम आया
 कि मेरे नुक्ते^२ ने वोसे मेरी जुवां के लिये
 जमाना अहद में उसके है महवे - आराइश^३
 वनेगे और सितारे अब आसमां के लिये
 वरक तमाम हुआ और मदह^४ वाकी है
 सफीना चाहिये इस वहरे - वेकरां के लिये
 अदाए - खास से 'गालिव' हुआ है नुक्ता - सरा
 सलाए - आम^५ है याराने - नुक्तदां के लिए

क़सीदे

जहरे - ग़म कर चुका था मेरा काम
 तुम्हको किसने कहा कि हो बदनाम

१. जुयाना, २. गजल का माध्यम, ३. जवान, ४. शृंगार में मस्त,
 ५. तारीफ, ६. जिसका किनारा नहीं, ७. खान दावत ।

मैं है फिर क्यों न मैं पिये जाऊं
 गुम से जव हो गई हो जीस्त^१ हराम
 बोसा कैसा ? यही गूनीमत है
 कि न समझें वो लज्जते दुश्नाम
 कावे में जा बजायेंगे नाकूस^२
 अब तो बांधा है दौर^३ में अहराम^४
 इस कदह^५ का है दौर मुझको नकद
 चर्ख^६ ने ली है जिससे गर्दिश वाम^७
 बोसा देने में उनको है इन्कार
 दिल के लेने में जिनको था इवाम^८
 छेड़ता हूं कि उनको गुस्ता आये
 क्यों रखूं वरना 'गालिव' अपना नाम



लिख दिया शाहिदों^१ को आशिक कुश
 लिख दिया आशिकों को दुश्मन काम
 आस्मां को कहा गया कि कहें
 गुम्वदे तेज गर्द नीली फ़ाम
 हुम्मे - नातिक लिखा गया कि लिखे
 खाल को दाना और जुल्फ़ को दाम
 आतिशो - आवो - वादो - खाक ने ली
 वज़ए - सोज़ो - नमो - रमो - आराम

१. लिंगी, २. शंख, ३. मंदिर, ४. हज का वेसिला लिवास, ५.
 प्याला, ६. उधार, ७. हठ, ८. रूप वाले ।

मेहरे -	रक्शां	का	नाम	खसरवं -	रोज
माहे -	तावां	का	इस्म	शहनए -	शाम
तेरी	तौकीए	-	सलतनत	को	भी
दी	बदस्तूर		मूरते		इरकाम ^१
कातिवे -	हुक्म		ने	बमूजिवे	- हुक्म
उस	रक्रम	को	दिया	तराजे	- दवाम
हे	अजल	से	रवानिए	-	आगाज
हो	अवद	तक	रसाइए	-	अंजाम ^२

* * *

गये वो दिन कि नादानिस्ता^१ गैरों की वफादारी
 किया करते थे तुम तकरीर हम खामोश रहते थे
 बस, अब विगड़े पे क्या शर्मिन्दगी जाने दो मिल जाओ
 क्रम लो हमसे गर ये भी कहें “क्यों हम न कहते थे”

सेहरा

खुश हो ऐ बख्त^१ कि है आज तेरे सर सेहरा
 बांध शहजादे जवां बख्त के सर पर सेहरा
 क्या ही इस चान्द से मुखड़े पे भला लगता है
 है तेरे हुस्न दिल अफ़रोज का ज़ेवर सेहरा
 सर पे चढ़ना तुम्हें फवता^२ है पर, ऐ तरफ़े - कुलाह^३
 मुझको डर है कि न छीने तेरा लम्बर सेहरा

१. भाग्य में लिखी गई, २. अनन्त काल तक बना रहे, ३. अनजाने,
 ४. भाग्य, ५. शोभा देना, ६. कुलाह, पगड़ी के नीचे की विशेष प्रकार की टोपी।

नाव भरकर ही पिरये गये होंगे मोती
 वरना क्यों लाये हैं किशती में लगाकर सेहरा
 सात दरिया के फ़राहम किये होंगे मोती
 तब बना होगा इस अन्दाज़ का गज़ भर सेहरा
 खूब पे दूल्हा के जो गर्मी से पसीना टपका
 है रंगे - अन्ने - गुहर वार सरासर सेहरा
 ये भी इक वेअदवी थी कि क़वा से बढ़ जाये
 रह गया आन के दामन की वरावर सेहरा
 जी में इतरायें न मोती कि हमी है इक चीज़
 चाहिये फूलों का भी एक मुकर्रर^१ सेहरा
 जबकि अपने में समायें न खुशी के मारे
 गंधे फूलों का भला फिर कोई क्योंकर सेहरा
 रुखे - रौशन की दमक गौहरे - गुलतां की चमक
 क्यों न दिखलाये फ़रोगे - महोअस्तर सेहरा
 तार रेशम का नहीं है ये रंगे - अन्ने - वहार
 लायेगा तावे - गरां वारिए - गौहर सेहरा
 हम सुखन - फ़हम^२ हैं 'ग़ालिव' के तरफ़दार नहीं
 देखें कहदे कोई इस सेहरे से बढ़कर सेहरा^३



१. और; दूसरा, २. शेर समझने वाला, ३. बादशाह के उस्ताद जौक ने इस पंक्ति को अपने लिए चुनौती समझ लिया। उसने उत्तर में एक सेहरा तुरंत लिखा और गायकी द्वारा शेर में गवाया गया। गालिव को भी पता चला और उसने चमा-याचना के तौर पर यह कविता बादशाह को लिखकर भेजी।

रुबाइयां

आतिश वाज़ी है जैसे शरले - अत्फ़ाल
 हे सोजे ज़िगर का भी इसी तौर का हाल
 था मूजिदे - इश्क़ भी क़यामत कोई
 लड़कों के लिये गया है क्या खेल निकाल

* * * * *

दिल था कि जो जाने दर्द तम्हीद^१ सही
 चेताबीए - रश्क व हसरते - दीद सही
 हम और फ़शुरदन^२ ऐ तजल्ली अफ़सोस
 तकरार रवा^३ नहीं तो तजदीद^४ सही

* * * * *

है ख़ल्क हसद क़माश लड़ने के लिये
 वहशत कदा तलाश लड़ने के लिये
 यानी हरवार सूरते - काग़ज़े - वाद^५
 मिलते हैं ये वदमाश लड़ने के लिये

* * * * *

दिल सख़्त नशन्द हो गया है गोया
 उससे गिला मन्द हो गया है गोया
 पर यार के आगे बोल सकते ही नहीं
 'ग़ालिव' मुंह वन्द हो गया है गोया

१. वच्चा का खेल, २. प्रारंभ, ३. निचोड़ना, ४. उचित, ५. फिर शुरू करना, ६. हवाल्पी काग़ज़ ।

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

दुख जी के पसन्द हो गया है 'गालिव'
दिल रुक-रुककर वन्द हो गया है 'गालिव'
वल्लाह कि शव को नीन्द आती ही नहीं
सोना सौगन्द हो गया है 'गालिव'

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

मुश्किल है ज़ुबस^१ कलाम मेरा ऐ दिल !
सुन सुन के उसे सुखन - वराने - कामिल^२
आसान कहने की करते हैं फ़रमाइश
गोयम मुश्किल वगारना गोयम मुश्किल^३

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

कहते हैं कि अब वो मर्दम - आज़ार^४ कहीं
उश्शाक^५ की पुरसिश से उसे आर^६ नहीं
जो हाथ कि जुल्म से उठाया होगा
क्योंकर मानूँ कि उसमें तलवार नहीं

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

हम गरचे वने सलाम करने वाले
करते हैं दरंग^७ काम करने वाले

१. निसंदेह, २. सफल कवि, ३. मैं मुश्किल ही कह सकता हूँ वरना मेरे लिए शेर कदना मुश्किल है, ४. मनुष्यों को सताने वाला, ५. लज्जा, ६. परेशान ।

कहते हैं कहो खुदा से अल्लाह अल्लाह !
 वो आप हैं सुबह शाम करने वाले

* * * * *

सामाने - खुरो - ख्वाव^१ कहां से लाऊं !
 आराम के असवाव^२ कहां से लाऊं
 रोज़ा मेरा ईमान है 'ग़ालिव'^३ लेकिन
 ख़स ख़ानओ^४ वर्फ़आव^५ कहां से लाऊं ?

क़तआ

एक अहले - दर्द ने सुनसान जो देखा क़फ़स
 यों कहा आती नहीं अब क्यों सदाए - अन्दलीव
 वालो पर दो चार दिखलाकर कहा सैयाद ने
 ये निशानी रह गई है अब बजाये अन्दलीव

* * * * *

शव को जीके - गुफ़्तगू से तेरे दिल बेताव था
 शोखिए - बहशत से अफ़साना फ़सूने - ख्वाव था
 बां हज़ूमे - नरमहाए - साज़े - इशरत था 'असद'
 नाख़ुने - ग़म यां सर तारे नफ़स मिज़राव^६ था

* * * * *

दूद^७ को आज उसके मातम में सियह - पोशी हुई
 वो दिले - सोज़ां कि कल तक शम्ए - मातम ख़ाना था

१. छाना और सोना, २. दर्द का पानी, ३. मितार बजाने का बंध,
 ४. धुआं ।

शिकवए - यारां गुबारे दिल में पिंहां कर दिया
'गालिव' ऐसे गंज' को शायं यही वीराना था

* * * * *

फिर वो सूए - चमन आता है खुदा खैरे करे
रंग उड़ता है गुलिस्तां के हवा दारों का

* * * * *

'मीर' के शेर का अहवाल कइं क्या 'गालिव'
जिसका दीवान कमअज़ गुल्शने - कश्मीर नहीं

* * * * *

अब रोता है कि बज़मे - तरब आमादा करो
वर्क हंसती है कि फुर्सत कोई दम दे हमको

* * * * *

कमाले - हुस्न अगर मौकूफ़े - अन्दाज़े - तगाफ़ुल हो
तकल्लुफ़ वर तरफ़ तुभसे तेरी तस्वीर बेहतर है

* * * * *

चन्द तस्वीरे - बुतां, चन्द हसीनों के खतूत
बाद मरने के मेरे घर से ये सामां निकला

◇ ◇ ◇

